

वेद और स्वामी दयानन्द

लेखक

गाज़ी महमूद धर्मपाल बी.ए. लुधियाना

फ़रमाइश

जनाब मौलवी मजीद हसन साहब

मालिक अख़्बारे मदीना

मदीना बुक एजेन्सी के लिए

मदीना प्रेस बिजनौर में बाअहतमाम

मुहम्मद मजीद हसन प्रिन्टर तबअ हुई

का हिन्दी रूपान्तर 2011 ई.

वन्दे ईश्वरम् प्रकाशन

इस्लाम दर्शन केन्द्र देवबन्द

ayazdbd@gmail.com

a_yaz2004@yahoo.com

नये जमाने में “सत्यार्थ प्रकाश: समीक्षा की समीक्षा”

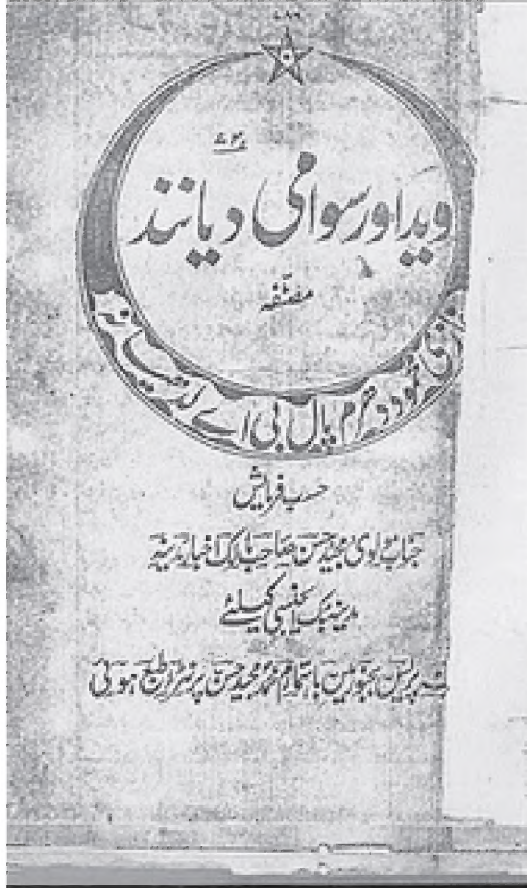
<http://satishchandgupta.blogspot.com/>

के बाद इस नायाब पुस्तक को हिन्दी में देख कर उम्मीद की जाती है हिन्दी प्रेमी बहुत खुश होंगे, साथ ही यह भी उम्मीद है कि सच्चाई तलाश करने वाले को पूरी उम्मीद है सच्चा रास्ता आसानी से मिलेगा,

गाज़ी महमूदी धर्मपाल जो इस्लाम के ख़िलाफ़ आर्यसमाज की सहायता से कई किताबों के मुसन्निफ़ थे आपको सभी किताबों के इस्लामी स्कॉलरों ने जवाब भी दिये थे, मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी लेखक ‘हक प्रकाश बजवाब सत्यार्थ प्रकाश’ से 11 साल के बहस मुबाहिसे के बाद आप इस्लाम की सच्चाई को मान कर फिर से मुसलमान हुए और अपने 11 साल के आर्यसमाजी अनुभव से इस्लाम को अपनी कई किताबों से तकवियत बख़्शी।

विषय सूची “वेद और स्वामी दयानन्द”

गाज़ी महमूद धर्मपाल का परिचय	पृष्ठ 4
1. पहली फ़सल— प्रस्तावना ‘वेद और स्वामी दयानन्द	पृष्ठ 9
2. दूसरी फ़सल— स्वामी दयानन्द के कदमों में	पृष्ठ 20
3. तीसरी फ़सल— स्वामी दयानन्द और उनके मैयार standard	पृष्ठ 25
4. चौथी फ़सल— स्वामी दयानन्द और वेद	पृष्ठ 36
5. पाँचवीं फ़सल— वेद और आलमगीर शांति (विश्व—शान्ति)	पृष्ठ 56
6. छठी फ़सल— वेदों पर ईमान की बुनियाद की कमजोरी	पृष्ठ 79
7. सातवीं फ़सल— चौबीसवाँ अध्याय (यजुर्वेद के 24 वें अध्याय की तफ़सीर करने में दयानन्द जी बेबस)	



गाज़ी महमूद धर्मपाल

(लेखक का परिचय आनलाइन उपलब्ध उर्दू पुस्तक ‘तुर्क-ए-इस्लाम’ और ‘तिबर-ए-इस्लाम’ लेखक: मौलाना सनाउल्लाह के हवालों से)

एक मुसलमान अब्दुल गफूर नामी इक्कीस साला ने गुजरावाला की आर्यसमाज में दाखिल होकर धर्मपाल बनकर अपना रिसाला मासूमा ‘तुर्क इस्लाम’ शाए किया। जिससे मुसलमानों में इस सिरे से उस सिरे तक विजली की तरह आग लग गयी। हर फिरके ने उसके जवाब दिये। सबसे पहले खाकसार राकिम की तरफ से जवाब निकला जिसका नाम था ‘तुर्क इस्लाम’ इस की दीवाचे में मैंने वजदानी तौर पर यह लिखा था कि ‘मिस्टर धर्मपाल के इस्लाम में वापस आने की वजदानी तौर से हमें उम्मीद है’

यह फिकरा वजदानी था। मगर इसकी सहत मिसल इलहामी जाहिर हुयी। चुनांचे धर्मपाले इस्लाम में आकर गाजी महमूद बने उनकी वापसी हम उन्हीं के अल्फाज में बतलाते हैं आप लिखते हैं:

“१४ जून १९०३ को मेरे बारे में जिस किस्म की नुमाईश और जिस किस्म के जलसे या रसम रसूम अदा करने का सवांग रचा गया था। मैं देखता हूँ कि इस्लाम में दाखिल होने के लिए मुझे हरगिज़ हरगिज़ इस किस्म की नुमाईश, जलसे या रसम रसूम अदा करने की ज़रूरत नहीं है। बल्कि अमर वाका यह है कि १४ जून १९०३ ई. से पूरे ग्यारह साल के बाद यानि १४ जून १९१४ ई. को वगेर किसी शख्स की मौजूदगी के तन तन्हा अपने खुदावन्द कुददूस के हज़ूर में सदाक दिल से दोज़ानू हाकर मैंने जो इकवाल किया था। उसी इकवाल का मैं यहां पर एलान कर देना जरूरी समझता हूँ। वह इकवाल यह है कि अशहदू अन्ला इलाहा इलल्लाह व अशहदू अन्ना मुहमदन अब्दुहू व रसूलूहू.....”(अल मुस्लिम, जुलाई १९१४)

इस इन्कलाब का सबब किया हुआ और ‘तुर्क इस्लाम’ ने इस सबब में किया हिस्सा लिया? इसका जिक्र भी उन्हीं के अल्फाज़ में दरज जैल है:

“जब मोलवी नूस्वदीन साहब (कादयानी) ने रिसाला ‘नूस्वदीन’ के ज़रिये और मोलवी सनाउल्लाह साहब ने ‘तुर्क इस्लाम’ वगेरा के ज़रिये इस्लाम

और मुल्लाइज्म के दरमियान खल्ले ममीज़ खँच दिया तो मेरी तसानीफ की कीमत एक दियासलाई के बराबर रह गयी। मेरे एतराज़ात का जवाब देने में 'नुरुददीन' के मुसन्निफ का निशाना इल्मी मालूमात की बदोलत बेखता होता था। मगर 'तुर्क इस्लाम' का वार ज़्यादा सितम ढाता था। जबकि वह मेरे किले को जो मैं सख्त जददोजहद के साथ तफसीरों की बिना पर तामीर करता था। सिर्फ इतना सा फिकरा लिखकर मस्मार कर डालता था कि 'तफसीर का जवाब तफसीर लिखने वालों से लो। कुरआन मजीद इसका जिम्मेदार नहीं है' इस एक फिकरे ने 'तुर्क इस्लाम' और 'तहज़ीबुल इस्लाम' को छलनी कर डाला। मैंने नतीजा निकाल लिया कि नुरुददीन के मुसन्निफ के साथ तो बहस चल सकती है मगर 'तुर्क इस्लाम' के मुसन्निफ के साथ जो मुल्लाइज्म का सिर से ही मुनकिर है। बहस का चलना मुश्किल है मगर लुफ्त यह हुआ कि 'नुरुददीन' के मुसन्निफ ने मेरे मुकाबले पर दोबारा कलम न उठाया हालाँकि मैं आरजूमन्द था कि उसके साथ बहस का सिलसिला जारी रहे लेकिन 'तुर्क इस्लाम' के मुसन्निफ ने 'तहज़ीबुल इस्लाम' के जवाब पर फिर कलम उठाया मगर मैं उस के साथ बहस करने के लिए तैयार नहीं था। नतीजा यह हुआ कि 'नुरुददीन' के मुसन्निफ ने मेरे मुकाबले पर दोबारा कलम न उठाया। और मैं ने 'तुर्क इस्लाम' के मुसन्निफ के मुकाबले पर कलम उठाने से इन्कार कर दिया। इस तरह हमारी पहली जंग का खातमा हो गया। मगर कुछ अरसे के बाद 'मुल्लाइज्म' को दोबारा रगड़ने का खयाल मेरे दिल में पैदा हुआ। इस दफा मैंने तारीख से मदद ली और 'नखले इस्लाम' के नाम से जली सड़ी हुई किताब शाए की। आर्य समाज के अखबारात ने इस किताब का निहायत जोरदार अलफाज़ में रिव्यू किया। मुस्लिम अखबारात ने इसके बरखिलाफ शोर मचाया। मैं चाहता था कि पुराने टाइप के मुल्ला लोग मेरे मुकाबले पर आयें ताकि मुझे इस बात के जानने का मौका मिले कि वह इन बातों का किया जवाब रखते हैं लेकिन बद-किस्मती से इस दफा भी वही 'तुर्क शीराज़ी' मैदान में आ कूदा और यह कहकर कि कुरआन मजीद या इस्लाम तारीख या तफासीर का जवाबदे नहीं है। 'नखल इस्लाम' पर 'तबरे इस्लाम' मार कर चलता हुआ। इस तरह पुराने टाइप के जिन मुलानों को रगड़ने के लिए मैंने यह दूसरी कोशिश की थी। वह फिर बच गये। आखिर कार जब मैं ने देखा कि 'मुल्लाइज्म' के मानने वाले तो

मैदान में आते नहीं और जो मैदान में आते हैं वह 'मुल्लाइज्म' के मानने वाले नहीं होते तो मैंने इस तमाम बहस का कतई फेसला कर डाला। और 'तुर्क इस्लाम' से लेकर अपनी आखरी तसनीफ तक जिस कदर किताबें थीं इन सब को मैंने १४ जून १९११ ई. को जलाकर खाक सियाह कर दिया। (अल मुस्लिम, पृष्ठ ३६३, दिसम्बर १४ ई.)

किताब 'तुर्क इस्लाम' के अलावा खाकसार की खखसियत ने इसमें कहां तक हिस्सला लिया। यह एक लतीफ दास्तान है। गुज़िस्ता इक्तवास से मालूम होता है कि मिस्टर धर्मपाल १४ जून १९१४ ई. को इस्लाम में आकर गाज़ी महमूद के नाम से मोसूम हुए मगर मेरी मुलाकात उनसे बहुत पहले हुयी थी उस मुलाकात की ज़रूरत और शरह खुद उन्हीं के अल्फाज़ में मज़ा देगी जो दरज जैल हैं। आप लिखते हैं:

'मेरी गुज़िस्ता एक साल की बेऐज़ा जिन्दगी ने मेरे मुसलमान भाईयों के दिलों पर भी मेरे लिए इस कदर मुहब्बत पैा करदी है कि जब उनको मेरी वीमारी का हाल मालूम हुआ तो वह जोक़ दर जोक़ मेरे पास आने लगे इन में से मोलवी सनाउल्लाह साहब का नाम खासकर काबिले जिक्र है। मोलवी साहब के साथ तहरीरी दस्त पन्जा तो सालहा साल तक होता रहा मगर रु दर रु होने का गालबन यह पहला ही मौका था। जिसको एक मुबारक मौका ही समझना चाहिए। खाह वह वीमारी की शकल में ही नमूदार हुआ हो। मोलवी सावि फितरतन खुश मज़ाक असहाब में से हैं इस लिए समझ लेना चाहिए कि जहां एक तरफ 'तुर्क इस्लाम' और 'हज़ीबुल इस्लाम' बल्कि 'नखले इस्लाम' का मुसन्निफ बिस्तर मर्ज पर पड़ा हो। और दूसरी तरफ 'तुर्क इस्लाम' और 'तहज़ीबुल इस्लाम' बल्कि 'तबरे इस्लाम' का मुसन्निफ उसके सिरहाने बैठा उसकी तीमारदारी कर रहा हो। वहां अगर मलकुस्समावात वलअरज़ दिली मुसरत से यह शअर पढ रहे हों कि:

शुकरे ऐज़द कि मयाने मन व उ सुलह फताद

हूरयां रक्स कुनां सागरे शुक्राने जदन्द

तो कोई अजब की बात नहीं है। इससे पेशतर मेरा यह खयाल था कि मोलवी सनाउल्लाह जो अहमदिया फिरके के साथ मुसलमानों जैसे फज़ूल छेडछाड करता रहता है वह ज़रूर कोई 'कठमुल्लाह' होगा। यही वजह थी

कि बावजूद उनकी कोशिश करने के मैं कभी उनसे मिलना नहीं चाहता था लेकिन पहली ही मुलाकात में मुझे मालूम हुआ कि मोलवी सनाउल्लाह एक खुश मिजाज़, खुश मज़ाक़, खूबसूरत और खूबसीर जन्तलमेन है। और कुदरत ने उसको एक दिलखुबा अदा दी है सच तो यह है कि इस इब्न याकूब को देख कर मुझे अपने दिल को थामने में बड़ी दिक्कत पेश आयी। वह हर तीसरे रोज़ अमृतसर से मेरी खबर लेने के लिए लाहूर पहुंचते थे।”

इस बीमारी से भी बहुत पहले का एक वाकआ बहुत देरीना सहवत याद दिलाने वाला है। वह भी मिस्टर धर्मपाल ही के अल्फाज में दर्ज है।

हुस्न अखलाक से एक बफ़ा सियालकोट आर्य-समाज के जलसे में बज़रूरत बहस मेरा जाना हुआ तो बाद मुवाहिसा दूसरे रोज़ स्टेशन को जाते हुए दोनों जमाअतें(मुस्लिम और आर्य) मिल गयीं। उस मौके पर मैं सबके सामने मिस्टर धर्मपाल से बगलगीर हुआ और कुछ अल्फाज़ भी कहे जो उन्ही की इबारत में आते हैं। आह! उस बगलगीरी का लुतफ़ उस्ता मोमिन खां मरहूम को हासिल होता तो वह कभी मन्दरजा जेल शेअर न लिखते:

रख लेवेंगे पत्थर मगर उन संगदिलों को

तौबा है कि सीने से लगाया न करेंगे

इस वाकआ का जिक्क मिस्टर धर्मपाल यूँ करते हैं:

“नहीं मालूम इस्लाम में कौन-सा जादू है। और मुस्लिम कौम में कौनसी स्प्रिट काम कर रही है कि जिसको देखकर मैं बाज़ औकात हैरान व शशदर रह गया हूँ और मुझे बेसाख़्ता कहना पड़ा है कि इस्लाम में कोई न कोई ऐसा जादू ज़रूर है जो मेरी समझ से बालातर है। और कि यह एक ऐसी बला की कौम है कि जिस कदर मैं इस कौम से दूर भागता हूँ उसी कदर वह मेरे नज़दीक आने की कोशिश करती रही है।

RELIGIOUS CONTROVERSIES IN THE PUNJAB: THE 'A POSTASY' OF GHAZI MEHMUD DHARAMPAL

.....From 1914 onwards Ghazi Mehmud Dharampal took out a number of journals and was actively involved against the Arya Samajis during the Shuddhi campaigns of 1920's. But even though he became a Muslim, his understanding of the religion remained unconventional as he tilted toward the Ahl al-Qur'an –

.....

ALI USMAN QASMI UNIVERSITY OF HEIDELBERG
GERMANY

Page 5 to Page 18

<http://www.scribd.com/doc/44946222/The-Historian-2009-1>

वेद और स्वामी दयानन्द

पहली फ़सल

प्रस्तावना

दोस्तो!

मैं आज जिस मज़मून पर आप के सामने बोलना चाहता हूँ वह ये है कि वेद खुदा का कलाम नहीं है। मैं साफ़ अल्फ़ाज़ में बता देना चाहता हूँ कि एक अर्से तक मेरा ये दिली ऐतकाद रहा है कि वेद खुदा का कलाम है। लेकिन अब मेरा ये ऐतकाद नहीं है पेशतर इस के कि मैं आप के सामने अपने इस ऐतकाद की तबदीली का ज़िक्र करूँ मैं इस बात का इकरार कर लेना भी ज़रूरी समझता हूँ कि मैं इन मुतअस्सब इन्सानों में से नहीं हूँ जो किसी बात पर महज़ ज़िद से अड़े रहते हों बल्कि मैं हक़ व हक़ानियत का तालिब हूँ और मैं सदक़ दिल से इस उसूल का पाबन्द हूँ कि इन्सान को सच्चाई के कबूल करने और झूठ के तर्क करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। अगर उन असहाब में से जो कि वेदों को अभी तक खुदा का कलाम मान रहे हैं कोई शख्स दलाईल व वाकिआत की बिना पर इस बात को साबित कर दे और मुझे कायल कर दे कि वेदों को खुदा का कलाम न मानना मेरी ग़लती है तो मैं फ़ौरन् अपनी ग़लती की इसलाह कर लूँगा मेरी ये पोज़िशन ऐसी माकूल है जो कि दुनिया में हर एक हक़ पसन्द इख़्तियार करता चला आया है। यूरोप के मौजूदा ज़माने के फ़लास्फ़रों के सरताज मिस्टर हरबर्ट स्पेन्सर का मक़ूला है कि मुहक्क़क़ शख्स को फ़तह पाने की निसबत सदाक़त को मदेनज़र रखना चाहिए और सदाक़त की जाँच के लिए लाज़मी है कि इन्सान इन तअस्सुबात या ज़ुबात से आज़ाद हो जाये जो ज़मीन के ख़ास हिस्से, नस्ल या पैदाईश की बिना पर इन्सानों को कैद किये हुए है और उनको हमेशा यह बात मद्दे नज़र रखनी चाहिए कि दुनिया में कोई मज़हबी अक्दीदा या कोई मज़हबी किताब महज़ इसलिए सच्चे नहीं कहे जा सकते कि वह बहुत पुराने हैं न ही किसी मज़हब या किताब को इसके होने नए की वजह से झूठा कहा जा सकता है। इसके बरअक्स बअज़ औकात ये देखने में आता है कि ये हमारी ज़िन्दगी के रास्ते में जहाँ पुरानी किताबें बतौर मिट्टी के चिराग़ों के रहनुमाई का काम करती है। इस के मुकाबले में बअज़ ज़माने

की किताबें बतौर बिजली की रोशनी के हमारी ज़िन्दगी के रास्ते को रोशन करतीं और हमको राहत बख़्शाती हैं। मगर मिट्टी के चिराग़ को महज़ इसलिये हाथ में पकड़े रखना कि ये हमारे बाप दादा हमारी नस्ल या हमारे मुल्क का कदीमी चिराग़ है और इसके मुकाबले में बिजली के लैम्प से फ़ायदा उठाने से इन्कार कर देना मुल्की नस्ली या पैदाईशी तअस्सुब है जिससे आज़ाद होने के लिये मिस्टर हरबर्ट स्पेन्सर ने हर एक मुहक्क़क़ को नसीहत की है, मैं मुल्की तअस्सुब का कायल नहीं हूँ मैं नस्ली या पैदाईशी तअस्सुब का भी गुलाम नहीं हूँ। अगरचे उन लोगो की तरफ़ से जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं मेरे वेदों के कलामे इलाही होने से इनकार करने पर मुझ पर पैदाईशी तअस्सुब का इलज़ाम लगाया गया और लगाया जा रहा है लेकिन वह इस बात को एक मिनट के लिए भी सोचने के वास्ते तैयार नहीं होते कि अगर मैं इस किस्म के तअस्सुबात का शिकार होता तो मैं दीगर मज़ाहिब के बरख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ भी न लिख सकता। लेकिन मेरे इस किस्म के दोस्त जबकि मैं दीगर मज़ाहिब के बरख़िलाफ़ धुवाँदार तहरीरें निकाल रहा था। मेरी तारीफ़ में ज़मीन व आसमान के कलावे मिलाते और मुझे हक़ व हक़ानियत की ज़िन्दा मिसाल बताते थे अगर मैं उस वक़्त हक़ व हक़ानियत का तालिब था तो अब मैं झूठ और बातिल परस्ती का तालिब नहीं कहा जा सकता। मुहक्क़क़ इन्सान नशो नुमा पाने वाले बच्चे की मानिन्द होते हैं जिस तरह बच्चे के वह कपड़े जो कि वह पाँच साल की उम्र में पहनता था पन्द्रह साल की उम्र में इसके लिए छोटे हो जाते हैं इसी तरह मुहक्क़क़ इन्सानों के पहले ख़्यालात ताज़ा वाकिआत तजुर्बात और मुशाहेदात की बिना पर ज़्यादा से ज़्यादा वुसअत पज़ीर हो जाते हैं अगर आप का कोई रिश्तेदार या अज़ीज़ आप के पास बचपन का कोई फटा पुराना कुर्ता या पाजामा जो दो तीन बालिशत से ज़्यादा लम्बा नहीं होगा, लाकर आप से कहे कि तुम कैसे नादान हो जो इस पहले कुर्ते और पाजामे को छोड़कर आज इतने लम्बे लम्बे कुर्ते और पाजामे पहन रहे हो। तुम इन नये कुर्तों और पाजामों को उतार कर वही पुराना कुर्ता और पाजामा पहनो जो कि तुम को तुम्हारे बालिदेन ने दो तीन साल की उम्र में पहनाया था आप इस रिश्तेदार या अज़ीज़ की इस बात पर हंस देंगे। तअज्जुब नहीं कि आप इसको बेवकूफ़ भी कहें। क्योंकि बचपन का दो बालिशत लम्बा पाजामा अब तुम्हारे नंग को ढाँपने के लिये काफ़ी नहीं

हो सकता। जबकि आपको गज़ भर लम्बे पाजामे या कई गज़ लम्बे तेहबंद या धोती की ज़रूरत है। आप अपने अज़ीज़ों को ग़ालिबन् यही जवाब देंगे कि अगर आप पसन्द करते हैं कि मैं पुराने कुर्ते को ज़रूर पहनूँ तो बराये खुदा इसको इतना कुशादा कर दो या मुझे इजाज़त दो कि मैं इसको इतना कुशादा कर लूँ कि ये मेरे बदन पर फिट आ जाये। लेकिन अगर वह अज़ीज़ और आशना उन दोनों बातों में से एक को भी मानने के लिए तैयार नहीं होते तो आपका फर्ज़ होना चाहिए कि आप इसको दूर फेंक दें और इसको पहनने से क़तई इन्कार कर दें। आप इसको फेंक देने की बिना पर मुलज़िम या बेवकूफ नहीं गरदाने जा सकते। बल्कि मुलज़िम या बेवकूफ वह शख्स है जो आप से इसरार करता है कि आप इसी पुराने कुर्ते को पहनें। जब दो बालिशत कपड़े की बाबत इन्सानों का यह हाल है तो ये किस क़दर जुल्म और अंधेरे की बात है कि किसी मुहक्क़ इन्सान के ख़्यालात की वुसअत को देखकर उस पर ये फतवा पास किया जाये कि चूँकि इसने पहले ख़्यालात को तर्क कर दिया है इसलिये वह गुमराह या नादाँ है और इसकी गुमराही या नादानि को दलाईल से साबित न किया जाये। वह लोग जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं वह मेरे ख़्यालात की वुसअत या आज़ादी पर बर्न्या इसी किस्म का फतवा पास कर रहे हैं। वह कहते हैं कि आज से नौ साल पेशतर तुम ने वेदों को खुदा का कलाम तसलीम किया था। तुम कैसे गुमराह हो जो आज तुम इस पुराने कुर्ते को जो खुदावंदे कुद्दूस ने इन्सान के बचपन के अव्वलीन हिस्से में तैयार किया था पहनने से इनकार करते हो। मगर मैं कहता हूँ कि मैं अब वुलन्द क़द हो गया हूँ। अब ये इन्सानी बचपन का कुर्ता मेरे नंग को ढांप नहीं सकता बल्कि जिस तरह किसी ज़माने में ये कुर्ता मेरे दिल और दिमाग़ के लिये राहत बख़्श था क्योंकि ये इस वक़्त मेरे ऐन फिट आता था। इसी तरह अब ये फिट न होने के बाइस मेरे दिल और दिमाग़ के लिए तकलीफ़ देह हो रहा है। इसलिये कि ये बहुत तंग है और मैं ज़्यादा नशोनुमा पा गया हूँ। जब मैं ये जवाब देता हूँ तो मुझे ताना दिया जाता है कि हमारे तुम्हारे ऋषि मुनी इस कुर्ते को पहनते और इसको खुदा का कलाम मानते चले आये हैं लेकिन तुम क्या उनसे बढ़कर हो जो ऐसी बातें बनाते हो। मुझे ताना माकूल मालूम नहीं होता जबकि तारीख़ शहादत देती है कि पुराने ऋषि मुनी जंगलों में रहने के बाइस या तो अपने नंग को ढांपने की

चन्दों ज़रूरत नहीं समझा करते थे या दो बालिशत भर लंगोटी या भोजपत्र से ही आगा पीछा ढांककर गुज़ारा कर लेते थे। लेकिन मुझे कोई मअकूलियत नहीं है कि चूँकि पुराने ऋषि मुनी ऐसा करते थे इसलिये मैं भी आज बालिशत भर लंगोटी या भोजपत्र को आगे पीछे ढांककर घूमता फिखूँ। अगर ऋषि मुनी वेदों को खुदा का कलाम मानते थे तो मुल्की नस्ली या पैदाईशी तअस्सुवात की बिना पर ऐसा मानने की लिये मजबूर थे। जबकि वह हक़ व हक्क़ानियत की तलाशी के लिये इस आला मैयार से आरी थे जो कि मिस्टर हरबर्ट स्पैन्सर के अल्फ़ाज़ में दिखाया जा चुका है। आज के वरअक्स जो मुहक्क़ मुल्की, नस्ली या पैदाईशी तअस्सुवात से आज़ाद थे। उन्होंने वेदों को खुदा का कलाम मानने से इन्कार कर दिया। बौद्ध और चारदाक के मुहक्क़ वुस्ता ज़माने की ज़िन्दा शहादत हैं। और ब्रह्म समाज वेदों की कलामे इलाही न होने के बारे में ज़माना-ए-हाल का एक ज़िन्दा और ज़बरदस्त प्रोस्टेंट हमारी आँखों के सामने मौजूद है। वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों की तरफ़ से बुद्धों, जैनियों और चारदाक के मुहक्क़ों पर ये इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह दाम मार्गी थे हालाँकि ये इल्ज़ाम कोई बुनियाद नहीं रखता। लेकिन अगर एक मिनट के लिये इस इल्ज़ाम की सदाक़त को तसलीम भी कर लिया जाये तो ब्रह्मों समाज के मुहक्क़ीन को इसी इल्ज़ाम से रद्द करने की कोशिश करना यकीनन् अपने आप को कानून की ज़बरदस्त जंजीरों से जकड़ना है जबकि अग्रे वाकिअ ये हो कि ब्रह्मो समाज के इस किस्म के तमाम मुहक्क़ उन उयूब से पाक थे जो कि दाम मार्गियों की तरफ़ मनसूब किये गये हैं और वह आला दर्जे की मज़हबी, अख़्लाकी और मजलिसी ज़िन्दगी का नमूना थे। मेरे इस बयान से ये नतीजा नहीं निकालना चाहिए कि मैं बौद्ध, जैनी चारदाक या ब्रह्मो समाजी हूँ। मेरा इन सोसायटियों से कोई भी तअल्लुक नहीं है। बल्कि मेरा मतलब इस बात पर रोशनी डालने से है कि जिन लोगों ने मुल्की, नस्ली या पैदाईशी तअस्सुवात से आज़ाद होकर वेदों का मुतालेआ किया है उन्होंने उनको खुदा का कलाम तस्लीम करने से इन्कार कर दिया है। मगर वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों की तरफ़ से फिर आवाज़ आती है कि जिन लोगों को तुम मुहक्क़ कहते हो वह दर-हकीक़त मुहक्क़ नहीं थे और कि उन्होंने वेदों से लाइल्मी की वजह से मुँह फेर लिया। अगर तुम वेदों के बारे में सही सही रोशनी हासिल करना चाहते हो

तो तुम को इस शख्स की बात पर ऐतबार करना चाहिये जो कि वेदों का मुहक्किफ और स्कॉलर हो। अगरचे मैं इस बात को तस्लीम करने के लिए तैयार नहीं हूँ कि बौद्ध, चारदाक, जैन और ब्रह्मो मुहक्किों को मुहक्किीन के ज़मरे से ख़ारिज कर दिया जाये। लेकिन हक़ व हक्कानियत का पता लगाने के लिये मुझे एक मिनट के लिये ये मान लेना चाहिये कि वह वेदों के मुहक्किफ नहीं थे। अब सवाल ये पैदा होता है कि तुम वेदों का मुहक्किफ या स्कॉलर किसको कहते हो, मेरे कान में आवाज़ आती है कि वेदों का सबसे बड़ा स्कॉलर और मुहक्किफ़ स्वामी दयानन्द था। अब मुझे इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि स्वामी दयानन्द जैसा वेदों का स्कॉलर और मुहक्किफ़ वेदों के बारे में हमें क्या ख़बर लाकर देता है। जब मैं स्वामी दयानन्द की तहकीकात पर गहरी नज़र डालता हूँ तो मैं इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि दरअसल स्वामी दयानन्द वेदों को खुदा का कलाम मानने में “दयान्तदार” नहीं था। मेरे ये अल्फ़ाज़ चौंका देने वाले मालूम होंगे। लेकिन मैं स्वामी दयानन्द की ही तहरीर से इस बात को साबित करूँगा। पेशतर इसके कि मैं इस मज़मून को शुरू करूँ ज़रूरी मालूम होता है कि मैं यहाँ पर स्वामी दयानन्द के पुराने दोस्त और हिन्दुस्तान के वही ख़्वाह और इंडियन नेशनल काँग्रेस के बानी मबानी मिस्टर ब्रूम आंजहाँनी की इस तहरीर का थोड़ा सा इक़तवास यहाँ दे दूँ कि जो कि मार्च १८८३ ई० के थ्योसोफ़ेस्ट में शाये हुई थी। मिस्टर ब्रूम आंजहाँनी लिखते हैं -

“हम सब को स्वामी दयानन्द की इज़्ज़त और तारीफ़ करनी चाहिए क्योंकि वह एक बड़ा पुरुष और बुलन्द ख़्याल था। लेकिन हक़ व हक्कानियत के इन तमाम आशिकों को जिन्होंने कि अपने आप को पुरोहितों की गुलामी से आज़ाद कर लिया है ये सुनकर सख़्त दुख होगा कि स्वामी दयानन्द ने एक ऐसी सोसायटी कायम की है जो कि वेदों के नौशतों को मुनज़्ज़ा मिनलख़ता मानती है। इन तमाम ग़लत अकाईद में से जिन्होंने कि बदकिस्मत इन्सानी दुनिया में लानत की बारिश की है कोई अक्कीदा ऐसे ख़तरनाक नताईज का पैदा करने वाला साबित नहीं हुआ जिस क़दर कि मज़हबी किताबों को मुनज़्ज़ा मिनल ख़ता मानने का निहायत ही काबिले नफ़रत और पुर फ़रेब अक्कीदा साबित हुआ है। यही वजह है कि सच्चाई के तमाम आशिकों को इस

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

अक्कीदे की बड़ी शद्दोमद से मुख़ालफ़त करनी चाहिए। ये अक्कीदा एक ऐसी शरारत की ज़मीन है कि जिसमें से पुराहितों की वह ख़ौफ़नाक और ज़हरीली जमाअत पैदा होती रही है जिसने कि इन्सानी तारीख़ के हर एक वर्क को तबाही तनज़्ज़ुल मुसीबत आग और ख़ून से रंग छोड़ा है इसलिये इस ख़तरनाक अक्कीदे को रखता हुआ ख़्वाह स्वामी दयानन्द उससे दस गुना आलिम और नेक दिल भी होता जितना कि दरहक्कीक़त है ख़्वाह उसके इरादे उससे सौ गुनाह नेक, आला और वेग़र्ज़ा न होते जितने कि वह हैं फिर भी ये हर एक ऐसे शख्स को ख़्वाह वह कितना ही अदना और कम इल्म हो मगर जिसने तारीख़ की शहादत से इस निहायत ही ख़ौफ़नाक अक्कीदे के सख़्त ख़तरनाक नताईज से आगाही हासिल कर ली हो। फ़र्ज़ होना चाहिए कि वह कम से कम इस पहलू में स्वामी दयानन्द की बहादुराना मुख़ालफ़त करे जबकि वह इस अक्कीदे को बतौर एक सनद के हम पर ठूँसने की कोशिश करता है और इसको साफ़ अल्फ़ाज़ में बताया जाये कि अगरचे वह दीगर मामलात में एक देवता कहा जा सकता है मगर इस अक्कीदे में उसकी पोज़िशन एक ऐसे ग़द्दार की पोज़िशन है जो कि इन्सानी वेहबूदी और सदाक़त के हक़ में ख़तरनाक ग़द्दारी कर रहा हो।”

ये अल्फ़ाज़ सख़्त है लेकिन वह कौन से सख़्त अल्फ़ाज़ हो सकते हैं जिनके ज़रिये कि इस अक्कीदे को जो कि बनी नूए इन्सानी की गुज़िश्ता तवारीख़ में तमाम लानतों से बड़ी लानत साबित हुआ हो। गर्दन ज़ोनी क़रार देने के लिये इस्तेमाल किये जा सकते हैं? ये बात कि स्वामी दयानन्द ने वेदों की मुनज़्ज़ा मिनल ख़ता साबित करने की कोशिश दयान्तदारी से की है। इसकी पोज़िशन को बदल नहीं सकती इससे इसकी अख़्लाकी ज़िम्मेदारी का बोझ हल्का हो सकता है। लेकिन इसकी मुख़ालफ़त करने और इसके फ़अल की असलियत को ज़ाहिर करने का हमारा जो फ़र्ज़ है हम इससे सुबकदोश नहीं हो सकते। अगर बदकिस्मती से कोई स्वामी ये समझ ले कि दुनिया की तमाम बीमारियों की दवा ये है कि जितने दरियाओं और नदी नालों तक इसका हाथ पहुँच सके, उसमें वह मुहलिक ज़हर घोल दे और अपनी हिमाक़त से ये समझ बैठे कि इस पानी के इस्तेमाल से तमाम इन्सान बीमारी

गाज़ी महमूद धर्मपाल

से शिफा पा जायेंगे। हालाँकि तारीख़ शहादत देती हो कि वह ज़हर बनी नूऐ इन्सान के लिये निहायत ही मुहलिक साबित हो चुका है। इस सूरत में इस स्वामी के ऐसे ख़तरनाक फ़अल पर जितने भी सख़्त से सख़्त अल्फ़ाज़ में झाड़ा जाये और लोगों को इसका शिकार बनने से आगाह किया जाये उतना ही कम होगा। ऐसी सूरत में अगर एक शख्स जो ख़्वाह कितना ही हकीर और बे बज़ाअत हो ये समझ कर कि इतने बड़े आलिम और नेक दिल शख्स ने ये कैसी ख़तरनाक हरकत की है अपने हमजिन्सों को इस ज़ेहर के प्याले से दूर रखने के लिये आगाह करने का काम करे तो इस पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि दुनिया में आलमे जमादात, आलमे नवातात और आलमे हैवानात का कि तमाम ज़ेहरों से बढ़कर बनी नूऐ इन्सान को हलाक किया है। दुनिया में जिस क़दर ख़ौफ़नाक जंग हुए जिस क़दर अज़ाब बरपा किये गये जिस क़दर मज़हब के नाम पर क़त्ल व ख़ून हुए, उनमें से निस्फ़ से ज़्यादा इस ग़लत अक़ीदे की बिना पर बरपा हुए और इस तमाम कुशतो ख़ून ने ज़मीन के बहिश्ती चेहरे को जहन्नम में तबदील कर दिया इसलिये अगरचे मैं इस अंगूरिस्तान का एक मामूली मज़दूर हूँ और अगरचे मैं स्वामी दयानन्द की जूती का तसमा खोलने के भी लायक़ ख़्याल न किया जाऊँगा। मगर मैं इस ज़ेहरीले और ख़ौफ़नाक अक़ीदे के बरख़िलाफ़ जो कि स्वामी दयानन्द ने बतौरे बुनियादी उसूल के अपनी सोसायटी में दाख़िल किया है अपनी कमज़ोर आवाज़ उठाने से नहीं रह सकता। आओ! ज़रा वाज़ेह तौर से हम इस बात पर विचार करें कि वेदों को मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने का क्या मतलब है। वेदों को मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने का ये मतलब है कि इस पुरोहित को भी जो कि इनकी चाबी अपने हाथ में रखता है और जिसके क़ौल की आम आदमी पैरवी करते हैं। मुनज़ज़ा मिनल ख़ता तसलीम किया जाये। चुनांचे गुज़िश्ता तारीख़ इसकी शाहिद है और मौजूदा ज़माने में भी इसकी मिसालें मिलती हैं कि कोई मुकद्दस किताब ख़्वाह कितने ही साफ़ अल्फ़ाज़ में क्यों न लिखी हुई हो। इसमें कुछ न कुछ ऐसे फ़िक़रात ज़रूर मिलेंगे जिनके कि दो तरह पर मज़नी किये जा सकते हों। इस तरह पुरोहित को मौका मिल जाता है कि वह इस बात का फ़ैसला करे कि दोनों में से किन मज़नों को ठीक तसलीम किया जाये। लेकिन अग्रे वाकिअ ये है कि कुतुबे मुकद्दसा का ज़्यादा हिस्सा ऐसा होता है जो वाज़ेह

नहीं होता। उनमें से बहुत-सी किताबों की ज़बान पेशतर इसके कि उनको मुनज़ज़ा मिनल ख़ता तसलीम किया जाये, मर चुकती हैं यानी व न बोली जाती है, न समझी जाती है और बार बार के उलट फेर से उनमें अक्सर पाठ, भेद और मिलावट आ जाती है। और उनमें मुतज़ाद बयानात पाये जाते हैं। इस तरह ये शक पैदा हो जाता है कि कौनसा हिस्सा असली और कौन सा माबाद की मिलावट है। अगर ये भी तसलीम कर लिया जाये कि किसी बहुत दूर के ज़माना साबका में किसी किताब को कोई ख़ास पुरोहित या पुराहितों की जमाअत या कोई सोसायटी या चर्च मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानती थी तो ये नतीजा नहीं निकल सकता कि माबाद के लोग भी इसको वैसा ही मानें। इसलिये जो आदमी इन तमाम हालात वाकिअत पर ग़ौर करते हैं वह इस बात को तसलीम करने के बग़ैर नहीं रह सकते कि किसी मुकद्दस किताब को मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने का ये मतलब है कि पुरोहित क्लास को लोगो की रूह पर जुल्म व ज़ब्र से इक़तदार हासिल रहे और जो लोग तारीख़ से वाकिफ़ हैं वह बख़ूबी जानते हैं कि अगरचे पुरोहित क्लास में बड़े बड़े आलिम मुत्तक्की, परहेज़गार, साधू संत भी होते रहे हैं लेकिन बनी नूऐ इन्सान पर तबाही इस गिरोह ने बरपा की है। इसका निस्फ़ भी बड़ी से बड़ी वबा और दीगर हलाकतों से नहीं आयी अगर ये भी तसलीम कर लिया जाये कि कोई किताब शुरू में मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानी जाती थी तो मौजूदा ज़माने में इसके मुनज़ज़ा मिनल ख़ता होने का वज़ज़ करना महज़ शरारत है। अव्वल तो इसलिये कि तजुर्वे ने ऐसे ग़लत अक़ीदे के प्रचार के ख़तरनाक नताईज को दुनिया पर ज़ाहिर कर दिया है। दूसरे कोई भी दयानतदार आलिम शख्स इस बात को तसलीम नहीं कर सकता कि दो हज़ार साल पहले किसी किताब का असली मज़मून क्या था या इस मज़मून का असली मफ़हूम क्या था। इसलिये अगर स्वामी दयानन्द ये वज़ज़ कर रहा है कि वेदों का मुनज़ज़ा मिनल ख़ता है तो इसका मक़सद ख़्वाह कैसा ही आला हो लेकिन फिर भी यही कहा जायेगा कि वह एक शरारत फैला रहा है और वह अज़सरे नौ बनी नूऐ इन्सान के हाथ पाँव में वह ज़ंग खुर्दा पर नई हथकड़ियाँ और वेड़ियाँ डाल रहा है जिनके ज़रिये से पुरोहित क्लास ने बनी नूऐ इन्सान को एक मुद्दत से जकड़ रखा था और जो वेड़ियाँ कि अब ढीली होती चली जा रही है। मैंने जहाँ तक वेद के मंतरों और उनके तराजिम को जो कि यूरोपियन

आलिमों और हिन्दुस्तानी पंडितों ने किये हैं, पढ़ा है। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि उनमें अक्सर मकामात पर खींच तान से काम लिया गया है। लेकिन अगर मैं इस बात को तसलीम कर लूँ कि स्वामी दयानन्द वेदों का जो तर्जुमा कर रहा है वह मुनज़ज़ा मिनल ख़ता है तो इसका ये मतलब होगा कि वह खुदा के साथ जो उसके नज़दीक वेदों के इलहाम का मिम्बअ है, बराबरी का दावा करता है या वह इस मिम्बअ से ताज़ा इलहाम पाने का जिसके ज़रिये कि वह मुनज़ज़ा मिनल ख़ता तर्जुमा कर रहा है। मुद्दई है मैं बिल्कुल निडर होकर इसको चैलेंज देता हूँ कि वह या तो वेदों के मुनज़ज़ा मिनल ख़ता होने के बड़े अक़ीदे को ठीक साबित करे या वह इस बात का सबूत दे कि वह खुद भी मुलाहिम है।

मैं इस बात को वाज़ेह कर देना चाहता हूँ कि मुझे स्वामी दयानन्द की इलमियत पर कोई ऐतराज़ नहीं है। मुम्किन है वह इस ज़माने में वेदों का सबसे बड़ा आलिम हो या ना हो लेकिन अगर वह खुद मुलाहिम नहीं है तो इसको वेदों का भाष्य महज़ उसकी अपनी ज़ाती राय हो सकती है जो कि मुम्किन है दुस्त हो और मुम्किन है ग़लत हो। लाज़मी तो यही है कि इसमें दीगर इन्सान मुसन्नियों की तरह बहुत सी ग़लतियाँ हों और किसी इन्सान की राय पर यूँ ही मुनज़ज़ा मिनल ख़ता होने की मुहर लगा देना, मेरे नज़दीक महज़ कुफ़्र है। लेकिन अगर स्वामी दयानन्द ताज़ा इलहाम का मुद्दई है तो उसके पास इस दावे का क्या सबूत है। उसने कौनसा अज़ीमुशान काम करके दिखाया है। उसने इस बात की क्या शहादत पेश की है कि वह जो कुछ बोल रहा है वह खुदा की ख़ालिस आवाज़ है और कि उसमें किसी दूसरी आसमानी या ज़मीनी आवाज़ की मिलावट नहीं है। इस जैसे बहुत से आलिम और नेक इन्सान भी मौजूद हैं जो कि इस के भाषीय के बहुत से हिस्से को महज़ ग़लत करार देते हैं। इसके पास क्या वजह है कि हम इन आलिमों के ख़्यालात पर इसको तरजीह दें।

(थ्योसोफ़स्ट मार्च १८६३ ई०)

मिस्टर ब्रूम आंजहाँनी ने अपने मज़मून में खुद इस बात का इक़बाल किया है कि उन्होंने स्वामी दयानन्द के लिये सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं मुझे ज़रूरत नहीं है कि मैं उनकी तरफ़ से अल्फ़ाज़ की सख़्ती के लिये मज़ज़रत करूँ जबकि वह खुद इस बात को तसलीम कर रहे हैं कि उन्होंने

सख़्त कलामी की है। लेकिन मेरे नज़दीक महज़ सख़्त कलामी कोई दलील नहीं है। बल्कि दावे की कमज़ोरी की अलामत है तावक्ते कि दावे के सबूत में अल्फ़ाज़ से बढ़कर सख़्त वाकिआत और संगीन दलाईल पेश न किये जायें। मुझे इस बात को अफ़सोस के साथ तसलीम करना पड़ता है कि मिस्टर ब्रूम ने स्वामी दयानन्द की पोज़िशन को कमज़ोर साबित करने के लिये सख़्त वाकिआत और संगीन दलाईल से इस क़द्र काम नहीं लिया जिस क़द्र कि उन्होंने सख़्त अल्फ़ाज़ से काम लिया है वह इस बात को तो सख़्ती से महसूस करते हैं कि किसी किताब को इलहामी मानना पुरोहितों के हाथ में रुहानी आज़ादी को फ़रोख़्त कर देना है जो कि इलहाम की आड़ में मज़हबी मज़ालिम करते हैं लेकिन मिस्टर ब्रूम की ये दलील चन्दों ज़बरदस्त नहीं है। क्योंकि अगर पुरोहित इलहामी किताब की आड़ में बशर्ते कि वह दर हकीकत जोर व जुल्म का मजमूआ हो मज़हबी मज़ालिम कर सकते हैं तो इसी तरह वह इलहामी किताब के ज़रिये बशर्ते कि वह ख़ैर व बरकत का मजमूआ हो मज़हबी दुनिया में अमन व अमान की भी वारिश कर सकते हैं पस किसी इलहामी किताब के बरख़िलाफ़ जिहाद शुरू करने से पेशतर इस बात का जानना ज़रूरी है कि वह इलहामी किताब जोर व जुल्म का मजमूआ है या नहीं। अगर ऐसा हो तो उसके बरख़िलाफ़ सख़्त से सख़्त अल्फ़ाज़ में जंग करना चाहिये। लेकिन अगर इस में इस किस्म के एहक़ाम नहीं हैं बल्कि वह ख़ैरो बरकत की तालीम देती है। तो हमें महज़ इस लिये इसके बरख़िलाफ़ जिहाद नहीं करना चाहिये कि इसको इलहामी तसलीम किया गया है। मेरे नज़दीक इलहाम ऐसी ख़तरनाक चीज़ नहीं है जैसा कि मिस्टर ब्रूम ने इसको फ़र्ज़ किया है। पस मैं मिस्टर ब्रूम की स्ट्रिट में किसी मुक़द्दस किताब की महज़ इस बिना पर मुख़ालफ़त करने के लिये तैयार नहीं हूँ कि वह किताब इलहामी तसलीम की गयी है या मैं किसी शख्स को महज़ इसलिये काविले मलामत या ग़द्दार करार नहीं दूँगा कि वह किसी किताब के इलहामी होने की तालीम देता है। बल्कि अपना फ़तवा देने से पेशतर मैं इस बात को देखने की कोशिश करूँगा कि इस किताब की तालीम क्या है और कि इस शख्स पर पुरोहित का इस किताब की तालीम के बारे में क्या बयान है पस मैं महज़ इस बिना पर कि ज़माना गुज़िश्ता में चूँकि पुरोहित क्लास ने इलहामी कुतुब की आड़ में लोगों पर जुल्म किये गये हैं। इसलिये हर एक पुरोहित काविले

मलामत है। मैं किसी मज़हब के पुरोहित के बरखिलाफ़ फ़तवे देने को गुनाह समझता हूँ तावक्ते कि पहले इस पुरोहित के अपने बयान को न सुन लिया जाये। आम अदालतों में भी यही दस्तूर देखने में आता है कि मुलज़िम पर फ़र्द जुर्म लगाने से पेशतर इसके बयान को सुन लिया जाता है। या कम से कम सज़ा देने से पहले इसको डिफ़ेन्स का मौक़ा दिया जाता है पस लाज़मी है कि पहले हम इस बात की पड़ताल करें कि जिन वेदों को स्वामी दयानन्द ने इलहामी माना है उनके बारे में स्वामी दयानन्द का अपना बयान किया है अगर स्वामी दयानन्द के अपने वेद भाष्य के ज़रिये वेदों में से कोई ऐसी बात साबित होती हो जो कि पुरोहितों के हाथ में जाकर दुनिया में कुशत व खून का बाइस होने का एहतमाल रखती हो तो बकौल मिस्टर ह्यूम स्वामी दयानन्द के वेद के हक़ में जिस क़दर सख़्त से सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये जायें वह कम हैं। लेकिन अगर स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य से वेद बिल्कुल ख़ैर व बरकत का मजमूआ साबित होते हों तो हर एक शख्स को स्वामी दयानन्द के नाम पर नारा-ए-आफ़री बुलन्द करना चाहिये। मेरे ख़्याल में ये एक ऐसी मुनसिफ़ाना पोज़िशन है जो कि हर एक मुहक्क़क़ या सदाक़त पसन्द को मद्दे नज़र रखनी चाहिये ताकि वह सदाक़त की तलाश में राहे रास्त से न भटकने पाये मुझे उम्मीद है कि वह असहाब जो वेदों को इलहामी मानते हैं और वह असहाब जो वेदों को इलहामी नहीं मानते। वह जो वेदों को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं और वह जो वेदों को इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखते मेरे मज़कूरा वाला पोज़िशन को बिल्कुल मुनसिफ़ाना करार देंगे।

दूसरी फ़सल

स्वामी दयानन्द के क़दमों में

मैं कह चुका हूँ कि किसी मज़हब या किसी शख्स पर नुक़ताचीनी करने से पेशतर इस बात का जानना निहायत ज़रूरी है कि उस मज़हब या उस शख्स के कौन से मसलमात हैं जिनको वह अपने नज़दीक आला से आला मसलमात करार देता है। वह कौन सी किताब को अपने नज़दीक बेहतरीन किताब समझता है किसी मज़हब या किसी शख्स को फ़तह पाने की गुर्ज़ से गिराने की कोशिश करना हक़ व बातिल की तमीज़ में मददगार नहीं हो सकता। किसी मज़हब या मज़हबी किताब पर नुक़ताचीनी करते वक़्त उन ज़मीन दोज़ रास्तों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये जो कि उस मज़हब या मज़हबी किताब के मदाह के नज़दीक मतरूक ख़्याल किये जाते हैं। निहायत ज़रूरी अम्र तो ये है कि पहले फ़रीक़ सानी के बयान को मुकम्मल ग़ौर और सन्न से सुना जाये कि वह क्या कहता है। अगर इस का बयान दरहकीक़त माकूल है तो उसको इसलिये नामाकूल साबित करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये कि उसको गिराना मकसूद है। इस उसूल को मद्देनज़र रखते हुए इस बात की तहकीक़ात करनी चाहिये कि आया स्वामी दयानन्द वेदों को इलहामी या मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने की वजह से मिस्टर ह्यूम के अल्फ़ाज़ में वाकई ग़द्दार था या नहीं और आया वेद दरहकीक़त खुदा का कलाम हो सकते हैं या नहीं? लाज़मी है कि सबसे पहले स्वामी दयानन्द के बयान को निहायत ग़ौर से सुन लिया जाये।

मिस्टर ह्यूम ने स्वामी दयानन्द को जिस सोसायटी का बानी करार दिया है वह सोसायटी इस बात को तस्लीम करती है कि सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द की किताब है अगर कोई ये कहे कि ये किताब स्वामी दयानन्द की नहीं है तो वह सोसायटी इस बात को हरगिज़ तसलीम नहीं करेगी। इसलिये अगर स्वामी जी के मसलमात या ख़्यालात का सही सही पता लगाना हो तो उसको इस किताब को पढ़ना चाहिये जो कि स्वामी दयानन्द की मुसतनद तसनीफ़ ख़्याल की जाती है। सत्यार्थ प्रकाश के बारहवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने चारदाक के सत का खंडन करते हुए उनकी किताब में से एक

जगह चन्द श्लोक दर्ज किये हैं जिनका तर्जुमा सत्यार्थ प्रकाश में मुफ़्तस्सला जैल है।

“वेद के बनाने वाले भौंड, धूर्त और निशाचर यानी राक्षस ये तीन हैं। जिरफरी, तिरफरी वगैरह पंडितों के मकर की बातें हैं। देखो धूर्तों की काररवाई कि घोड़े के लिंग को औरत पकड़े, यजमान की औरत का इसके साथ हम सोहबत कराना और लड़की से ठट्ठा करना वगैरह लिखा है। वह धूर्तों के सिवाये और किसी का काम नहीं हो सकता और जहाँ गोश्त खाना लिखा है वह वेद का हिस्सा राक्षस का बनाया हुआ है।” (सत्यार्थ प्रकाश पेज न. २७८ समूलास १२)

वेदों के बारे में मज़कूरा वाला राय चारवाक मज़हब वालों की है। अगर इस राय को सही तसलीम कर लिया जाये तो वेद काबिले तर्क हो जाते हैं। लेकिन स्वामी दयानन्द इस राय को ग़लत करार देता है। इसलिये चारवाक वालों की राय स्वामी दयानन्द आर्य समाज के लिये कोई हुज्जत नहीं हो सकती। स्वामी दयानन्द ने इसका ये जवाब दिया है।

“अब कहिये अगर चारवाक वगैरह ने वेद वगैरह सच्चे शास्त्र देखे सुने या पढ़े होते तो कभी इस तरह वेदों की मज़मूत न करते कि वेद भौंड, धूर्त और निशाचर जैसे आदमियों के बनाये हुए हैं। वह ऐसी बात हरगिज़ न निकालते। अलबत्ता महीधर वगैरह, टीकाकार (मुफ़्तिसरीन) भौंड, धूर्त और निशाचर थे ये उनकी मक्कारी है वेदों का कसूर नहीं है लेकिन चारवाक, अभानक बोध और जैनियों पर अफ़सोस है कि उन्होंने चार वेदों की असली संहिताओं को न सुना, न देखा और न किसी आलिम से पढ़ा। इसी वजह से उनकी अक्ल मारी गयी और वह बे सरो पा वेदों की मज़मूत करने लगे। बदकिरदार वाम मार्गियों के बेसबूत मनगढ़त और वाहियात शरहों को देख कर वेदों के मुख़ालिफ़ बन गये और बे इल्मी के अथाह समन्दर में जा गिरे। जाये गौर है कि औरत से घोड़े का लिंग पकड़वाकर इससे सोहबत करवाना और जजमान की कन्या से हंसी ठट्ठा वगैरह करना वाम मार्गियों के सिवाये और किसी आदमी का काम नहीं वाहियात मनशा वेदों के ख़िलाफ़ और ग़लत शरह उन महापापी वाम मार्गियों के सिवाये और कौन करता। बड़ा अफ़सोस तो इन चारवाक

वगैरह पर आता है कि वह बिला सोचे समझे वेदों की मज़मूत करने पर मुरतैद हो गये ज़रा तो अपनी अक्ल से काम लेते मगर वेचारे करते क्या उनमें इतना इल्म ही नहीं था कि हक़ व बातिल पर गौर करके हक़ की ताईद और बातिल की तरदीद कर सकते। गोश्तख़ोरी भी उनही वाम मार्गी शारहों की कार्यवाही है इसलिये उन्हीं को राक्षस कहना बजा है। लेकिन वेदों में किसी जगह गोश्त का खाना नहीं लिखा इसलिये बिला शक़ व शुबहा ऐसी ऐसी झूठी बातों का पाप इन शारहों को और नीज़ उनको जिन्होंने वेदों को जानने सुनने के बगैर ही मनमानी मज़मूत की है लगेगा। सच तो ये है कि जिन्होंने वेदों की मुख़ालफ़त की और करते हैं या करेंगे वह जिहालत के अंधेरे में पड़े हुए सुख के अवज़ जितना हैबतनाक दुख पायें उतना ही थोड़ा है इसलिये कुल नूए इन्सान को वेदों के मुताबिक़ चलना निहायत वाजिब है। (सत्यार्थ प्रकाश समूलास १२ पेज २७६)

इस बात का वाकई अफ़सोस करना चाहिये कि मज़कूरा वाला तहरीर में बअज़ ऐसे अल्फ़ाज़ मौजूद हैं जो कि एक संजीदा और शाईस्ता बहस में नहीं होने चाहियें जिस तरह मिस्टर ह्यूम ने अपने मज़मून में स्वामी दयानन्द के लिये सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं। इस तरह बल्कि इससे ज़्यादा स्वामी दयानन्द ने अपने मुख़ालफ़ीन के लिये मज़कूरा वाला तहरीर में सख़्त अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल किया है। अल्फ़ाज़ की सख़्ती या भद्देपन को नज़र अन्दाज़ करते हुए इस बात का देखना निहायत ज़रूरी है कि स्वामी दयानन्द की पोज़िशन क्या है। स्वामी दयानन्द चारवाक वालों, बुद्धों और जैनियों के बरख़िलाफ़ ये संगीन फ़तवा देता है कि उनकी अक्ल मारी गयी है क्योंकि उनमें कोई वेदों का आलिम या वेदों का मअनौं से पढ़ने और सुनने वाला मौजूद नहीं है। स्वामी दयानन्द का ये फ़तवा लाज़मी नहीं है कि रास्ती पर मुबनी हो। लेकिन स्वामी दयानन्द और वेदों की पोज़िशन को समझने के लिये स्वामी दयानन्द का बयान सत्र से सुन लेना ज़रूरी है। स्वामी दयानन्द कहता है कि जिन तफ़ासीर की बिना पर चारवाक वाले वेदों की मज़मूत करते हैं वह वाम मार्गियों की तफ़ासीर हैं और कि वाम मार्गी वेदों से कतई अंधेरे में थे। अगरचे स्वामी दयानन्द के मुख़ालिफ़ स्वामी दयानन्द के बारे में भी यही फ़तवे देते हैं कि दरअसल स्वामी दयानन्द वेदों को नहीं समझता था। लेकिन

इस बहस में पड़ना चन्दों ज़रूरी नहीं है जबकि इस बात का पता लगाना मद्दे नज़र हो कि वह शख्स जो प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर के अल्फ़ाज़ में “वेदों के पीछे दीवाना हो रहा हो” वह वेदों को किस शक्ल में पेश करता है इसका फ़ैसला इस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक इस बात को तस्लीम या कम अज़ कम फ़र्ज़ न कर लिया जाये कि वाकई स्वामी दयानन्द का वाम मार्गियों की तफ़सीरों के बारे में जो ख़्याल है वह दुरुस्त है इसलिये अगर हमें स्वामी दयानन्द की पोज़िशन को समझना हो तो हमें कमाल इज़्ज़त से इसकी बात को सुनना पड़ेगा और अगर हम ये कहेंगे कि जिन मुफ़स्सिरीन को स्वामी दयानन्द वाम मार्गी बनाता है वह दरअसल दुरुस्त तफ़सीर कर गये हैं और ये कि स्वामी दयानन्द की तफ़सीर ग़लत है तो ये स्वामी दयानन्द और उन मुफ़स्सिरीन का बाहमी दंगल करवाना है। इसलिये हमें वेदों के बारे में कोई ठीक ठीक राय कायम करने का मौक़ा नहीं मिलेगा। न ही उन मुफ़स्सिरीन की राय जिनकी कि स्वामी दयानन्द के नज़दीक “अक्ल मारी गयी” थी स्वामी दयानन्द के लिये कोई सनद हो सकती है और न ही उन मुफ़स्सिरीन की राय का इस सोसायटी पर कोई असर पड़ सकता है जो कि वेदों को स्वामी दयानन्द की तफ़सीर के मुताबिक़ खुदा का कलाम मानती है पस लाज़मी बात है कि स्वामी दयानन्द और वेदों की पोज़िशन को समझने के लिये हम अगर दिल से नहीं तो कम अज़ कम हकीक़त को जानने की खातिर स्वामी दयानन्द के क़दमों में बैठकर इन बातों का इक़रार करें कि -

- (१) चारवाक वालों ने न वेदों को पढ़ा न सुना न देखा। वेदों का लासानी आलिम स्वामी दयानन्द था।
- (२) सुधीर वग़ैरह मुफ़स्सिरीन भाँड व धूर्त, निशाचर और वाम मार्गी थे। उनकी तफ़ासीर हरगिज़ काविले ऐतबार नहीं हैं बल्कि उनके मुकाबले में स्वामी दयानन्द की तफ़सीर वेदों पर सनद है क्योंकि स्वामी दयानन्द आलिम फ़ाज़िल, योगी, ऋषि और मुर्ताज़ था।
- (३) चारवाक, बोध, अभानक और जैनियों ने न वेदों को पढ़ा न सुना, न देखा इसलिये उन की अक्ल मारी गयी और वह बेसरो पा वेदों की मज़म्मत करने लग गये और वाम मार्गियों की तफ़सीरों को देखकर वेदों के मुख़ालिफ़ बन गये और जिहालत के अथाह समन्दर में जा गिरे मगर स्वामी दयानन्द ने वेदों को पढ़ा सुना और देखा बल्कि

उनका भाषीय भी किया और वह दिल व जान से वेदों का आशिक़ बल्कि वेदों के पीछे दीवाना था और कि वह हर एक किरम की जिहालत से पाक था।

- (४) जिन लोगों ने ऐसी शरहें लिखी हैं और जो वेदों को जानने और सुनने के बग़ैर ही वेदों की मज़म्मत करते हैं वह पापी हैं मगर स्वामी दयानन्द ने जो तफ़सीर लिखी है इसमें इस किस्म की कोई मज़म्मत नहीं है इसलिये इस तफ़सीर को पढ़ने वाले पाप के नहीं बल्कि सवाब के मुस्तहिक़ हैं।
 - (५) अलग़रज़ वेदों के बारे में सही सही राय कायम करने के लिये स्वामी दयानन्द की तफ़सीर सनद है। बाकी तमाम तफ़ासीर जिनका कि खुद स्वामी दयानन्द ने रद कर दिया है मरदूर हैं और वह हमारे लिये सनद नहीं हैं।
- स्वामी दयानन्द के क़दमों में बैठकर अब ये प्रार्थना है कि वेदों की जिन तफ़ासीर को आप ने ग़लत क़रार दिया है वे वाकई ग़लत हैं। अब आप कृपा करके हमें अपनी तफ़सीर दीजिये ताकि हम जो वेदों के बारे में “वाम मार्गियों की तफ़सीरों को पढ़ पढ़कर हैरान व परेशान हो रहे थे आप की तफ़सीरों से वेदों पर हमारा ऐतकाद जम जाये और हम उनको खुदा का कलाम मानने लग जायें। ये एक ऐसी माकूल पोज़िशन और प्रार्थना है कि जिसको स्वामी दयानन्द या कोई दूसरा माकूल इन्सान नापसन्द नहीं कर सकता। अब जबकि हम पहली तमाम तफ़ासीर को स्वामी दयानन्द के इरशाद के मुताबिक़ हाथ से फेंक चुके हैं। देखना चाहिये कि स्वामी दयानन्द इसके अवज़ में हमारे हाथ में क्या देता है।”

तीसरी फ़सल

स्वामी दयानन्द और उनका मैयार standard

स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में ईश्वर प्रार्थना का मज़मून दर्ज करते हुए लिखते हैं-

इस किस्म की प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और परमेश्वर इसको कबूल करता है जैसे कि ये है कि ऐ परमेश्वर आप मेरे दुश्मनों को फ़ना करो, मुझको सबसे बड़ा बनाओ, मेरी ही नेक नामी हो और सब मेरे मातेहत हो जायें वगैरह वगैरह। क्योंकि अगर दोनों दुश्मन एक दूसरे के फ़ना के वास्ते प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों को फ़ना कर देवे। अगर कोई कहे कि जिसकी मुहब्बत ज्यादा होगी इसकी प्रार्थना सफल हो जायेगी तो हम कह सकते हैं कि जिसकी मुहब्बत कम हो उसका दुश्मन भी कम दर्जा फ़ना होना चाहिये। ऐसी जिहालत की प्रार्थना करते करते कोई ऐसी प्रार्थना भी करने लग जायेगा कि ऐसे परमेश्वर आप रोटी बनाकर हम को खिलाईये मेरे मकान में झाड़ू लगाईये, कपड़े धो दीजिये और खेती बाड़ी भी कर दीजिये। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ७)

स्वामी दयानन्द का मज़कूरा वाला ख़्यालात निहायत ही माकूल है वाकई जो शख्स ये प्रार्थना करता है कि इसके दुश्मन फ़ना हो जायें और वही ज़िन्दा रहे वह एक जाहिल इन्सान है और उसकी इस किस्म की प्रार्थना खुद स्वामी दयानन्द के अल्फ़ाज़ में महज़ जिहालत की प्रार्थना है। इससे भी बढ़कर अगर कोई शख्स हमें इस किस्म की प्रार्थना की तालीम दे तो वह उसको उझल समझना चाहिये और जिस किताब में इस किस्म की प्रार्थनायें दर्ज हो वह किताब किसी सूत में भी माकूल नहीं कही जायेगी। इस पहलू में स्वामी दयानन्द की पोज़िशन बहुत माकूल है इसी उसूल की बिना पर स्वामी दयानन्द ने दीगर मज़ाहिब की मुक़द्दस किताबों पर बड़ी सख़्त नुक़ताचीनी की है। मेरा मक़सद यहाँ पर ज़ाहिर करना नहीं है कि वह नुक़ताचीनी कहाँ तक दुरुस्त है या ग़लत है। बल्कि स्वामी दयानन्द के इस उसूल को मालूम करना है जिनकी बिना पर वह दीगर मज़ाहिब की मानी हुई मुक़द्दस किताबों को खुदा

का कलाम मानने से मुनकिर हैं और वह उनके मुकाबले में वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं। स्वामी दयानन्द के इस मैयार या उसूल का पता लगाने के लिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि यहाँ पर स्वामी दयानन्द की इस नुक़ताचीनी की चन्द मिसालें दर्ज कर दी जायें जो कि उन्होंने कलामे मजीद पर की हैं। कुरआन मजीद अहले इस्लाम की मज़हबी किताब है और मुसलमान इसको खुदा का कलाम मानते हैं। बल्कि कलामे मजीद का दूसरा नाम कलामुल्लाह यानी खुदा का कलाम है। इस बात के बताने की ज़रूरत है कि कुरआन मजीद अरबी ज़बान में है। ये भी साफ़ बात है कि स्वामी दयानन्द अरबी से बिल्कुल नावाकिफ़ थे। मगर चूँकि कुरआन के आला से आला तर्जुमे दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में मौजूद हैं और उनमें बअज़ तराजिम अहले इस्लाम के आला पाये के उलेमा के लिये हुए हैं। इसलिये ये ऐतराज़ कि चूँकि स्वामी दयानन्द अरबी नहीं जानते थे। लिहाज़ा वह कुरआन मजीद पर किसी किस्म की नुक़ताचीनी करने का हक़ नहीं रखते थे। चन्द दिन वज़नदार नहीं रह जाता जबकि यह कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द ने उन ही तर्जुमों को अपने लिये काफ़ी समझा। जिनके बारे में उनको बताया गया था कि वह अहले इस्लाम के नज़दीक मुस्तनद हैं गो अहले इस्लाम उनको मुस्तनद न मानते हों चुनांचे खुद स्वामी दयानन्द ने कुरआन मजीद पर नुक़ता चीनी शुरू करने से पेशतर अपनी इस पोज़िशन को बर्दी अल्फ़ाज़ वाज़ेह कर दिया है।

जो ये चौदहवाँ समुल्लास मुसलमानों के मज़हब की वाबत लिखा है वह सिर्फ़ कुरआन की रू से लिखा गया है किसी और किताब के अक़ाईद की रू से नहीं। क्योंकि मुसलमान कुरआन शरीफ़ ही पर पूरा ऐतकाद रखते हैं। अगरचे मुख़्तलिफ़ फिरके होने के बाइस किसी ख़ास लफ़ज़ के मअनी वगैरह में इख़्तिलाफ़ रखें। तो भी कुरआन के बारे में सब मुत्तफ़िक़ हैं। कुरआन अरबी ज़बान में है। इसका जो तर्जुमा उर्दू में मौलवियों ने किया है इस तर्जुमे को बाहरूफ़ देवनागरी ज़बान आर्य भाषा अरबी के बड़े बड़े आलिमों से सही करवाने के बाद लिखा गया है। अगर कोई कहे कि ये तर्जुमा ठीक नहीं है तो इसको लाज़िम है कि मौलवी साहेबान की ठीक किये हुये तर्जुमे की पहले तरदीद करे बाद अज़ा

इस मज़मून पर कलम उठाये। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४)

स्वामी दयानन्द की मज़कूरा वाला तहरीर से ज़ाहिर होता है कि उनके पास कुरआन मजीद का कोई ऐसा तर्जुमा मौजूद था उनके ख़्याल में मौलवियों ने किया था और जिसको स्वामी दयानन्द ने बज़अम खुद “अरबी के बड़े बड़े आलिमों से सही करवाया, बहुत अच्छा होता अगर स्वामी दयानन्द अरबी के उन बड़े बड़े आलिमों के नाम” भी ज़ाहिर कर देते। जिनसे कि वह तर्जुमा दुरुस्त करवाया था ताकि इस बात का फैसला हो जाता कि आया ऐसे उलेमा का तर्जुमा अहले इस्लाम के नज़दीक सनद हो सकता है या नहीं। मगर स्वामी दयानन्द ने उनके नाम को पोशीदा रखने में जो मसलेहत समझी होगी उस पर बहस करना बड़ा मुश्किल है। ताहम इतना कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द ने कुरआन मजीद के जिस तर्जुमे की बिना पर कुरआन मजीद पर ऐतराज़ करते हैं वह तर्जुमा अहले इस्लाम के उलेमा का किया हुआ या मुस्तनद मालूम नहीं होता। इसलिये जब तर्जुमा ही ग़ैर मुस्तनद हो तो इस पर जिस क़द्र भी नुकताचीनी की जायेगी वह ज़मीन पर गिर जायेगी। मैं इस बात को एक मिसाल के ज़रिये वाज़ेह कर देना चाहता हूँ कुरआन मजीद में इस बात को बतौर दावे के पेश किया गया है कि वह फ़साहत व बलागत में लासानी किताब है। चुनांचे मुख़ालिफ़ीने कुरआने मजीद को इसमें एक जगह बर्दी अल्फ़ाज़ चैलेन्ज दिया गया है।

وَأَنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِالنَّارِ الَّتِي وَفُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ (البقرة ع २)

“और वह जो हम ने अपने वन्दे (मुहम्मद स०अ०व०) पर (कुरआन) उतारा है। अगर तुमको इस में शक हो और ये समझते हो कि ये किताब खुदा की किताब नहीं। बल्कि आदमी की बनायी हुई है और तुम अपने इस दावे में सच्चे हो तो इसी जैसी एक सूरात तुम भी बना लाओ और अल्लाह के सिवा अपने हिमायतियों को बुला लो। पस अगर (स) इतनी बात भी न कर सको और तुम हरगिज़ न कर सकोगे तो दोज़ख़ की आग से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वह (दोज़ख़) मुनकिरों के लिये

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

दहकी दहकाई तैयार है (स)।”

(तर्जुमा मौलवी हाफ़िज़ नज़ीर अहमद साहब) मज़कूरा वाला तर्जुमे में जिन अल्फ़ाज़ को (स) में कर दिया गया है उनको मद्दे नज़र रखना चाहिये क्योंकि इस तर्जुमे का स्वामी दयानन्द के “उलेमा” के तर्जुमे से मुकाबला करने में मदद मिलेगी स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास में जो कि कुरआन मजीद पर नुकताचीनी का बाव है। इस आयत के ऊपर भी ऐतराज़ किया है। लेकिन उन्होंने अरबी के उलेमा का जो तर्जुमा इस आयत का सत्यार्थ प्रकाश में दर्ज किया है वह बर्दी अल्फ़ाज़ है और जो तुम इस चीज़ से शक से हो जो हम ने अपने पैगम्बर के ऊपर उतारी तो इसकी सी एक सूरात ले आओ और शाहिदों अपने को पुकारो। सिवाये अल्लाह के अगर हो तुम सच्चे फिर अगर न करो और हरगिज़ न करोगे तुम इस आग से डरो कि जिसका ईंधन आदमी हैं और काफ़िरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये हैं। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४, ऐतराज़ नं. ८)

मज़कूरा वाला तर्जुमे के जिस आख़री हिस्से पर ख़त कर दिया गया वह काबिले ग़ौर है। इस बात का पता नहीं लग सकता कि अरबी के जिन उलेमा ने स्वामी दयानन्द को ये सही तर्जुमा करके दिया था वह किस दाख़लउलूम के सनद याफ़ता था। लेकिन मामूली अरबी जानने वाला शख्स भी यह कह सकता है कि ये तर्जुमा बिल्कुल ग़लत है क्योंकि मज़कूरा वाला आयत में ऐसे अल्फ़ाज़ नदारद हैं कि जिनका तर्जुमा “काफ़िरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये हैं” हो सकता है पस जिस सूरात में कुरआन मजीद में ऐसी आयत ही नदारद है कि जिसका तर्जुमा सत्यार्थ प्रकाश में मज़कूरा वाला अल्फ़ाज़ में दिया गया है तो इस वेबुनियाद बात पर जिस क़द्र नुकताचीनी होगी वह नुकता चीनी भी ज़मीन पर गिर जायेगी। लिहाज़ा मज़कूरा वाला वेबुनियाद तर्जुमे की बिना पर स्वामी दयानन्द का ये लिखना कि उन्होंने कुरआन मजीद पर नुकताचीनी करने के लिये जिस तर्जुमे को आगे रखा है। वह बड़े बड़े मौलवियों और अरबी के उलेमा का सही किया हुआ तर्जुमा है। एक वेबुनियाद बात साबित होती है। ऐसी सूरात में सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की बुनियाद दरिया के किनारे की रेत में डेह जाती है। ज़ाहिर है कि बुनियाद के गिरने के साथ ही इस पर जिस क़द्र महल तैयार किया गया हो वह भी गिर

गाज़ी महमूद धर्मपाल

जाता है। लिहाज़ा सत्यार्थ प्रकाश का चौदहवाँ समुल्लास कुरआन मजीद के बारे में कोई दुरुरत नुकता चीनी नहीं कहा जा सकता और वह सारे का सारा ज़मीन पर गिर जाता है।

.....एडिटर.....

(स्वामी दयानन्द इस चैलेंज के जवाब में १४ समुल्लास की ८ वीं समीक्षा में कहते हैं फेजी ने अकबर के समय में कुरआन बना लिया था, हैरत की बात है सभी जानते हैं कि फेजी ने टीका कमेंटरी में एक फन दिखाया था, उसने बिना नुक्ते यानि बिन्दी का प्रयोग किये बिना कुरआन की तफसीर लिखी थी, जिस पर इस्लामी दुनिया का नाज है, यह सूरा भी हमेशा सच की ओर बुलाने को प्रेरित करती रही है)

And if you (Arab pagans, Jews, and Christians) are in doubt concerning that which We have sent down (i.e. the Qur'an) to Our slave (Muhammad, Peace be upon him), then produce a surah (chapter) of the like thereof and call your witnesses (supporters and helpers) besides Allah, if you are truthful. [Qur'an 2:23]

This is a challenge that still stands today, as no one has met this challenge in the over one thousand four hundred (1,400) years since it was first made. This is a point upon which we ask the reader to ponder.

.....एडिटर.....

इस वयान से मेरा मतलब कुरआन मजीद का डिफेन्स करना नहीं है और न ही कुरआन मजीद को मेरे डिफेन्स की ज़रूरत है। बल्कि यहाँ पर मेरा मुद्दा स्वामी दयानन्द जैसे मुहक्किक् की पोज़िशन का पता लगाना है कि वह किन वजूहात पर किसी मुकद्दस या इलहामी किताब का फ़ैसला करने के लिये तैयार हैं। नकर कुफ़ कुफ़ तबाशद को मद्दे नज़र रखते हुये ज़रूरी

मालूम होता है कि मैं यहाँ पर चन्द ऐसी इबारतें सत्यार्थ प्रकाश में से नकल कर दूँ कि जिनकी बिना पर स्वामी दयानन्द ने कुरआन मजीद को इलहामी किताब मानने से इनकार कर दिया है। चुनांचे वह बर्दी अल्फ़ाज़ है।

कुरआन (१)

सब तारीफ़ वास्ते अल्लाह के जो परवरदिगार आलमों का बख़्शि़श करने वाला मेहरवान है।

स्वामी दयानन्द (१)

अगर कुरआन का खुदा दुनिया का परवरदिगार होता और सब पर बख़्शि़श और रहम किया करता तो दूसरे मज़हब वालों और हैवानात वगैरह को भी क़ल करवाने का हुक्म न देता।

कुरआन (१५)

और जब लिया हम ने अहद तुम्हारा न डालो तुम लहू अपने आपस के और न निकाल दो किसी आपसी अपने को घरों अपने से फिर इक़्रार किया तुम ने और तुम शाहिद हो फिर तुम वह लोग हो कि मार डालते हो आपस अपने को और निकाल देते हो एक फिरके को आप में से घरों उनके से।

स्वामी दयानन्द (१७)

भला इक़्रार करना और कराना महदूदुल अक्ल आदमियों की बात है या खुदा की आपस में लहू न वहाना और अपने हम मज़हबों को घर से न निकालना और दूसरे मज़हब वालों का लहू वहाना और घर से उन्हें निकाल देना भला कौन सी अच्छी बात है। ये तो वेवकूफी और तरफ़दारी से भरी हुई फज़ूल बात है।

कुरआन (२०)

काफ़ि़रों पर लानत अल्लाह की।

स्वामी दयानन्द (२०)

जिस तरह तुम ग़ैर मज़हब वालों को काफ़िर कहते हो उसी तरह क्या वे तुम को काफ़िर नहीं कहते और वह अपने मज़हब की तरफ़ से तुम्हें लानत देते हैं। ये सब झगड़े जिहालत के हैं।

कुरआन (३३)

तुम पर मुरदार लहू और गोश्त सुअर का हराम है।

स्वामी दयानन्द (३३)

जिस जानदार से ज्यादा फायदा पहुँचे मसलन गाय वगैरह उनके मारने की मुखालफत न करने से खुदा दुनिया को नुकसार पहुँचाने वाला साबित होता है और ईजा रसानी के गुनाह से बदनाम भी हो जाता है। ऐसी बातें खुदा और खुदा की किताब की हरगिज़ नहीं हो सकती।

कुरआन (३५)

अल्लाह की राह में लड़ो, उनसे जो तुम से लड़ते हैं, मार डालो तुम उसको जहाँ पाओ कत्ल से कुफ़ बुरा है।

स्वामी दयानन्द (३५)

विला कसूर किसी को मारना सख्त गुनाह है। उनके नज़दीक मज़हब का कबूल न करना कुफ़ है और काफ़िर के कत्ल को मुसलमान लोग अच्छा मानते हैं। उनका मज़हब ग़ैर मज़हब वालों से सख्त कलम करना सिखाता है। ये बात न खुदा की न खुदा के मोअतकिद आलिम की और न खुदा की किताब की हो सकती है।

कुरआन (३६)

और अल्लाह नहीं दोस्त रखता फ़साद को। ऐ लोगो कि ईमान लाये हो दाख़िल हो बीच इस्लाम के।

स्वामी दयानन्द (३६)

अगर अल्लाह फ़साद नहीं चाहता तो क्यों आप ही मुसलमानों को फ़साद करने पर आमादा करता है। और मुफ़सिद मुसलमानों से दोस्ती करता है। अगर मुसलमानों के मज़हब में दाख़िल होने से खुदा राज़ी होता है। तो वह मुसलमानों का ही तरफ़दार है। सब दुनिया का खुदा नहीं। इससे ये ज़ाहिर होता है कि न कुरआन खुदा का बना हुआ न उसमें कहा हुआ सच्चा खुदा हो सकता है।

कुरआन (४८)

मुसलमानों को चाहिये कि वह काफ़िरों को दोस्त न बनायें, सिवायें मुसलमानों के जो कोई ये करे सो वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है।

स्वामी दयानन्द (४८)

अब देखिये तअस्सुब की बातें जो दीने इस्लाम में नहीं हैं। उनको काफ़िर करार दिया गया है। ग़ैर मज़हब के नेक़कारों से भी दोस्ती न रखना और बद मुसलमानों ही से दोस्ती रखने की तालीम देना खुदा के शायान नहीं।

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

इसलिये ये कुरआन कुरआन का खुदा और मुसलमान लोग महज़ तअस्सुब जिहालत से पुर हैं और मुसलमान लोग तारीकी में हैं।

कुरआन (५२)

और मदद दे हम को ऊपर क़ौमे काफ़िरों के।

स्वामी दयानन्द (५२)

देखिये मुसलमानों की ग़लती कि जो अपने मज़हब के नहीं। उनके मारने के वास्ते खुदा से दुआ करते हैं। क्या खुदा सादा लौह है जो उनकी बात मान लेगा।

कुरआन (५८)

और न बन्द करें हाथों अपने को पस पकड़ो उनको और मार डालो उनको जहाँ पाओ।

स्वामी दयानन्द (५८)

अब देखिये परले दर्जे के तअस्सुब की बात कि जो मुसलमान न हो। इसको जहाँ पाओ मार डालो। और मुसलमान को न मारो, भूल से भी मुसलमान के मारने में दोज़ख़ और औरों के मारने में बहिश्त मिलेगा। ऐसी तालीम कुरे में डालनी चाहिये, ऐसी किताब ऐसे पैगम्बर, ऐसे खुदा और ऐसे मज़हब से सिवाये नुक़सान के फ़ायदा कुछ भी नहीं। उनको न होना अच्छा है। ऐसे जाहिलाना मज़हबों से अक्लमंदों को अलेहदा रहकर वेदिक अहक़ाम को तसलीम करना चाहिये क्योंकि उनमें झूठ ज़रा भी नहीं है।

कुरआन (७६)

सवाल करते हैं तुझ को लूटों से कि लूटें वास्ते अल्लाह के और रसूल के हैं पस डरो अल्लाह से।

स्वामी दयानन्द (७६)

तअज्जुब है कि जो लूट मचावें, डाकू के काम करें, करावें वह खुदा पैगम्बर और ईमानदार कहलावें। साथ ही अल्लाह का डर बतलाते और डाका मारते जाते हैं। फिर ये कहते शर्म नहीं आती कि हमारा मज़हब अच्छा है। इससे बढ़कर और क्या बुरी बात हो सकती है कि तअस्सुब को छोड़कर सच्चे वेदिक धर्म को मुसलमान कबूल नहीं करते।

कुरआन (७७)

और काटे जड़ काफ़िरों की। पस मारो ऊपर गर्दन के और मारो उनमें

गाज़ी महमूद धर्मपाल

से हर एक पूरी पर।

स्वामी दयानन्द (७७)

वाह जी वाह खुदा और पैगम्बर खूब रहम दिल हैं। जो लोग मज़हबे इस्लाम में नहीं। उन काफ़िरो की जड़ काटने इनकी गर्दन मारने और उनको जोड़ों को काटने का खुदा हुक्म देता है और इस काम में उनका ममदू व मज़ाविन बनता है। क्या ये खुदा रावण से कुछ कम है। यह सब फरेव कुरआन के मुसत्रिफ़ का है। खुदा का नहीं। अगर खुदा का हो। तो ऐसा खुदा हम से दूर रहे और हम उससे दूर रहें।

कुरआन (८७)

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो लड़ो उन लोगों से जो लोगों से पास तुम्हारे हैं, काफ़िरो में से।

स्वामी दयानन्द (८७)

देखिये मुहसिन कशी की तालीम, खुदा मुसलमानों को सिखलाता है कि पड़ोसियों और गुलामों से लड़ाई करो और मौका पाकर लड़ो या क़त्ल करो।

कुरआन (१२८)

और वह लोग कि ईज़ा देते हैं। मुसलमानों को और मुसलमान औरतों को बग़ैर इसके कि बुरा किया हो उन्होंने पस तहकीक़ उठाया उन्होंने ब्रुहतान और गुनाह ज़ाहिर लानत है। उन पर मारे जायें। जहाँ पाये जायें पकड़े जायें और क़त्ल किये जायें।

स्वामी दयानन्द (१२८)

वाह रे ग़दर मचाने वाले खुदा और नबी तुम से तो बेरहम दुनिया में बहुत थोड़े होंगे। ये जो लिखा है कि ग़ैर लोग जहाँ मिलें उनको पकड़ें और मारें। वैसा ही अगर मुसलमानों से ग़ैर मज़हब वाले बरताव करें। तो उनको ये बात बुरी लगेगी या नहीं। वाह कैसे मूज़ी पैगम्बर हैं कि खुदा से दूसरों को दुख देने की दुआ माँगते हैं। उससे उनकी तरफ़दारी, खुदगर्ज़ी और सख़्त जुल्म का सबूत मिलता है।

कुरआन (१४०)

पस जब मुलाकात करो तुम इन लोगों से कि काफ़िर हुये पस मारो गर्दन उनको यहाँ तक कि जब चूर कर दो उनको। पस मुहक़िम करो। कैद करना और बहुत बस्तियाँ थीं कि वह सख़्त थीं कुब्यत में बस्ती तेरी से जिसने

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

निकाल दिया तुझ को। हलाक किया हम ने उनको पस न हुआ कोई मदद देने वाला वारते उनके।

स्वामी दयानन्द (१४०)

इसलिये ये कुरआन, खुदा और मुसलमान ग़दर मचाने का तक्लीफ़ देने और अपना मतलब निकालने वाले ज़ालिम हैं। जैसा यहाँ लिखा है। वैसा ही अगर दूसरा कोई ग़ैर मज़हब वाला मुसलमानों पर करे। तो मुसलमानों को भी वैसा ही दुख जैसा कि दूसरों को देते हैं हो या नहीं और खुदा की तरफ़दारी देखिये। जिन्होंने मुहम्मद स०अ०व० साहब को निकाल दिया। उनको खुदा ने हलाक कर डाला।

कुरआन (१४२)

तहकीक़ अल्लाह दोस्त रखता है। उन लोगों को कि लड़ते हैं बीच राह उसकी के।

स्वामी दयानन्द (१४२)

वाह ठीक है। ऐसी ऐसी बातों की हिदायत करके बेचारे एक अरब के वाशिन्दी को सबसे लड़ाया दुश्मन बनाकर बाहम तकलीफ़ दिलाई और मज़हब का झंडा बुलन्द करके लड़ाई फैलाई। ऐसे को कोई अक्लमंद खुदा कभी नहीं मान सकता। जो क़ौम में फ़साद बढ़ा दे। वही सब को तकलीफ़ देह होता है।

स्वामी दयानन्द

अब इस कुरआन के मज़मून को लिखकर आकिलों के पेशे नज़र करता हूँ कि ये किताब कैसी है मुझ से पूछो। तो ये किताब न खुदा न आलिम की बनाई हुई और न इल्म की हो सकती है। ये तो बहुत थोड़े से नुक्स ज़ाहिर किये। इसलिये कि लोग धोखे में पड़कर अपनी उम्र बेफ़ायदा ज़ाये न करें। जो कुछ इस में थोड़ी सी सच्चाई है वह वेद वग़ैरह इल्मी किताबों के मुताबिक़ होने से जैसे मुझको मन्ज़ूर है वैसे और भी मज़हब के ज़िद और तअस्सुब से मुबर्रा आलिमों और आकिलों को मन्ज़ूर है। इसके सिवाये जो कुछ इसमें हैं वह सब लाइल्मी की बातें और तोहमात हैं। और इन्सान की रूह को मिस्ल हैवान के बनाने, अमन में खलल डालकर फ़साद मचाने, इन्सानों में नाइत्तफ़ाकी फैलाने, बाहम तकलीफ़ को बढ़ाने वाला मज़मून है और ख़ैर व बरकत दोष का तो गोया कुरआन ख़ज़ाना ही है।

गाज़ी महमूद धर्मपाल

मज़कूरा वाला नुकताचीनी को मैंने इसलिये नकल किया है ताकि स्वामी दयानन्द की इलहामी किताब के बारे में सही पोज़िशन का पता लग सके ये कहना कुरआन मजीद के जिन तराजिम की बिना पर स्वामी दयानन्द ने इस पर नुकताचीनी की है इन तराजिम में कुरआन मजीद के सही मफहूम को समझकर नुकता चीनी की है एक बहस तलबे मआमला है जिसका किसी कद्र जवाब इस मज़मून के शुरू में दिया जा चुका है। जैसे कि मैं पहले भी अर्ज कर चुका हूँ। इस जगह मेरा मुद्दा कुरआन मजीद को डिफेन्ड करना नहीं है बल्कि स्वामी दयानन्द की तहकीकात से फायदा उठाना है कि वह किन वज्हात पर किसी किताब के इलहामी या खुदा के कलाम हो सकते हैं। चुनांचे उनके मज़कूरा वाला ख्यालात से जो कि उन्होंने कुरआन मजीद के बारे में ज़ाहिर किये हैं, मुख्तसरन् अल्फ़ाज़ में नतीजा निकाला जा सकता है कि वह किसी ऐसी किताब को इलहामी नहीं मान सकते जिसमें कि हैवानों के मारने, अपने दुश्मनों से सख्ती करने, उनको क़त्ल करने ग़ैर मज़हब के लोगों को काफ़िर कहने और उनको क़त्ल करने वग़ैरह की तालीम मौजूद हो। या दूसरे लफ़्ज़ों में खुदा का कलाम वही किताब हो सकती है, जिसमें इन्सानों या हैवानों के क़त्ल करने की तालीम मौजूद न हो वग़ैरह वग़ैरह, उन मैअयारों में से जो स्वामी दयानन्द की तहरीर के मुतालफ़े से मज़हबी किताबों के इलहामी होने या न होने के बारे में कायम किये जा सकते हैं। ये एक मैअयार या उसूल है। स्वामी दयानन्द ने इसी मैअयार से अहले इस्लाम की मुकद्दस किताब को परखा और इसी उसूल की बिना पर इसको इलहामी किताब के दर्जे से साक़ित कर दिया और इसकी बजाये वेदों को इलहामी या खुदा का कलाम क़रार दिया। मैं ये नहीं कहूँगा कि स्वामी दयानन्द का ये मैअयार ग़लत है। बल्कि देखना चाहिये कि आया इसी मैअयार पर अगर वेदों को रखकर परखा जाये तो वह इलहामी या खुदा का कलाम हो सकता है या नहीं। मैं इस बात पर बहस नहीं करूँगा कि वेद में ख़रगोश, हिरन, ऊँट, बकरा, नील गाय वग़ैरह के मारने की इजाज़त है। ये तो वेदों की मामूली सी बात है। (देखो यजुर्वेद अध्याय १३) बल्कि मैं इस बात पर बहस करूँगा कि वेद में इन्सानों के साथ किस किस्म का सुलूक रवा रखा गया है।

चौथी फ़सल

स्वामी दयानन्द और वेद

पेशतर इसके कि स्वामी दयानन्द के पेशकरदा मैअयार पर वेद को परखा जाये ये ज़रूरी मालूम होता है कि मैं एक ऐतराज़ का जवाब दे दूँ जिस वक़्त मैंने पहले ही पहल वेदों के इलहामी होने से इनकार का ऐलान किया था उस वक़्त वेदों को इलहामी मानने वालों ने मेरी बात का जवाब देने की बजाये ये हुज्जत खड़ी की थी कि चूँकि तुमने वेदों को नहीं पढ़ा इसलिये तुम क्योंकर कह सकते हो कि वेद खुदा का कलाम नहीं है। पस तुम्हारा कोई हक़ नहीं है कि तुम वेदों पर नुकता चीनी करो। अगर इस हुज्जत को सही तसलीम कर लिया जाये तो सवाल पैदा होगा कि स्वामी दयानन्द का क्या हक़ था कि उन्होंने कुरआन पर नुकताचीनी की जबकि ये अम्र वाकिअ है कि स्वामी दयानन्द अरबी, फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी से क़तई महरूम थे और ये भी अम्र वाकिअ है कि स्वामी दयानन्द के ज़माने में अगरचे कुरआन अरबी में मौजूद था और इसके तराजिम फ़ारसी उर्दू और अंग्रेज़ी में भी मौजूद थे मगर हिन्दी में इसका कोई तर्जुमा नहीं था और स्वामी दयानन्द सिवाये हिन्दी और संस्कृत के मज़कूरा वाला ज़वानों से क़तई नाबलद थे। इसी तरह स्वामी दयानन्द का क्या हक़ था कि उन्होंने सिखों की मुकद्दस किताब ग्रंथा साहिब पर नुकता चीनी की। हालाँकि ये किताब गुरुमुखी में है और स्वामी दयानन्द गुरुमुखी से बिल्कुल नाआशना थे पस अगर वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों की मज़कूरा वाला हुज्जत को तसलीम कर लिया जाये तो स्वामी दयानन्द की पोज़िशन बहुत नाज़ुक हो जाती है। अगर स्वामी दयानन्द इस हुज्जत का कायल होता तो वह कम से कम कुरआन और गुरुग्रंथ साहिब के बारे में एक लफ़्ज़ भी न लिख सकता। मगर स्वामी दयानन्द एक माकूल इन्सान था और वह इस किस्म की नामाकूल हुज्जतों को ज़्यादा वुक़अत नहीं देता था जिस तरह इस ने दीगर मज़ाहिब की कुतुबे मुकद्दसा के इन तराजिम को जो कि उसको मुसतनद बताये गये थे गो वह दर हकीकत मुसतनद न हों। आगे रखकर उन पर नुकता चीनी करते हुए अपनी राय का इज़हार किया है इसी तरह हर एक शख्स को ये हक़ हासिल है कि वह स्वामी दयानन्द के वेद

भाषीय को जो कि स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के नज़दीक मुसतनद है, सामने रखकर वेदों के मुतअल्लिक अपनी राय का इज़हार करे। स्वामी दयानन्द ने कुरआन पर नुकता चीनी करने से पहले ही लिख दिया था कि-

“अगर कोई कहे कि ये तर्जुमा ठीक नहीं है तो इसको लाज़िम है कि मौलवी साहेबान के किये हुए तर्जुमों की पहले तरदीद करे इसके बाद इस मज़मून पर कलम उठाये। दीवाचा ज़िम्नी समुल्लास नम्बर १४ सत्यार्थ प्रकाश”।

इसी तरह जो शर्ख्स स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय को मुसतनद मानकर इसकी बिना पर वेदों के मुतअल्लिक कुछ लिखता है। इसका वह मज़मून उस वक़्त तक रद्द नहीं हो सकता जब तक कि स्वामी दयानन्द के भाषीय को ग़लत साबित करके स्वामी दयानन्द पर वही फ़तवा न लगाया जाये जो कि उसने महेधर वगैरह मुफ़रिसरीन पर लगाया है। ग़ालिबन् कोई शर्ख्स भी स्वामी दयानन्द पर ऐसा फ़तवा लगाने के लिये तैयार नहीं होगा। चूँकि स्वामी दयानन्द वेदों को कलामे इलाही मानता था और उनके लिये इसके दिल में अज़हद इज़ज़त थी और वेदों की खातिर ही उसने दीगर मज़हब की मुकद्दस किताबों का खंडन किया। इसलिये ये नामुम्किन है कि उसने वेदों की तफ़सीर करते वक़्त इस नियत से काम लिया हो जिस नियत से कि इसके नज़दीक दीगर मुफ़रिसरीन वेद ने काम लिया था। वेदों के बारे में स्वामी दयानन्द के कौल की तसदीक़ स्वामी दयानन्द की तफ़सीर बढ़कर और किसी तरह नहीं हो सकती। मैं इस बात को ज़रूरी नहीं समझता कि यहाँ पर वेद मंतरों की इवारत को नक़ल करूँ बल्कि इस तर्जुमे को भी मअ हवालात के पेश करता जाऊँगा जो कि स्वामी दयानन्द ने किया है और जिसको मैंने लफ़्ज़ वालफ़्ज़ उर्दू हरूफ़ में किताब की शक्ल में शायेअ कर दिया है। सिर्फ़ इस बात को देखना चाहता हूँ कि आया वेदों को इसी रोशनी में पढ़कर जिस रोशनी में कि स्वामी दयानन्द को पेश करता है। उनको खुदा का कलाम माना जा सकता है या नहीं। मैं अब स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाषीय में से चन्द मंत्र यहाँ पर पेश करूँगा और ये दिखाऊँगा कि खुद स्वामी दयानन्द का उसूल या सिद्धान्त क्या है जो कि वह कुरआन पर नुकताचीनी करते हुए ज़ाहिर कर चुके हैं। और जिसकी चन्द मिसालें मैं ऊपर दर्ज कर चुका हूँ। और वेद क्या तालीम देता है आया वह तालीम स्वामी दयानन्द के खुद मुक़र्रर कर्दा मैयार

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

सिद्धान्त के मुताबिक़ खुदा की किताब की तालीम हो सकती है या कि महज़ इन्साननी दिमाग़ की इख़्तराअ है चुनांचे

धर्म के मुख़ालिफ़ों को ज़िन्दा आग में जला दो

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जिस किताब की ये तालीम हो कि जो तुम्हारे मज़हब को नहीं मानते उनको क़त्ल कर डालो ऐसी तालीम को कुऐं में डाल देना चाहिये। क्यों कि ऐसी किताब और इस किताब के खुदा को मानने में सिवायें नुक़सान के कुछ फायदा नहीं है। उनका न होना अच्छा है, ऐसी जाहिलाना मज़हबों से अक्लमंदों को अलेहदा रहकर वेदों के अहकाम को तसलीम करना चाहिये क्यों कि इनमें झूठ ज़रा भी नहीं है। ये स्वामी दयानन्द कापेश करदा मैअयार है। अब इसी मैअयार पर वेद के अहकाम को परखना चाहिये। वेद में लिखा है।

“ऐ राजपुरुष! आप धर्म के मुख़ालिफ़ दुश्मनों को आग में जला डालें ऐ जाह व जलाल वाले पुरुष वह जो हमारे दुश्मनों को हौसला देता है। आप इसको उल्टा लटकाकर खुश्क लकड़ी की तरह जलायें। (यजुर्वेद १३/१२)”

चूँकि वेद के मज़कूरा बाला हुक्म में धर्म के मुख़ालिफ़ों को ज़िन्दा आग में जला डालने की तालीम है इसलिये स्वामी दयानन्द के खुद पेशकरदा मैअयार के मुताबिक़ ये तालीम कुऐं में डालने के लायक़ है या मानने के लायक़? इस का फ़ैसला बड़ा आसान है और स्वामी दयानन्द के अपने ही अल्फ़ाज़ में ऐसी किताब और इस किताब के खुदा को मानने में सिवाये नुक़सान के कुछ फायदा नहीं है। क्योंकि बकौल स्वामी दयानन्द इनका न होना अच्छा है और कि ऐसी जाहिलाना तालीम से अक्लमंदों को अलेहदा रहना चाहिये चूँकि स्वामी दयानन्द का इरशад निहायत माकूल है। इसलिये मैं ऐसी किताब को बकौले स्वामी दयानन्द सरासर नुक़सानदेह समझता हूँ और मैं इसको किसी सूरत में खुदा की किताब तसलीम नहीं कर सकता। दीगर अक्लमंदों को भी बकौल स्वामी दयानन्द ऐसी जाहिलाना तालीम से अलेहदा रहना चाहिये।

दुश्मनों के गाँव को उजाड़ दो

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि ये सख़्त वेशर्मी की बात है कि एक तरफ़

गाज़ी महमूद धर्मपाल

तो लूट मचाई जाये, डाके मारे जायें और दूसरी तरफ ये भी कहा जाये कि ये खुदा की तालीम है। जिस मज़हब में ऐसी तालीम हो इसको तरक करके वेदों को न मानना सख्त बुरी बात है। स्वामी दयानन्द का मज़कूरा वाला मैअयार बहुत उमदा है। अब इसी मैअयार पर वेदों की तालीम को रखकर देखना चाहिये। वेद में लिखा है।

“ऐ तेजधारी विद्वान पुरुष! आप तेज़-रो दुश्मन के खाने पीने या दीगर काम काज के मकामात को अच्छी तरह उजाड़ें और इनको अपनी तमाम ताकत से मारें। (यजुर्वेद १३/१३)”

चूँकि मज़कूरा वाला वेद मंत्र में जिसका कि स्वामी दयानन्द ने खुद ही तर्जुमा किया। दुश्मनों के खेतों को उजाड़ने और उनके गाँव को लूटने का हुक्म है। इसलिये बकौल स्वामी दयानन्द ये सख्त शर्म की बात है कि ऐसी तालीम को खुदा की तरफ मनसूब किया जाये। मेरे नज़दीक स्वामी दयानन्द की बात ज़्यादा माकूल है। बानिस्वत इस हुक्म के जो कि वेद में खुदा की तरफ मनसूब किया जाता है। अगर मैं ऐसी तालीम को तर्क न करूँ तो ये बकौल स्वामी दयानन्द सख्त बुरी बात होगी। यही वजह है कि मैं वेद को खुदा का कलाम नहीं मानता और नहीं मान सकता और किसी भी हक़ पसन्द को इस किस्म की तालीम को खुदा की तरफ मनसूब करते हुए डरना चाहिये।

अपने मुख़ालिफ़ों को शेर के मुँह में डाल दो

स्वामी दयानन्द का सिद्धान्त है कि जिस तरह दूसरे लोग अगर तुम से दुश्मनी करें तो वह तुम को बुरे लगते हैं। इसी तरह अगर तुम उनसे दुश्मनी करोगे। तुम उनको बुरे लगोगे पस दुश्मनी की बिना पर दूसरों को कत्ल करना और अपने आप को दुश्मनी से बाज़ न रखना मूजी लोगों का काम है क्योंकि ये सख्त तरफ़दारी और खुदगर्ज़ी की बात है। स्वामी दयानन्द का सिद्धान्त बहुत उमदा है मगर वेद इसके बारे में क्या कहता है, लिखा है—

“जिस ईज़ारसाँ शख्स की हम लोग मुख़ालिफ़त करते हैं या जो ईज़ा देने वाला हम से दुश्मनी करता है इसको हम शेर वगैरह के मुँह में डाल दें। (यजुर्वेद १५/१५)”

मज़कूरा वाला वेद मंत्र में बकौल स्वामी दयानन्द इस बात की तालीम है कि अगर हम किसी से दुश्मनी करें तो वह शख्स शेर के मुँह में डाला जाये और अगर वह शख्स हम से दुश्मनी करे तो भी उसी को शेर के मुँह में

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

डाला जाये गोया दोनों सूरतों में इसी को मुलज़िम गरदाना गया है पस बकौल स्वामी दयानन्द आया ये सख्त मूजीपन है या नहीं। इस का फ़ैसला अक्लमंद खुद कर सकते हैं। इस में सख्त तरफ़दारी और खुदगर्ज़ी पायी जाती है क्योंकि अगर दुश्मनी की सज़ा शेर के मुँह में डालना ही है तो फिर हम को किसी से दुश्मनी करने की पादाश में शेर के मुँह में क्यों न डाला जाये पस बकौल स्वामी दयानन्द ये महज़ खुदगर्ज़ लोगों की तालीम है। खुदा का इसमें कोई दख़ल नहीं है। स्वामी दयानन्द का सिद्धान्त है कि जिस तरह तुम दूसरों को दुष्ट और काफ़िर कहते हैं उसी तरह वह तुमको दुष्ट और काफ़िर कहते हैं।

द्वेष करने वालों को हवा से हलाक करो

फिर क्या वजह है कि उनको तो कत्ल किया जाये और तुमको छोड़ दिया जाये जिस किताब में ऐसी तालीम हो। वह खुदा की किताब नहीं हो सकती। स्वामी दयानन्द के इस सिद्धान्त के मुताबिक़ वेद का दूसरा मंत्र लेकर देखा जाता है चुनांचे लिखा है।

“जिस दुष्ट से हम लोग द्वेष करें या जो दुष्ट हम से द्वेष करें हम उसको हवाओं से हलाक करें। (यजुर्वेद १५/१६)”

स्वामी दयानन्द के मज़कूरा वाला सिद्धान्त के मुताबिक़ वेद का ये मंत्र किसी सूरत में भी खुदा का कलाम नहीं हो सकता क्योंकि इसमें द्वेष करने वाले दोनों हैं मगर एक को तो हलाक करने की तालीम है और दूसरे को जो द्वेष करता है हलाक करने की कोई तालीम नहीं है। ये महज़ इन्सान की दिमाग़ की इख़्तराज़ है। पस बकौल स्वामी दयानन्द ये बात छोड़ने के काविल है।

राजा हमारे दुश्मन को शेर के मुँह में डाल दे

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जो लोग वेगुनाहो को मारते, ग़दर मचाते और दूसरों से दुश्मनी करते हैं वह सख्त मूजी हैं और ये कि जिस किताब में इस किस्म की तालीम हो वह किताब अब जाहिलों की किताब समझनी चाहिये। स्वामी दयानन्द का इरशाद बहुत माकूल है मगर वेद में लिखा है —

“हम लोग जिससे दुश्मनी करें और जो हम से दुश्मनी करे इसको हम शेर वगैरह के मुँह में डाल दें। राजा भी इसको शेर के मुँह में डाल दे। (यजुर्वेद १७/१५)”

गाज़ी महमूद धर्मपाल

ये स्वामी दयानन्द का वेद मंत्र का खुद कर्दा तर्जुमा है। इसमें इन लोगों को जो गो हम से दुश्मनी वगैरह रखते हों मगर चूँकि हम इन से दुश्मनी रखते हैं इसलिये इनको शेर के मुँह में डाल देना चाहिये और अगर हम खुद ऐसा न कर सकें। तो राजा की मदद से इसको शेर के पिंजरे में डाल देना चाहिये ख्वाह वह भला मानस कितना ही चिल्लाये कि महाराज मैं आप का दुश्मन नहीं हूँ वेशक वह हमारा दुश्मन नहीं है लेकिन हम तो उसके दुश्मन हैं इसलिये इसकी सज़ा मौत है कैसा आला इनसाफ़ है। इसी किताब को खुदा का कलाम मानना बक़ौल स्वामी दयानन्द सख़्त जिहालत है।

अपने मुख़ालिफ़ों को पानी में गर्क कर दो

अगर खुदा नख़्वास्ता हम किसी ऐसी जगह रहते हों जहाँ अपने दुश्मनों को हम शेर के मुँह में न डाल सकें या शेर हम को वहाँ न मिले तो हम अपने दुश्मनों से क्या सुलूक करें इसका हल वेद में लिखा है—

“जिससे हम द्वेष करते हैं या जो हम से द्वेष करता है इसको हम हवा और पानी के दुख देने वाले गन रूपी मुँह में डाल दें। (यजुर्वेद १८/१५)”

या दूसरे अल्फ़ाज़ में हम को चाहिये कि अपने दुश्मनों को जहाज़ में भरकर समन्दर में गर्क कर दें या कुएँ, तालाब और दरिया में डुबों दें अलग़रज़ इनको इस दुनिया से ख़ुशत ज़ख़र कर देना चाहिये क्योंकि वेद की यही तालीम है।

अपने दुश्मनों को दरिन्दों से चरवा दो

मगर जो वेदों को खुदा का कलाम मानने वाले हैं उनकी तमाम कोशिश यही होनी चाहिये कि वह अपने दुश्मनों को दरिन्दों के मुँह में डाल दें, चुनांचे लिखा है—

“हम लोग जिस दुष्ट से द्वेष करें या जो हम से द्वेष करे उसको हम लोग खूँख़ार जानवरों के मुँह में डाल दें। (यजुर्वेद १६/१५)”

इससे मालूम होता है कि वेदों के ऐसे ऐसे मंत्र इस वहशी ज़माने की याद हैं जबकि इन्सानों को दरिन्दों से चरवा डाला जाता था चुनांचे रोमियों के ज़माने में गुलामों को शेरों के आगे डाल कर फड़वा डाला जाता था अगर गुलाम लोग अपने आकाओं के बदख़्वाह नहीं होते थे मगर चूँकि आका इनको नापसन्द करते थे।

इसलिये वेद मंत्र के ऐन मुताबिक़ वह गुलामों को दरिन्दों से मरवा डालते

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

थे। अंडरविकलीज़ नामी गुलाम की इसी किस्म की कहानी बहुत से लोगों ने सुनी होगी।

दुश्मनों को तड़पा तड़पा कर मारो

वेद के मंत्र जिस किस्म के ज़माने की याद दिलाते हैं उसको सामने लाकर वदन पर रौंगटे खड़े हो जाते हैं।

स्वामी दयानन्द ने हर चन्द इस बात को साबित करने की कोशिश की है कि वेद वहशी लोगों के गीत नहीं हैं मगर खुद उनके वेद भाषीय से जाबजा इस बात का पता लगता है कि वे दरहकीक़त इस वहशी ज़माने की मुक़द्दस यादगार है जबकि गुलामों, महकूमों, या दुश्मनों को अनवाअ व अक़साम की अज़ियतों से हलाक़ किया जाता था और हलाक़ करने वाले, इसमें ख़ास लज़ज़त पाते थे। चुनांचे स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय में लिखा है “जिनसे हम लोग नफ़रत करते हैं या जिन को हम नाराज़ करते हैं या जो हम को दुख़ देते हैं उनको हम इन हवाओं के मुँह में डाल कर इस तरह दुख़ दें जिस तरह बिल्ली के मुँह में चूहा। (यजुर्वेद ६५-६६)”

इससे मालूम होता है कि जिन लोगों को पुरोहित लोग नापसन्द करते थे या जिन से वह नाराज़ हो जाते थे उनको वह हवा में मुअल्लक़ लटकाकर इस तरह तड़पा तड़पा कर मारा करते थे जिस तरह बिल्ली चूहे को मारती है चुनांचे तीन मंत्रों में मुतवातिर इस बात का ज़िक़्र आया है कि जिन लोगों से तुम नफ़रत करते हो या जिन लोगों से तुम नाराज़ हो या जो लोग तुम्हारी तकलीफ़ का मौजब हैं, उनको इस तरह तड़पा तड़पा कर मार दो जिस तरह बिल्ली चूहे को मारती है अगरचे पीछे लिखा जा चुका है कि वेद में उनको उल्टा करके ज़िन्दा आग में जला डालने की सज़ा भी तजवीज़ की गयी है। मगर चूहे की तरह तड़पा तड़पा कर मारना बेरहमी और संग दिली की इन्तहा है। जिस किताब में इस किस्म की तालीम हो वह किताब बक़ौल स्वामी दयानन्द इन्सान की रूह को मिस्ल हैवान के बनाने के, अमन में ख़लल डालने, फ़सादे मचाने, इन्सानों में ना इत्तफ़ाकी फैलाने, उनकी तकलीफ़ को बढ़ाने वाली साबित होती है और बक़ौल स्वामी दयानन्द ऐसी किताब न खुदा की बनाई हो सकती है न किसी आलिम की।

गाज़ी महमूद धर्मपाल

दुश्मनों के गाँव को जला दो

दुश्मनों के साथ जिस बेरहमी का सुलूक करने की वेद में तालीम दी गयी है वह अपनी नज़ीर आप ही है। इसके अलावा दुश्मनों के गाँव को जलाकर खाक सियाह कर देने की वेद में जा बजा तालीम दी गयी है चुनांचे खुद स्वामी दयानन्द एक मंत्र का बर्दी अल्फ़ाज़ तर्जुमा करता है।

“ऐ ताक़तवर और रोशन ज़मीरे आलम इन्सान! जिस तहर हम लोग रोज़ खुले स्वभाव वालों के गाँव को आग की मानिन्द मारने वाले तुझ ख़ूबसूरत विद्वान को सब तरह से धारण करें, उसी तरह तू हम को धारण कर। (यजुर्वेद २६-११)”

ऐ राजा! जिस तरह हिफ़ाज़त करने वाले आलिम को पुत्र शागिर्द सुख देने वाले.....आग वगैरह पदार्थों को हासिल करके वेदों के इल्म को जानने वाला होकर दुश्मनों को मारने वाला और दुश्मनों के गाँव को तबाह करके आप की जाह व हशमत को दो वाला करता है उसी तरह दीगर विद्वान लोग भी आपको विद्या और रोने से तरक्की दें। (यजुर्वेद ३३-११)

मज़क़ूरा वाला वेद मंत्रों से साफ़ ज़ाहिर है कि किस तरह दुश्मनों के गाँव को आग लगाने और उनको तबाह करने के काम को “रोशन ज़मीर इन्सानों” और “वेदों के आलिमों” का फ़र्ज़ मनसवी करार दिया गया है। स्वामी दयानन्द ने कुरआन और बाइबिल पर नुक़ता चीनी करते हुए जाबजा अपने उसूल का बर्दी अल्फ़ाज़ इज़हार किया है कि जिस किताब में इस किस्म की तालीम हो। वह आलिमों की किताब नहीं हो सकती बल्कि इसको वहशियों की किताब कहना चाहिये। स्वामी दयानन्द की इस कसौटी पर परखने से इस बात का अफ़सोस से इक़रार करना पड़ता है कि वेद भी आलिमों की किताब साबित नहीं होते। उसको खुदा का कलाम मानना तो महज़ कुफ़्र है।

औरतों को क़त्ले आम करने का हुक्म

स्वामी दयानन्द ने कुरआन पर नुक़ता चीनी करते हुए ऐतराज़ नम्बर १४० में अपने ख़्यालात को बर्दी अल्फ़ाज़ ज़ाहिर किया है कि जो किताब या खुदा इस किस्म की तालीम देते हों कि विला वजह ग़दर मचाओ, बैठे बिठाये लोगों को ख़्वाह मख़्वाह तकलीफ़ दो और अपने मतलब की ख़ातिर दूसरों की गर्दन काटो वह किताब न तो खुदा की किताब हो सकती है और न ऐसा खुदा

मानने के लायक़ है। कुरआन में इस किस्म की तालीम है या नहीं। इस बात का जवाब कुरआन वाले दें। लेकिन इस में शक़ नहीं कि स्वामी दयानन्द का मैअयार बहुत दुरुस्त है। देखना चाहिये कि स्वामी दयानन्द वेदों से कैसी तालीम निकालते हैं पहले दिखाया जा चुका है कि वेदों की तालीम के मुताबिक़ दुश्मनों से किस किस्म का सुलूक किया जाना चाहिये। वह तो मर्दों की बाबत था। अब औरतों की बाबत भी देखो चुनांचे लिखा है।

“ऐ सिपेहसालार की स्त्री! तू मैदाने जंग की ख़्वाहिश करती हुई दूर देश में जाकर दुश्मनों से लड़ाई कर और उनको मार कर फ़तह हासिल कर तू। उन दूर दराज़ के मुल्कों में रहने वाले दुश्मनों में से एक को भी मारने के बग़ैर मत छोड़।” (यजुर्वेद ४५-१७)

स्वामी दयानन्द के मैअयार के मुताबिक़ मज़क़ूरा वाला वेद मंत्र न तो खुदा का हुक्म हो सकता है न खुदा की किताब का क्योंकि इसमें अपने मुल्क से दूर बैठे हुए लोगों को ख़्वाह मख़्वाह तंग करने उन पर जाकर छापा मारने और उनका क़त्ले आम करने की तालीम है। वह भी मर्दों के हाथ से नहीं बल्कि औरतों के हाथ से, जिस सूरत में कि वेदों के ज़माने में औरतें अपने दुश्मनों का क़त्ले आम करती हों, इस सूरत में मर्द जिस क़द्र उनकी गर्दन काटते हों उसी क़द्र थोड़ा है। इससे मालूम होता है कि वेदों में बअज़ मंत्र ऐसी ख़ौफ़नाक और ख़तरनाक स्पिरिट अपने अन्दर रखते हैं जो कि इस वहशी ज़माने की याद है जबकि वेदों के मंत्र घड़े ये कहना कि ऐसे मंत्रों का प्रकाश खुदा ने खुद ही शुरू आगाज़े दुनिया में किया था बिल्कुल जिहालत और बकौल स्वामी दयानन्द खुदा की ज़ात पाक पर एक बदनुमा धब्बा है।

बदकिरदारों की गर्दन काटो

स्वामी दयानन्द ने ज़ाहिर किया है कि जो किताब ये तालीम देती हो कि बदकिरदारों या काफ़िरों की गर्दन का उनकी बेख़कनी करो और इस काम में उनका खुदा उनकी मदद करता हो। न तो वह किताब खुदा की हो सकती है न ऐसा खुदा खुदा हो सकता है। बल्कि ये सब इस किताब के मुसन्निफ़ का फ़रेब समझना चाहिये। स्वामी दयानन्द का ये उसूल बहुत अच्छा है। मगर देखना चाहिये कि आया वेद इस उसूल के मुताबिक़ खुदा की किताब साबित हो सकता है, या नहीं चुनांचे लिखा है।

“ऐ इन्सान जिस तरह मैं बदकिरदारों की गर्दन काटता हूँ वैसे तू भी

काट।” (यजुर्वेद २२-५)

स्वामी दयानन्द के खुद साख़्ता मैअयार के मुताबिक़ जिस वेद में इस किस्म की तालीम हो कि जिसको वेदों के मानने वाले बदकिरदार होने का फ़तवा दे दें। उसकी ही गर्दन काट दी जाये ख़्वाह वह दरअसल बदकिरदार न भी हो। वह किताब किसी सूरत में भी खुदा की किताब नहीं हो सकती और दूसरे अगर ये मान भी लिया जाये कि कोई बदकिरदार है तो क्या उसकी बदकिरदारी का इलाज उसकी गर्दन काटना ही हो सकता है हरगिज़ नहीं कोई डाक्टर ये नहीं कहेगा कि बीमारी का आसान इलाज बीमार की गर्दन काटना है। अगर खुदा को ये मन्ज़ूर है कि इन्सान रूहानी अमराज़ से शिफ़ा पायें तो उन अमराज़ का इलाज होना चाहिये न कि मरीज़ों की ही गर्दन काट देनी चाहिये। पस बकौल स्वामी दयानन्द वेद खुदा की किताब नहीं है। बल्कि ये महज़ चन्द इन्सानों के ख़्यालात के इज़हार का मजमूआ है। इन ख़्यालात में से बअज़ अच्छे हैं और बअज़ सख़्त वहशतनाक और फ़ासिद हैं।

मुख़ालिफ़ों को हब्स दवामी की सज़ा

ऐसे लोगों को जो हमारी किसी नाजायज़ हरकत से हम से नाराज़ हो जाते हों क्या सज़ा मिलनी चाहिये इसके मुतअल्लिक़ वेद में लिखा है-

“जो दुष्ट हम लोगों से मुख़ालिफ़ करता है या जिस दुष्ट से हम लोग मुख़ालिफ़ करते हैं तुम इस बदकिरदार दुश्मन को मुख़्तलिफ़ ज़ंजीरों से जकड़ो और उसको उन ज़ंजीरों से कभी मत छोड़ो। (यजुर्वेद १५-२६/१)”

गोया इसको हमेशा के लिये कैद में मरने दिया जाये ख़्वाह वह हम से दुश्मनी न भी करता हो और हमारा बड़ा ख़ैरख़्वाह हो। मगर चूँकि हम इससे दुश्मनी करते हैं इसलिये इसको कैद कर दो ये महज़ इन्साफ़ का ख़ून करना है।

दुष्टों के साथ कैद में सुलूक

और फिर ऐसे कैदियों के साथ कैदख़ाने की कोठरी में क्या सुलूक करना चाहिये इसका ज़िक्र वर्दी अल्फ़ाज़ में किया गया है।

“ऐ दुष्ट इन्सान तू कभी भी हिदायत की रोशनी हासिल न कर सके तेरा आनन्द देने वाला इल्म का रस तुझे कभी भी आनन्द न दे।” (यजुर्वेद २६-१)

मौजूदा गवर्नमेन्ट का कायदा है कि वह कैदियों की तालीम व तरबीयत का भी इन्तज़ाम करती हैं और उनको सुधारने की कोशिश करती हैं मगर वेद कहता है कि ऐसे कैदियों को जिनको हम ने इसलिये उम्र कैद की सज़ा दी है क्योंकि हम उनसे नाराज़ हो गये हैं कभी भी हिदायत की रोशनी नसीब न हो और वह हमेशा इल्म से महसूस रहें बल्कि अपना पहला लिखा पढ़ा भी भूल जायें ऐसी ख़ौफ़नाक तालीम को बकौल स्वामी दयानन्द खुदा की तरफ़ मनसूब करना सख़्त जिहालत है।

जायज़ व नाजायज़ तरीकों से मुख़ालिफ़ों को हलाक़ करो

अपने मुख़ालिफ़ों को हलाक़ करने में जायज़ व नाजायज़ वसाईल की मुतलक़ परवाह नहीं करनी चाहिये चुनांचे लिखा है-

“ऐ इन्सान.....जिस तरह भी दुश्मनों को हलाक़ किया जा सके उसी किस्म के कामों को करके सदा ही राहत से ज़िन्दगी बसर करो।” (यजुर्वेद २५/१)

इससे मालूम होता है कि दुश्मनों को हलाक़ करने के लिये ख़्वाह तुम को नापाक से नापाक शर्मनाक से शर्मनाक काम भी करना पड़े तो भी कर डालो। धर्म अधर्म की मुतलक़ परवाह न करो ऐसी तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब करना सख़्त जुल्म है बल्कि बकौल स्वामी दयानन्द इस किस्म की बातें मुसन्निफ़ों के अपने ही फ़ासिद ख़्यालात होते हैं, खुदा को इनसे क्या तअल्लुक़।

दुश्मनों की हलाक़त के लिये प्रार्थना

स्वामी दयानन्द के नज़दीक़ दुश्मनों की हलाक़त के लिये परमात्मा से प्रार्थना करना जिहालत की बात है, जैसा कि पहले दिख़ाया जा चुका है, लेकिन वेदों में जाबजा ऐसे मंत्र आते हैं जिनमें सिर्फ़ परमात्मा से दुश्मनों की हलाक़त के लिये प्रार्थना की गयी है बल्कि खुद परमात्मा ने वशर्तेकि वेदों को इसका कलाम कहा जाये, ऐसे मंत्रों को प्रकाश किया है मसलन्

(१) “हे परमात्मन! मैं बदकिरदार या दुश्मनों की हलाक़त के लिये... आप को अपने दिल में कायम करता हूँ।” (यजुर्वेद १/१७)

(२) “हे परमेश्वर! मैं दुश्मनों की हलाक़त के लिये ... आपको अपने दिल में कायम करता हूँ। ऐ सबको धारण करने वाले परमेश्वर... मैं दुश्मनों की हलाक़त के लिये आपको ... बार बार अपने दिल में कायम करता

हूँ।” (यजुर्वेद १/१८)

रवामी दयानन्द के मैअयार के मुताबिक वेदों के इस किस्म के मंतर जिन में कि परमात्मा से दुश्मनों की हलाकत के लिये प्रार्थन की गयी है, महज जिहालत की अलामत है जिस किताब में इस किस्म की बातें हों, इसको बकौल स्वामी दयानन्द खुदा का कलाम मानना सख्त जिहालत है, पस वेद कलामे इलाही नहीं।

अपने दुश्मनों की बेखकीनी करो

वेद में तमाम इन्सानों के कल्ल की तालीम है जो वेदों के मैअयार के मुताबिक बदकिरदार, बद अतवार, खुर्दगर्ज, जालिम, दान पुण्य न करने वाले हैं मसलन् -

“मुझ को चाहिये कि कोशिश करके बदकिरदार और बदअतवार इन्सान की यकीनन् बेखकीनी करूँ और जो दान पुण्य व धर्म से खाली, जालिम, बदकिरदार, दुश्मन हैं उनकी सरीहन् बेखकीनी करूँ।” (यजुर्वेद १/७)

इस मंतर से हर एक शख्स जो वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों के किसी इंस्टीट्यूशन को दान नहीं देता, या वह उनकी मुख़ालफ़त करता है वह जालिम, बदकिरदार और वेदों का दुश्मन है। मज़कूरा वाला सज़ा का मुस्तहिक हो सकता है, ऐसे मंतरों को खुदा की तरफ़ मनसूब करना जो हर एक नेक व बद को रोज़ी देता और उनकी परवरिश करता है, सख्त गुनाह है। बकौल स्वामी दयानन्द ऐसी किताब न खुदा की हो सकती है न किसी आलिम और नेक शख्स की।

निहायत ही नामाकूल और कमीनेपन की दुआ

यूँ तो वेद के जिस क़द्र मंतर ऊपर दर्ज किये गये हैं उनमें से एक से एक ख़तरनाक तालीम का मज़हर है। लेकिन बअज़ मंतरों में परमात्मा से और राजा से सख्त नामाकूल और कमीनगी से भरी हुई प्रार्थना की गयी है मसलन्-

“हे परमात्मन् आप की कृपा से हम लोगों के पानी और अनाज वगैरह नवातात सरीशत मित्र (दोस्त) की मानिन्द हों और जो हम लोगों से दुश्मनी रखता है या जिससे हम लोग दुश्मनी करते हैं उसके लिये जल और अनाज वगैरह सबके सब दुख देने वाले दुश्मन की मानिन्द हों। (यजुर्वेद २२/६)

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

स्वामी दयानन्द ने इस किस्म की प्रार्थनाओं को सत्यार्थ प्रकाश में महज जिहालत की प्रार्थनायें लिखा है क्योंकि ये साफ़ ज़ाहिर है कि हमारे कहने से परमात्मा हमारे दुश्मनों पर अनाज और पानी का दरवाज़ा कभी बन्द नहीं कर सकता और फिर ये किस क़द्र कमीनेपन की दुआ है कि हम परमात्मा से ये दुआ करें कि अनाज पानी और हवा हमारे लिये तो आराम देने का मूजिब हों लेकिन जिन लोगों से हम दुश्मनी करते हैं ख़्वाह वह लोग हम से दुश्मनी न भी करते हों या जो लोग हम से हमारी किसी नाजायज़ हरकत पर दुश्मनी करते हों उनके लिये अनाज पानी और हवा ज़ेहरीली हो जायें और वह उनको खाने पीने के साथ ही मर जायें। इस मुल्क में बअज़ कम्बख़्त जाहिल औरतों की आदत है कि जब वह आपस में लड़ पड़ा करती हैं तो वह एक दूसरे के दूध पूत की तवाही के लिये बददुआ करती हैं। दुश्मनी के बारे में ये प्रार्थना करना उनके लिये हवा, पानी और अनाज को परमात्मा ज़ेहरीला कर दे, इसी किस्म की कमीनेपन की प्रार्थना है जो कि जाहिल के मज़कूरा वाला फ़अल से भी बदतर है। क्या वह परमात्मा जिसने हर एक नेक व बद के लिये अनाज पानी हवा और सूरज और ज़मीन को यकसाँ पैदा किया है वह ऐसा कमीना हो सकता है कि वह इन्सानों को इस किस्म का इलहाम दे कि तुम मुझसे दुआ करो कि मैं तुम्हारे दुश्मनों के लिये पानी, हवा अनाज को ज़ेहरीला कर दूँ। हालाँकि वह उन लोगों को भी हवा और पानी वगैरह देता है जो कि परमात्मा को गालियाँ देते हैं और वह उनकी भी परवरिश करता है जो परमात्मा की हस्ती से मुनकिर हैं और वह ज़ेहरीले साँपों और ख़तरनाक दरिन्दों को भी ये चीज़ें देता है। फिर ये क्योंकर तसलीम किया जाये कि वह इन्सानों को मज़कूरा वाला किस्म की सख्त नामाकूल और कमीनेपन की प्रार्थनायें करने का उपदेश कर सकता है। यकीनन् वह इस किस्म की कमीनगी का सबूत दे सकता, जब स्वामी दयानन्द जैसा माकूल शख्स भी इस किस्म की दुआओं को जिहालत बताता है तो क्या परमात्मा स्वामी दयानन्द से भी माकूल नहीं है कि वह इस किस्म की प्रार्थना करने के लिये इन्सानों को उपदेश न करे पस इस किस्म के मंतरों को खुदा की ज़ात पाक की तरफ़ मनसूब करना, खुदा पर ख़तरनाक नामाकूल और कमीनेपन का इलज़ाम लगाना है। अलग़रज़ वेदों में अपने धर्म के मुख़ालिफ़ों या दुश्मनों की बेखकीनी करने उनकी गर्दन काटने, उनको ज़िन्दा आग में जलाने,

गाज़ी महमूद धर्मपाल

समन्दर में गर्क करने, दरख्तों से लटकाकर मारने, शेरों और भेड़ियों और दीगर ख़तरनाक दरिन्दों के मुँह में डालने और उनको अनवाअ व अक़राम के अज़ाबों से मारने के बारे में सैकड़ों मंत्र दर्ज हैं मज़क़ूर वाला चन्द मंत्र नमूने के तौर पर सिर्फ़ यजुर्वेद में से पेश किये गये हैं। उन मंत्रों का तर्जुमा वही किया गया है जो कि स्वामी दयानन्द ने किया है। जब मैं इन मंत्रों का मुतालेआ करता हूँ तो मेरी रूह काँप जाती है कि मैं वेद को खुदा का कलाम मानूँ चुनांचे मैं इसको खुदा का कलाम मानना सख़्त कुफ़्र और गुनाह समझता हूँ और मेरा ये ख़्याल है कि कोई भी दयानतदार शख्स वेदों की ऐसी तालीम को देखकर उनको खुदा का कलाम तसलीम नहीं करेगा। ये तालीम हमें इस वक़्त चन्दों नुक़सानदेह मालूम न हो, इसलिये कि इस पर अमल करने के लिये हमारे हाथ में पोलिटिकल या हुकूमत की ताक़त नहीं है। लेकिन ऐसी तालीम के ख़ौफ़नाक नताईज़ का इस वक़्त पता लग सकता है जबकि ये तालीम एक ऐसी कौम के हाथ में आ जाती है जो कि बरसरे हुकूमत हो और वह अपने दुश्मनों या मज़हब के मुख़ालिफ़ों की सज़ा दही के लिये आख़री फ़तवे वेदों से माँगती हो। इस सूरत में वेद अपने दुश्मनों के साथी इसी सुलूक का फ़तवा देगा। जिसका कि ऊपर ज़िक्र किया गया है चूँकि इस फ़तवे को अमली जामा पहनाने वाले पुरोहित होते हैं पस पुरोहित अपनी मर्ज़ी या हाकिम की मर्ज़ी या अपने दिली ज़ुबात या इन्तक़ाम की सेरी के लिये हस्वे मौक़ा वेद में से अपने मुख़ालिफ़ों की हलाक़त का फ़तवा निकाल देगा। इस तरह इलहामी किताब वक़ील मिस्टर ह्यूम पुरोहितों के हाथ में इन्सानों की रूहों पर जोर व जुल्म करने का एक हथियार बना रहा है और बना रह सकता है चूँकि हिन्दुस्तान में हुकूमत करने वाली पार्टी की मुशीरेकार हमेशा पुरोहित क्लास रही है। इसलिये पुरोहित क्लास ने हाकिमों के हाथ से उनही वेदों की तालीम की आड़ में अपने मुख़ालिफ़ों या दुश्मनों के साथ जिस वेददी और संगदिली का सुलूक किया है वक़ील मिस्टर ह्यूम तारीख़ के औराक़ इसकी याद में ख़ून से रंगे हुए हैं। ऐसे हालात में हर एक दयानतदार शख्स को मिस्टर ह्यूम के मुफ़स्सला ज़ैल सख़्त मगर दुरुस्त अल्फ़ाज़ के साथ बिल्कुल इत्तफ़ाक़ करने के लिये मजबूर होना पड़ता है।

“ख़्वाह स्वामी दयानन्द इससे दस गुनाह आलिम और नेक दिल भी होता जितना कि वह दरहकीक़त है ख़्वाह उसके इरादे

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

इससे सौ गुना नेक आला और वे गर्ज़ा न होते जितने कि वह हैं फिर भी ये हर एक शख्स का ख़्वाह वह कितना ही अदना और कम इल्म हो मगर उसने तारीख़ की शहादत से इस निहायत ही ख़तरनाक अक़ीदे के सख़्त ख़तरनाक नताईज़ से आगाही हासिल कर ली हो फ़र्ज़ होना चाहिये कि वह कम से कम इस पहलू में स्वामी दयानन्द की बहादुराना मुख़ालफ़त करे जबकि वह इस अक़ीदे को (कि वेद खुदा का कलाम है) बतौर एक सनद के हम से मनवाने की कोशिश करता है और इसको साफ़ अल्फ़ाज़ में बताया जाये कि अगरचे वह दीगर मामलात में एक देवता कहा जा सकता है। मगर इस अक़ीदे में उसकी पोज़िशन एक ऐसे ग़द्दार की पोज़िशन है जो कि इन्सानी बेहबूदी और सदाक़त के हक़ में ख़तरनाक ग़द्दारी कर रहा हो।” (थ्योसोफ़िस्ट मार्च १८६३ ई०)

एक ज़रूरी सवाल

अब यहाँ पर ये ज़रूरी सवाल पैदा होता है स्वामी दयानन्द ने किस किताब को इलहामी के दर्जे से साक़ित करने के लिये जो मैअयार कायम किया है और जिस मैअयार की बिना पर जैसा कि पीछे बयान किया जा चुका है वह अहले इस्लाम की मज़हबी किताब को खुदा की किताब होने के दर्जे से साक़ित कर चुके हैं विला लिहाज़ इसके कि उन्होंने इसके मतलब को समझाया नहीं। अब जबकि इसी मैअयार पर वेदों की तालीम को खुद स्वामी दयानन्द के ही अल्फ़ाज़ में रखकर परखा जाता है तो वेद सिर्फ़ यही नहीं कि खुदा की किताब साबित नहीं होने बल्कि वह एक बदतरीन किताब साबित होते हैं। तो फिर क्या वजह है कि स्वामी दयानन्द ने उनको खुदा का कलाम तसलीम किया। ये एक ऐसा गहरा और पेचीदा सवाल है कि जिसका जवाब स्वामी दयानन्द के नोशतों के सिवाये दूसरी जगह मिलना मुश्किल है जब स्वामी दयानन्द के नोशतों को खोला जाता है तो हमें पता लगता है कि स्वामी दयानन्द, दयानतदारी का इस क़द्र मोअतकिद नहीं था। जिस क़द्र कि वह दुश्मन को नीचा दिखाने का तरफ़दार था। वह मिस्टर हरबर्ट स्पेन्सर के अल्फ़ाज़ में हक़ व हक़क़ानियत की फ़तह का ज़्यादा ख़्वाहिशमंद था चुनांचे सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इसके अल्फ़ाज़ मुफ़स्सला ज़ैल हैं।

गाज़ी महमूद धर्मपाल

“अब इसमें गौर करना चाहिये कि अगर जीव ब्रह्म की एकता और दुनिया का झूठा होना शंकराचार्य का ज्ञाती ऐतकाद था तो वह उमदा ऐतकाद नहीं और अगर जैनियों की तरदीद के लिये इस ऐतकाद को इख्तियार किया हो तो कुछ अच्छा है।”
(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११)

स्वामी दयानन्द की मज़कूरा वाला तहरीर से साफ़ साबित होता है कि अगर मुख़ालिफ़ को नीचा दिखाने के लिये एक ग़लत ऐतकाद को दुरुस्त भी मान लिया जाये तो ये कोई गुनाह नहीं है। वह अपने इस उसूल के मुताबिक़ न सिर्फ़ स्वामी शंकराचार्य को ही रियाकार साबित करता है बल्कि वह खुद भी रियाकारी को कोई अख़्लाकी गुनाह नहीं मानता और मैं एक वेद मंत्र के ज़रिये पीछे दिखा आया हूँ कि खुद वेद ने इस बात की तालीम दी है कि मुख़ालिफ़ को नीचा दिखाने के लिये तमाम जायज़ और नाजायज़ वसाईल से काम लेना चाहिये। ऐसे वेद मंत्र की मौजूदगी में मुख़ालिफ़ों को सरनगूँ करने की ख़ातिर अगर स्वामी दयानन्द रियाकारी को कोई अख़्लाकी गुनाह नहीं समझता तो इसके ज़मीर को कोई तंगी महसूस नहीं हो सकती जबकि वह ये ऐतकाद रखता है कि जिस खुदा को वह मानता है या जिस खुदा की तरफ़ वह वेद को मनसूब करता है खुद वह खुदा भी इन्सानों को रियाकारी की इजाज़त देता है लेकिन जो शख्स इस किस्म के अख़्लाकी तनज़ुल की तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब करता या जो दयानतदारी को रियाकारी पर तरजीह देता है वह ये मुनासिब समझेगा कि वेदों को इन्सानों की बनायी हुई किताब तसलीम करे बनिस्बत इसके कि वह महज़ मुख़ालिफ़ों को नीचा दिखाने के लिए उनको खुदा का कलाम मानकर रियाकारी का जामा ओढ़े। यहाँ पर सवाल किया जायेगा कि स्वामी शंकराचार्य ने तो बुद्धों को नीचा दिखाना था जो खुदा की हस्ती के कायल नहीं थे। या वेदों से मुनकिर थे लेकिन स्वामी दयानन्द ने किन लोगों को नीचा दिखाने के लिये दयानतदारी के हथियार को हाथ से फेंक कर वेदों को खुदा का कलाम माना इसका जवाब बड़ा आसान है जबकि ये देखा जाता है कि स्वामी दयानन्द के सामने मुसलमानों ने एक ऐसी किताब को पेश किया जिसको कि वह खुदा का कलाम तसलीम करते थे। स्वामी दयानन्द ने इस किताब को खुदा का कलाम तसलीम करने से इनकार कर दिया और एक किताब की बजाये चार किताबें खुदा की तरफ़

मनसूब करके मुसलमानों की बात का जवाब दे दिया। इसी तरह जब मसीही लोगों ने बाईबिल के बअज़ नोशतों को पाँच हज़ार साल का पुराना बताया तो स्वामी दयानन्द ने उनकी तरदीद का आसान तरीका ये समझा कि उसने उनके मुकाबले में वेदों को एक अरब कई करोड़ बरस का पुराना बता दिया इस तरह इसने पंजाबी की ज़रबुल मिस्ल जाट के सर पर खाट और तेली के सर पर कोल्हू रखने का अमल किया वरना अग्रे वाकिआ तो ये है कि किसी किताब को इलहामी होने के दर्जे से साकित करने के लिए स्वामी दयानन्द ने जो मैअयार मुकर्रर किया है और जो ऊपर दिखाया जा चुका है। इसी मैअयार पर परखने से वेद एक बदतरनी किताब साबित होती है। क्योंकि इसमें अपने दुश्मनों के साथ महज़ इस बिना पर कि हम इनको अपना दुश्मन समझते हैं ऐसे ज़ालिमाना सुलूक की तालीम दी गयी है जिसका कि इस किताब में जिसको कि स्वामी दयानन्द वहशियों की किताब करार देता है। नाम व निशान भी नहीं मिलता ये तालीम कि इन लोगों से जो तुम को तंग करते हैं या तुम पर जुल्म करते हैं या तुम्हारे अयाल व अतफ़ाल को अनवाअ व अक़साम की तकालीफ़ पहुँचाते हैं। तुम उनको मुकाबले में अपने आप को डिफेन्ड करो। इस क़द्र ख़ौफ़नाक नहीं है, जिस क़द्र कि ये तालीम ख़तरनाक है कि तुम लोगों को ज़िन्दा आग में जला दो। समन्दर में गर्क कर दो। शेर के मुँह में डाल दो, दरिन्दों से चरवा दो, जो ख़्वाह तुम से किसी किस्म की दुश्मनी या अनाद न रखते हों तुम उनसे नाख़ुश हो, या उनको बुरा समझते हो, या उनसे दुश्मनी रखते हो, ये ऐसी तालीम है खुदा का ज़ाबता तो एक तरफ़ दुनिया के मुरव्वजा क़वानीन के मुताबिक़ भी काबिले तारीफ़ नहीं कही जा सकती क्योंकि जहाँ मुरव्वजा क़वानीन गवर्नमेन्ट सेल्फ़ डिफेन्स को बअज़ हालात में जुर्म करार नहीं देते वहाँ वह ऑफेन्सो पोलीसी को मतऊन गरदाते हैं। ये ताज़ुब की बात है कि स्वामी दयानन्द सेल्फ़ डिफेन्स की तालीम को तो वहशियों की तालीम बताता है। लेकिन वह ऑफेन्सो पोलीसी की तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब करता है हालाँकि कोई दयानतदार शख्स अपनी आँख के शहतीर को तिनका और दूसरे की आँख के तिनके को शहतीर ज़ाहिर नहीं करेगा। बल्कि इसकी दयानतदारी का तकाज़ा ये होगा कि तिनका ख़्वाह मुख़ालिफ़ की आँख में हो ख़्वाह इसकी अपनी आँख में हो वह इसको तिनका ही कहे और हत्ताउल

मकदूर उसको निकालने की कोशिश करे। मगर जैसा कि ऊपर दिखाया जा चुका है कि स्वामी दयानन्द ने अपने मुखालिफों की किताबों के तिनके को शहतीर और वेदों के शहतीरों को तिनके बल्कि सुर्मे के खूबसूरत डोरे ज़ाहिर किया है। इसकी वजह सिवाये इसके कुछ नहीं हो सकती है कि वह मुहक्किक की पोज़िशन में मिस्टर हरवर्ट स्पेन्सर के अल्फ़ाज़ में मुल्की, कौमी, नसली और पैदाइशी तअस्सुवात से आज़ाद नहीं था। चुनांचे इनकी तहरीर से जाबजा इस बात का पता लगता है मसलन् वह ब्रह्मो समाजियों का खंडन करते हुए लिखते हैं -

(१) वेद विद्या से वे बहरा लोगों के ख़्यालात बिल्कुल सच्चे क्योंकिर हो सकते हैं...

उन लोगों में अपने मुल्क की हमदर्दी बहुत कम है, उन्होंने ईसाइयों के चलन बहुत से इख़्तियार किये हैं।

(२) अपने मुल्क की तारीफ़ या बुजुर्गों की बड़ाई करनी तो दूर रही इसके अवज़ में पेट भरकर मज़्मत करते हैं। लेकचरों में ईसाई वगैरह अंग्रेज़ों की तारीफ़ दिल खोलकर करते हैं। ब्रह्मा वगैरह महर्षियों के नाम भी नहीं लेते।”

(३) भला जब आर्यवृत्त में पैदा हुए और इस मुल्क का आवो दाना खाया पिया और अब भी खाते पीते हैं तो अपने माँ बाप दादा के रास्ते को छोड़कर दीगर गैर मुमालिक के मज़हबों की तरफ़ ज़्यादा माइल हो जाना और ब्रह्म समाजी और प्रार्थना समाजियों का इस मुल्क में रहकर इल्म संस्कृत से बेवहारा होकर अपने को आलिम ज़ाहिर करना। अंग्रेज़ी पढ़कर पंडित का घमण्ड करना और फ़ौरन् एक मज़हब चलाने के लिये रागिब हो जाना ये इन्सानों के लिए मुस्तहक़म और उनकी तरक्की करने वाला काम क्योंकिर हो सकता है।

(४) अंग्रेज़ मुसलमान चन्डाल वगैरह से भी खाने पीने की तमीज़ नहीं रखी उन्होंने यही समझा होगा कि खाने और ज़ात का इश्तियाज़ तोड़ने से हम और हमारा मुल्क सुधर जायेगा लेकिन ऐसी बातों से सुधार तो कहाँ है उल्टा बिगाड़ होता है।

(५) जब कुल सच्चाइयाँ वेदों से हासिल होती हैं जिनमें कि झूठ ज़रा भी नहीं है तो उनके तसलीम करने में शक करना अपना और दूसरेका महज़ नुक़सान करना है। इसी वजह से तुम को आर्य वृत्ती लोग अपना नहीं

समझते और तुम आर्य वृत्त की तरक्की का बाइस भी नहीं हो सकते।

(६) भला वेद वगैरह सच्चे शारत्रों को माने वगैर तुम अपने कौल की सच्चाई और झूठ की आज़माईश और आर्य वृत्त की तरक्की भी कभी कर सकते हो। जिस मुल्क को बीमारी हुई है उसकी दवाई तुम्हारे पास नहीं है और यूरोपियन लोग तुम्हारी परवाह नहीं करते और आर्य वृत्ती लोग तुमको दीगर मज़हब वालों की मानिन्द समझते हैं। अब भी समझ कर वेद वगैरह की क़द्र करने से मुल्क की तरक्की करने लगो तो भी अच्छा है।”

(७) हम और आप को निहायत मुनासिब है कि जिस मुल्क की अश्या से अपना जिस्म बना और अब भी परवरिश पा रहा है और आइन्दा पायेगा उसकी तरक्की तन धन से सब लोग फ़िक्र मुहब्बत से करें इसलिये जैसा कि आर्य समाज मुल्क आर्यवृत्त की तरक्की का बाइस है वैसा और कोई नहीं हो सकता। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११)

मज़कूरा वाला चन्द इक़तवासात से पता लग सकता है कि स्वामी दयानन्द मुल्की कौमी, नसली और पैदाइशी तअस्सुवात का शिकार था, गो इससे इसका आला दर्जे का पोलिटिकल रिफ़ॉर्मर और देशभक्त होना तो साबित होता है जो कि कोई गुनाह की बात नहीं है लेकिन वह वे लाग मुहक्किक और सदाक़त को तरफ़दार नहीं था। यही वजह है कि दीगर मज़हबी कुतुब के असली या फ़र्ज़ी उयूब के बरख़िलाफ़ तो वह बेरहमी से कुल्हाड़ा चलाता गया। लेकिन जब उनसे हज़ार दर्जे बढ़कर उयूब इसको वेदों में नज़र आये तो इसका हाथ काँप गया। वह सिर्फ़ यही नहीं कि उन उयूब के बरख़िलाफ़ आवाज़ न उठा सका बल्कि उसने एक मामता की मारी हुई माँ की तरह जो दूसरे के बच्चों को ख़्वाह वह कैसे ही खूबसूरत और साफ़ सुथरे हों नफ़रत करती हो और अपने पेट से पैदा शुदा बच्चे को ख़्वाह वह कैसा ही लूला, लंगड़ा, लुंजा और अंधा हो चूम चाटकर छाती से लगा लेती हो। वेदों की मज़कूरा वाला सख़्त ख़तरनाक तालीम को अपने मैअयार और उसूल के बरख़िलाफ़ पाकर भी निहायत ही प्यार और मुहब्बत के साथ सिर्फ़ अपने दिल में जगह दी बल्कि उनको खुदावंदे कुद्दूस की किताब तसलीम किया। इन तमाम हालात का मुतालेआ करके हर एक हक़ पसन्द शख्स इस नतीजे पर पहुँचेगा कि वेदों को खुदा का कलाम तसलीम करने में स्वामी दयानन्द ने दयनतदारी को रियाकारी पर कुर्बान कर दिया और अपने इस फ़अल की

ताईद में इसने स्वामी शंकराचार्य को भी अपने साथ मिला लिया” जैसा कि पीछे दिखाया जा चुका है। गिरटर ब्लूम के अल्फाज़ में हक व हक्कानियत के तमाम आशिकों को इस बात पर वाकई अफसोस करना चाहिये।

पाँचवीं फसल

वेद और आलमगीर शान्ति

अर्थात् विश्व-शान्ति

अब मैं इस बात पर बहस करूँगा कि वेदों को खुदा का कलाम मानने वाले जो ये दावे करते हैं कि दुनिया में जिस कद्र जंग व जदाल, कल्ल व खून और मादूदा परस्ती का इस वक्त ज़ोर है वह सब वेदों की तालीम से बेबहरा रहने का बाइस है और कि अगर दुनिया में वेदों की तालीम फैल जाये तो चारों तरफ़ अमन व अमान और आलमगीरी शान्ति का राज हो जायेगा। देखना चाहिये कि ये दावा वाकिआत की बिना पर कहाँ तक सच है। पेशतर इसके इस वाव को शुरू किया जाये मैं मुनासिव समझता हूँ कि एक दफ़ा स्वामी दयानन्द के इस कौल को जिसको मैं पीछे भी नक़ल कर चुका हूँ, यहाँ पर दोबारा नक़ल कर दूँ। स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं –

“इस किस्म की प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और न परमेश्वर इसको कबूल करता है जैसा कि ये है कि ऐ परमेश्वर! आप मेरे दुश्मनों को फ़ना करो मुझ को सबसे बड़ा बनाओ। मेरी ही नेक नामी हो और सब मेरे मातेहत हो जाये वग़ैरह वग़ैरह क्योंकि अगर दोनों दुश्मन एक दूसरे के फ़ना होने के वास्ते प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों को फ़ना कर देवे अगर कोई कहे कि जिसकी मुहब्बत ज़्यादा होगी इसकी प्रार्थना सफल हो जायेगी तो हम कह सकते हैं कि जिसकी मुहब्बत कम हो उसका दुश्मन भी कम दर्जे फ़ना होना चाहिये। ऐसी जिहालत की प्रार्थना करते करते कोई ऐसी प्रार्थना भी करने लग जायेगा वग़ैरह। (समुल्लास ७)”

स्वामी दयानन्द की ये पोज़िशन जैसा कि पीछे दिखाया जा चुका है, बिल्कुल माकूल है। इस माकूलियत के मुकाबले में वेदों के वह तमाम मंत्र जो कि ऊपर दर्ज किये जा चुके हैं बिल्कुल लंगू (बेकार) हो जाते हैं और खुद स्वामी दयानन्द के कौल के मुताबिक़ वह महज़ जिहालत की प्रार्थनायें रह जाते हैं और ये है भी बिल्कुल ठीक। क्योंकि अगर इन मंत्रों को खुदा का कलाम

मान लिया जाये तो खुदा की पोज़िशन एक तमाश वीन इन्सान से ज़्यादा बेहतर साबित नहीं हो सकती। जिन लोगों को बुटेर या मुर्ग लड़ाने का शौक होता है उनका कायदा होता है कि वह अपने अपने जानवरों को ख़ूब मोटा ताज़ा करते हैं और फिर लड़ने के लिये छोड़ देते हैं, जब वह लड़ते लड़ते थक जाते हैं तो वह उनको पानी और थापी देकर फिर लड़ाते हैं। चूँकि वह तमाशा वीन होते हैं इसलिये वह दानिस्ता जानवरों को आपस में लड़ाते हैं। अगर वेदों को मज़कूरा वाला मंत्रों को खुदा का कलाम तसलीम कर लिया जाये तो खुदा की पोज़िशन हमारे नज़दीक इसी किस्म के एक तमाशवीन इन्सान की सी हो जाती है जबकि हम देखते हैं कि ऐसे मंत्रों का इलहाम देने वाला हम को भी अनाज पानी हवा सूरज की रोशनी वगैरह नेअमती से बेहरवर करता है। और जिन के हक में वह हमें ये बंद दुआ करने की तालीम देता है कि ये चीज़ें उनके लिये ज़ेहर हो जायें वह उनको भी यही चीज़ें अता करता है बल्कि अक्सर सूरतों में उनको हम से ज़्यादा बेहतर और कसरत से देता है। अब हमें तो खुदा वेदों में ये तालीम देता है कि तुम अपने दुश्मनों की हलाकत के लिये मुझ से ये दुआ करो उधर वह हमारे दुश्मनों के साथ जा सकता है और उनको हर एक किस्म की चीज़ों से मदद देता है। न सिर्फ़ यही बल्कि वह हमारे दुश्मनों को भी यही दुआ सिखाता है कि वह हमारी हलाकत के लिये इससे बंददुआ करें। अब एक तरफ़ तो वेदों में दिये गये इलाही अहकाम के मुताबिक़ हम अपने दुश्मनों के लिये बंददुआ कर रहे हैं और उनकी हलाकत के मनसूबे सोच रहे हैं और दूसरी तरफ़ हमारे दुश्मन हमारी हलाकत के लिये बंददुआ करते और मनसूबे सोचते हैं। लुफ़ ये है कि हम दोनों ही वेदों के मंत्रों से अपने अपने रवैये की तसदीक़ करते हैं गोया ऐसी हालत में खुदा एक तरफ़ हमारे दिल में भी दुश्मनों के साथ लड़ने का जोश भर रहा है और दूसरी तरफ़ हमारे दुश्मनों के दिल में भी हमारे मुकाबले पर डटे रहने का ख़्याल मज़बूत कर रहा है। सोचना चाहिये कि आया खुदा की ये पोज़िशन जो कि वेद हमें बताता है विएयनिही मुर्ग़ को इन्सान की सी पोज़िशन नहीं है। वरना अगर खुदा दरहकीक़त हमारे दुश्मनों की हलाकत चाहता तो या वह दरहकीक़त पानी हवा अनाज वगैरह को उनके हक़ में ज़ेहरीला करना चाहता हो तो उसको क्या ज़रूरत पड़ी है कि वह इन बातों की तकमील के लिये हमारे कानों में आकर फूँक मारे और हमको यह

इलहाम दे कि हम उससे दुआ करें कि हमारे दुश्मनों के लिये पानी हवा अनाज वगैरह ज़िन्दगी के सामान सबके सब ज़ेहरीले हो जायें। जब वह कादरे मुतलक़ और अलीमे कुल है। तो क्यों नहीं वह अपने इल्म से जान कर ज़्यादती करने वालों और पापियों के लिये अपनी हवा को बन्द कर देता, पानी को खुश्क़ कर देता या अनाज को ज़ेहरीला बना देता या किसी और तरीक़े पर सज़ा दे देता। इसको हमारी दुआ या सिफ़ारिश की हरगिज़ ज़रूरत नहीं हो सकती। तावक़्ते कि हम उसको लूला, लंगड़ा या गूंगा, बेहरा या सोया हुआ न फ़र्ज़ कर लें जिसको कि पापियों का नाश करने के लिये उसी तरह जाकर इत्तला देने या जगाने की ज़रूरत हो सकती है जिस तरह कि हम कोतवाली में जाकर जगाते या मुत्तलअ करते हैं। चूँकि खुदावन्दे कुद्दूस की ज्ञाते पाक इन बातों से अरफ़अ व आला है इसलिये लाज़मी तौर पर यही तसलीम करना पड़ता है कि मज़कूरा वाला किस्म की प्रार्थनायें न तो खुदा का कलाम हैं न उनको खुदा की तरफ़ मनसूब करना चाहिये। बल्कि बक़ील स्वामी दयानन्द ये सब महज़ जाहिलों के अपने ख़्यालात हैं जो कि खुदावन्दे कुद्दूस की ज्ञाते वाला सिफ़ात से अंधेरे में थे और वह खुदा को महज़ अपने ही शहर का कोतवाल समझते थे। अगर वेदों के मंत्रों के बनाने वालों को खुदावन्दे कुद्दूस की ज्ञात के बारे में कमाहिका इल्म होता तो वह कम से कम इससे इस किस्म की नामाकूल प्रार्थनायें कभी न करते। मगर चूँकि वह खुद ग़ैज़ व ग़ज़व और हसद व बुग़ज़ का शिकार थे इसलिये उन्होंने दुश्मनों के लिये भी जो प्रार्थनायें की हैं वह ग़ैज़ व ग़ज़व हसद व बुग़ज़ की मुजस्सम तसवीरें हैं। शाक्यमणी गौतम बुद्ध की तालीम में ये ख़्याल बहुत ज़बरदस्त अल्फ़ाज़ में पाया जाता है कि दुश्मन को दुश्मनी से दूर नहीं किया जा सकता बल्कि मुहब्बत से दूर किया जा सकता है अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे दुश्मन तुम से मुहब्बत करें तो तुम उनसे मुहब्बत करो यही ख़्याल हमें हज़रत ईसा मसीह की तालीम में मिलता है जबकि वह बर्दी अल्फ़ाज़ उपदेश करते हैं—

तुम सुन चुके हो कि कहा गया है अपने पड़ोसियों से दोस्ती रख और अपने दुश्मन से अदावत लेकिन मैं तुम्हें कहता हूँ कि अपने दुश्मनों को प्यार करो और जो तुम पर लानत करें उन के लिये बरकत चाहो जो तुम से कीना रखें उनका भला करो और जो तुम्हें दुख दें और सतायें उनके लिये

दुआ करे ताकि तुम अपने बाप के जो आसमान पर है फ़रज़न्द हो क्योंकि वह अपने सूरज को बँदूँ और नेकियों पर यक़राँ उगाता है और रातों और ना रास्तियों पर मीह बरसाता है क्योंकि अगर तुम उन्ही को प्यार करो जो तुम्हें प्यार करते हैं तो तुम्हारे लिये क्या अन्न है कि क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते। (मता बाब ५ आयत: ४३-४७)

हज़रत ईसा मसीह की मज़क़ूरा बाला तालीम वेदों के मज़क़ूरा बाला मंत्रों की तालीम से बदरजहा अफ़ज़ल है। अगर हज़रत मसीह और वेदों के मंत्रों के इलहाम देने वाले का बाहम मुकाबला करना हो तो यकीनन् हज़रत मसीह का दर्जा ऐसे इलहाम के मालिक से लाखों गुना बढ़कर रहेगा। क्योंकि हज़रत मसीह खुदावन्दे कुद्रूस की स्प्रिट में मुजस्सम प्रेम, अफू और दरगुज़र की तालीम देते हैं, जबकि वेदों के मज़क़ूरा बाला मंत्रों का प्रकाशक (जैसा कि वेदों को इलहामी मानने वालों का ख़्याल है) निहायत ही कीना तोज़ बुग्ज़ व हसद व रैज़ व ग़ज़ब का शिकार नज़र आता है।

रसूले अरबी हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की मुक़द्दस और पाकीज़ा ज़िन्दगी से भी ऐसे बहुत से वाकिआत पेश किये जा सकते हैं कि जिन लोगों ने आप को अनवाअ व अक़साम की तकालीफ़ दी थीं आप पर जादू चलाये थे, कीचड़ फेंका था, गालियाँ दी थीं, आपको मारा था, ज़ख्मी किया था, आपके दाँत तोड़े थे और आप के क़त्ल के मनसूबे बाँधे थे, घर से वेधर कर दिया था, आप का और आप के असहाब का माल व दौलत और घर बार भी लूट लिया था, लेकिन जब इस किस्म के आपके दुश्मन आपके सुपुर्द गिरफ़्तार करके लाये गये या लाये जाते तो आप हमेशा उनको माफ़ कर देते और आपने कभी किसी दुश्मन से बदला न लिया बल्कि उहद के मौक़े पर जबकि आपको दुश्मनों ने ज़ख्मी करके एक ग़ार में फेंक दिया तो आपके कई रफ़का ने आप से अर्ज़ किया कि आप खुदावन्दे कुद्रूस से ऐसे बदकिरदार दुश्मनों की हलाकत के लिये वदुआ करें तो आप ने कमाले नमी और इसतक़लाल से फ़रमाया-

अनुवाद: “यानी मैं अपने दुश्मनों पर लानत करने या उनके हक़ मे वदुआ करने के लिये नहीं भेजा गया बल्कि मुझे खुदावन्दे कुद्रूस ने इस ख़िदमत पर मामून किया है कि मैं उनको खुदावन्द की तरफ़ बुलाऊँ और उनके हक़ में अवरे रहमत बँदूँ। ऐ मेरे खुदावन्द! तू मेरी क़ीम को हिदायत

दे क्योंकि वह नहीं जानते कि मेरे साथ क्या सुलूक कर रहे हैं।”

यकीनन् हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की ये स्प्रिट हुरने अख़्लाक और दरगुज़र का एक नमूना है। लेकिन मुझे अफ़सोस के साथ इस बात का इक़बाल करना पड़ता है कि दुश्मनों से दरगुज़र करने उनकी बहबूदी चाहने और उनसे प्रेम व मुहबबत करने की तालीम का जो अमली नमूना महात्मा बुद्ध और हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब अपनी मुक़द्दस ज़िन्दगियों में दिखा गये, उसका यानी दुश्मनों के साथ नेकी करने या उनसे दरगुज़र करने का वेद में कहीं नाम व निशान भी नहीं मिलता बल्कि जाबजा यही तालीम है कि दुश्मनों की गर्दन काटो, उनको ज़िन्दा आग में जला दो, शेरों से फड़वा दो, समन्दर में ग़र्क़ कर दो, दरिन्दों से चरवा दो, फाँसी पर चढ़ा दो वगैरह वगैरह। हालाँकि वेदों को खुदा का कलाम कहा जाता है। अगर खुदा का कलाम यही है तो यकीनन् गौतम बुद्ध और हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की ज़ाते वाला सिफ़ात अरफ़अ व आला समझनी चाहिये। ऐसी सूरत में लाज़िम हो जाता है कि हम ऐसे खुदा की बजाये अपनी इताअत व फ़रमांवरदारी का मुँह महात्मा बुद्ध या हज़रत ईसा मसीह या हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की तरफ़ फेर दें या इस बात को तसलीम करें कि खुदावन्दे कुद्रूस की ज़ात वाला सिफ़ात, उन इलज़ामों से मुबर्रा है जो कि मंत्रों में इस पर लगाये गये हैं और ये कि वेद किसी सूरत में खुदावन्दे कुद्रूस का कलाम नहीं हैं। सिर्फ़ यही नहीं कि वेद में अपने दुश्मनों के लिये सख़्त से सख़्त सज़ायें और कमीने से कमीना वदुआयें तजवीज़ की गयी हैं बल्कि ख़ौफ़नाक जंग व जदाल की भी तालीम दी गयी है। वह लोग जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं उनको ये दावा है कि दुनिया में इस वक़्त जिस क़द्र जंग व जदल और क़शत व ख़ून हो रहे हैं वह उस वक़्त तक मौक़ूफ़ नहीं होंगे जब तक कि वेदों का प्रचार नहीं होगा और कि दुनिया में अगर आलमगीर अमन की बादशाहत कायम हो सकती है तो वह महज़ वेदों के प्रचार से ही हो सकती है, वेदों की तालीम की मौजूदगी में ये दावा ऐसा बे बुनियाद दावा मालूम होता है कि जिससे बढ़कर वेबुनियाद और झूठा दावा दुनिया में कोई नहीं होगा जो लोग ऐसा दावा करते हैं ग़ालिबन् उन्होंने वेदों का मुतालेआ नहीं किया होगा कम से कम वह स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का ही मुतालेआ कर लें जिसको मैंने आम लोगों

की वाकिफयत के लिये उर्दू का जामा पहना दिया है तो उनका ये ख्याल इस तरह उनके दिल से काफूर हो जायेगा। जिस तरह कि सूरज के सामने शबनम, पेशतर इसके कि मैं जंग व जदाल और कुश्त व खून के बारे में वेद मंत्रों को यहाँ पर दर्ज करूँ। मैं एक दूसरे दावे पर भी यहाँ पर चन्द जुमले लिख देना चाहता हूँ। चुनांचे वह लोग जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं वह ये भी कहते हैं कि इबतदाये आफरीनिश में भी इन्सान पैदा हुआ ही था कि इसकी रहबरी के लिये वेद नाज़िल हो गये। ये एक आम बात है कि पैदाइश के वक्त इन्सान का दिल बिल्कुल साफ और हर एक किस्म की शरारतों से पाक होता है। उस वक्त इसके दिल पर जो बात नक्श करना चाहो वह आसानी से नक्श हो सकती है। इबतदाये आफरीनिश के बच्चों के दिल भी हरे क़ायदा तमाम शरारतों से पाक थे। और वह आपस में दंगा फ़साद कुश्त व खून नहीं करते थे। इस वक्त अगर उनको किसी किस्म की तालीम की ज़रूरत थी तो वह आपस में प्रेम, मुहब्बत सुलह से रहने की तालीम की ज़रूरत थी, ये बात तो उनके कान तक भी नहीं पहुँचनी चाहिये थी कि तुम आपस में जंग करो, तीर कमान बनाओ, तोप और बन्दूक तैयार करो, फ़ौजें भर्ती करो, अपने दुश्मनों की गर्दनें काटो, उन्हें ज़िन्दा आग में जला दो, मगर इबतदाये आफरीनिश में इन्सानों को कुश्त, खून व जंग व जदल की मारधाड़, दुश्मनी और अदावत की तालीम देने वाला अगर कोई हो सकता है तो वह वेदों के मंत्र थे जिनको पढ़कर वह उन ख़तरनाक बातों का शिकार हो गये और उन्होंने वेदों को पढ़कर तीर कमान, तोप, बन्दूक, तलवार हथियार वगैरह बनाने सीखे और ये खुद उन लोगों का जो कि वेदों को सब से पहला इलहाम मानते हैं दावा है कि वेदों में इस किस्म के हथियार बनाने की तालीम मौजूद है। बनी नूए इन्सान का कोई वहीख़्वाह तोप और बन्दूक और दूसरे ख़तरनाक हथियारों के मौजूद या मुअल्लिम को मुबारकवाद देने के लिये तैयार नहीं होगा जबकि ये अग्रे वाकिफ़ा है कि इन चीज़ों ने ज़मीन के फ़र्श को इन्सानी खून से रंग डाला और इन चीज़ों को इन्सानों के हक़ में लानत और शरारत बना दिया। बहुत से बनी नूए इन्सान के वही ख़्वाह ये तजावीज़ सोचने के लिये मजबूर हो रहे हैं कि इस शरारत और लानत को कयोंकर दूर या कम से कम घटाया जा सकता है। अगर ये दावे सच हैं कि वेदों का इलहाम इबतदाये आफरीनिश में हुआ। अगर ये दावा भी

सच है कि वेदों ने ही सब से पहले अपने हम जिन्सों का गला काटने के लिये इस किस्म के हथियार बनाने की तालीम दी (जैसा कि वेदों को इलहामी मानने वाले बता रहे हैं) तो ज़मीन की मौजूदा लानत का सरचश्मा वेद को करार देना बिल्कुल मुनासिब और दुरुस्त होगा। लेकिन अगर ये कहा जाये कि वेदों के इज़हार से पेशतर दुनिया में इस किस्म के कुश्त व खून और जंग व हदल जारी थे और कि वेदों की तालीम से पहले ही लोग तोप बन्दूक और तीर व कमान से एक दूसरे को हलाक कर रहे थे तो उनसे सिर्फ़ यही नहीं कि इस दावे की कि वेदों का इलहाम शुरू दुनिया में हुआ, तरदीद हो जाती है। बल्कि वेदों के सर पर ये इलज़ाम आयद हो जाता है कि जिस सूरत में कि ये जंग व हदल और कुश्त व खून वेदों से पहले ही जारी थे तो वेदों ने अपनी तालीम से बजाये इनका ख़ात्मा करने या सुलह की तालीम देने के जलती आग पर और भी धी डाल दिया और जंग व जदल कुश्त व खून करने फ़ौज भर्ती करने, तीर कमान, तोप बन्दूक और अनवाअ व अक़साम के आतिशी और विजली के असलहे तैयार करने की ऐसी ख़तरनाक तालीम दी कि तमाम दुनिया शोला-ए-ग़ार बन गयी, नमूने के तीर पर मैं इस निहायत ही ख़तरनाक कुश्त व खून और जंग व जदल की तालीम देने वाले चन्द वेद मंत्रों को यहाँ पर यजुर्वेद में से पेश करता हूँ -

(१) वह जो हवाई जहाज़ में बैठकर हवा में उड़ते हैं जिनके तीर हवा की मानिन्द चलने वाले हैं इन पुरानों की मानिन्द बहादुरों को हमारा सत्कार हो।” (यजुर्वेद १६/२५)

(२) जिन के तीर बारिश की मानिन्द बरसने वाले हैं हम लोग दुश्मनों को मारने वाले इन बहादुरों का सत्कार करते हैं।” (यजुर्वेद १६/५१)

(३) ऐ सिपहसालार आप हम को दिली राहत देने वाले हों आप हमारी हिफ़ाज़त की खातिर तलवार, तोप बन्दूक को ग्रहण करें। आप हिरन की खाल को पहने हुए हमारी हिफ़ाज़त के लिये आयें और दुश्मनों की ज़वरदस्त फ़ौज को दरख़्त की मानिन्द काट कर फ़तह कीजिये। (१६/५१)

(४) ऐ सूर की मानिन्द सोने से नफ़रत करने वाले राजा! आप के जो अनवाअ व अक़साम के हथियार हैं वह हमारे सिवाये दुश्मनों को मारने का मौजिब हों। (१६/५२)

(५) ऐ खुश किस्मत सिपहसालार आप अपने ज़ोर आवर बाजुओं से

वेशुमार हथियारों का कमाहिका इस्तेमाल करने वाले हैं। (१६/५३)

(६) ऐ इन्सानो! जिस तरह हम लोग हज़ारों जीव जन्तुओं से भरी हुई और ज़मीन के हज़ारों पूजन लम्बे चौड़े देश व देशान्तर में अपनी कमान को चले पर चढ़ाते हैं उसी तरह तुम भी करो। (१६/५४)

(७) हम लोग दुश्मनों को मारने और उनको ताड़ने का काम करने वालों का सत्कार करते हैं। (१६/४५)

(८) हम लोग खूबसूरत होकर दुश्मन को मारने वाले तीर बनाने वाले कमान बनाने वाले तीरो तफ़ंग चलाने वाले तुम लोगों का सत्कार करते हैं। (१६/४६)

(९) जो दुश्मनों को पहले से ही घेर लेने और कैद कर लेने वाले और दुष्टों को मारने और उनकी विल्कुल बेख़कनी करने वाले और दुश्मनों को काटने वाले और हरे बालों वाले नौजवान या हरे दरख़्तों को अनाज और पानी देता है, वह सुख को प्राप्त करता है। (१६/४८)

(१०) वह जो जंगल में रहने वालों को □ह□ह तेज़ रफ़तार फ़ौज के सिपहसालार को तेज़ रफ़तार रथों के मालिक को कोचवान को दुश्मनों को मारने वाले और उनको तितर बितर करने वाले बहादुरों और एलचियों को अनाज देते हैं वह फ़तह नसीब होते हैं। (१६/३४)

(११) ऐ राजा और प्रजा के पुरुषों! तुम लोग बलम और फ़तह लगाने वाले और उनका मुनासिव इस्तेमाल करने वाले पुरुषों का सत्कार करो□ह सिपहसालार और कमान अफ़सरों को बाजा बजाने वाले बैन्ड मास्टर का और बहादुरों को मैदाने जंग में जोश दिलाने के लिय ज़रीमा गीत गाने वाले का सत्कार करो। (१६/३५)

(१२) राजा और प्रजा के पुरुषों को चाहिये कि वह बहुत से हथियारों से मुसल्लह और तीरों से भरे हुए तरकश वाले का सत्कार करें तेज़ हथियारों और तोप बन्दूक से मुसल्लह फ़ौज के सिपहसालार का सत्कार करें, ख़ूबसूरत हथियारों वाले और उमदा कमानों वाले पुरुषों और उनके मुहाफ़िज़ों को अनाज दें। (१६/३६)

(१३) राजा अधीकारी पुरुषों को चाहिये कि वह दुश्मनों को रूलाने वाले और दुश्मनों की फ़ौज को मिट्टी में मिलाने वाले बहादुरों को अनाज वग़ैरह दें। (१६/१८)

(१४) इन्सानों को चाहिये कि जिसके पास तलवार, बन्दूक वग़ैरह बहुत से हथियार हों उसको अनाज वग़ैरह दें। (१६/४०)

(१५) ऐ इन्सानो! तुम सबको बता दो कि हम लोग दुश्मनों पर हथियार चलाने वाले को तुम में से दुश्मनों को हथियार से मारने वालों को अनाज देंगे। (१६/३३)

(१६) हम अदल व इन्साफ़ करने वाली स्त्रियों का और तुम में से सभा की रक्षा करने वाले राजाओं का सत्कार करेंगे, घोड़े की रक्षा करने वालों को, दुश्मनों की फ़ौज को मारने वाली अपनी फ़ौज को और तुम में से जो स्त्रियाँ दुश्मनों की फ़ौज के बहादुरों को मारने वाली हों और मुख़्तलिफ़ तरकों वाली हों और मैदाने जंग में दुश्मनों को मारती हुई स्त्रियों को अनाज देंगे और उनको कमाहिका इस्तेमाल करेंगे। (१६/२४)

(१७) ऐ दुश्मनों को मारने वाले राजा तेरे लिये अनाज प्राप्त हो, तेरे बाजुओं से दुश्मनों को वज्र प्राप्त हो। (१६/१)

(१८) ऐ बादल की तरह तीरों की बारिश करने वाले सिपहसालार! तेरा तीर को हाथ में लेना और इसको चलाना मंगलकारी हो। (१६/३१)

(१९) वह सिपहसालार जो गले में नीलम की माला पहने हुए है जो दुश्मनो को रूलाने वाला है वह हम को सुख देने वाला हो। (१६/७)

(२०) ऐ बुलन्द इक़बाल सिपहसालार! तेरे हाथ में जो तीर हैं तू उनको कमान में रखकर कमान के दोनों गोशों को मिलाकर बड़े ज़ोर से दुश्मन पर छोड़ और तीर दुश्मन तुझ पर चलाये तो अपने आप को उनकी ज़द से दूर रखे। (१६/६)

(२१) ऐ फ़नून जंग में माहिर इन्सानो! इस जटाधारी सिपहसालार की कमान कभी भी चले से उतरने न पाये और इसके तीर की नोक कभी न टूटे इस मुसल्लह सिपहसालार का तरकश कभी भी तीरों से ख़ाली न होने पाये उसका तरकश हमेशा तीरों से भरा रहे। मगर इसका तरकश तीरों से ख़ाली हो जाये तो इसको नये तीरों से भर दो। (१६/१०)

(२२) ऐ बहुत ज़्यादा देरिया सींचने वाले सिपहसालार! तेरे हाथ में जो तीर व कमान है तेरे मुतीज़ जो फ़ौज है तू इस तीर व कमान और फ़तह नसीब फ़ौज के ज़रिये हमारी सब तरफ़ से हिफ़ाज़त कर। (१६/११)

(२३) ऐ सिपह सालार! तू अपनी तीर अन्दाज़ कमान के साथ हमारी दूर

और नज़दीक सब तरफ से रक्षा कर, आप हमारे नज़दीक ही अपने तरकश को तीरों से भरकर धारण कीजिय। (१६/१२)

(२४) ऐ मैदान जंग में चारों तरफ नज़र दौड़ाने वाले तीर कमान से मुसल्लाह फौज के सिपहसालार तू अपनी कमान को फैला और नोकदार तीरों को दुश्मनों पर चला और उनको हलाक करके हमें दिली राहत देने वाला हो। (१६/१३)

(२५) ऐ कुव्वते बाजू रखने वाले फौज के सिपहसालार! तुझे हथियार प्राप्त हों। (१६/१७)

(२६) ऐ राजा! आप हमारे ज़ोर आवर दुश्मनों पर फ़तह हासिल कीजिये। (१५/२)

(२७) ऐ तेज़ हथियारों का इस्तेमाल करने वाले, मज़कूरा बाला औसाफ़ से मौसूफ़ सरदार जिस तरह सूरज की तेज़ किरणें सुबह के वक़्त रात को दूर करके दिन को प्रकाशित करती हैं। इसी तरह तू भी अपने तेज़ स्वभाव से रात की मानिन्द राक्षसों को यकीनन् भस्म कर। (१५/३७)

(२८) ऐ राजा! आप हमारे लिये मैदान जंग में दुश्मनों पर फ़तह पाने वाले हैं—ह आप की फौज मैदाने जंग में कारहाये नुमायाँ करने वाली हो। (१५/३६)

(२९) ऐ राजा! आप अपनी फौज की ताक़त को मुस्तक़िल तौर पर बढ़ायें। (१५/४०)

(३०) ऐ सिपेहसालार! आप अपना जवा दिखायें और मुल्क गीरी कीजिय। (१५/५२)

(३१) ऐ सिपेहसालार! आप ताक़त हासिल करें और इस ज़मीन को अपने दाम तसर्सूफ़ में लायें। दुश्मनों को मुँह के बल गिरायें हाथी और फौज के मालिक राजा की मानिन्द आप अपने दुश्मनों को निहायत ही दुख देने वाले हथियारों से मारते हुए उनके गले में फाँसी डालें और उनको ख़ब्र लानत फटकार करें। (१३/६)

(३२) ऐ सिपेहसालार! आपकी बहादुरों की फौज विजली की तरह कड़कती और चमकती हुई चारों तरफ से दुश्मनों की फौज पर हमलावर हो। ऐ सिपेहसालार तू अपनी फौज की ताक़त को बढ़ा और उसको ख़ूब तरबियत कर जिस तरह आग पर धी डालने से शोले बुलन्द होते हैं उसी तरह तू

दुश्मनों की फौज पर विजली के हथियार चला। (१३/१०)

(३३) ऐ मेरी बहादुर बीवी! दुश्मन तेरी नज़र को नहीं सहार सकता तू अपने आप ही दुश्मन की फौज से लड़ती हुई दुश्मन के हमलों को रोकती है। (१३/२६)

(३४) ऐ आलिम बाअमल और पुर जलाल महात्मन् आप के घोड़े मंज़िल मकसूद तक पहुँचाने वाले बड़े सथे हुए दुश्मन पर हमला करने के लिये बड़े जोश और ताक़त के साथ रथ को खींचने वाले हैं। (१३/३६)

(३५) ऐ आलिम बाअमल महात्मन्! आप के जिन घोड़ों को चाबुक सवारों ने सधाया हुआ है। आप उनको दुश्मनों की फौज के मुकाबले में रथ में जोड़िये। (१३/३७)

(३६) ऐ वेद के जानने वाले राजा! तुम अपने रिआया के दुश्मनों को आग की मानिन्द तपाओ और अपनी रिआया की मदद से अपने दुश्मनों पर फ़तह हासिल करो। (१२/१६)

(३७) राजा को चाहिये कि आग की तरह दुश्मनों को तबाह करे। (१२/१३)

(३८) ऐ इन्सानो! तुम्हारा जो सिपहसालार है वह सूरज की मानिन्द आव व ताव वाला हो, वह दुश्मनों के हक़ में बर्क़ दरख़्शा हो। ऐसा ही सिपहसालार हमारी फौजों की कमान करे।

(३९) जो इन्सान सूरज की मानिन्द दुश्मनों से लड़ने वाला हो वही ग्रहस्त आश्रम में दाख़िल होने के लायक़ है। (१३/६६)

(४०) ऐ शान्ति स्वभाव पुरुष! आप दुश्मनों को नीचा दिखने वाले फ़न जंग को सीखें। (१२/१३)

(४१) ऐ राजा तेरा दुश्मनों के मुकाबले पर जाना मुबारक हो तू अपनी ताक़तवर फौज के साथ बंद किरदार दुश्मनों की फौज पर हमला कर और उसको तहे तेग़ कर तू दुश्मनों के मुल्क को पांमाल करता हुआ वापस आ तू हमें सुख दे। दुश्मनों को ख़लाने वाला तेरा सिपहसालार तेरे साथ हो। (११/१५)

(४२) ऐ राजा जिस तरह तेज़ रफ़तार घोड़ा! मैदाने जंग में अपनी जोलानी से ज़मीन को हिला देता है वैसे ही तू भी मैदाने जंग में धूम मचा। (१२/१८)

(४३) ऐ राजा तू कमाले मुहर व मुहब्बत से अपने दुश्मनों को पायमाल करके अपनी राज भूमि में इल्म की रोशनी फैलाने की ख्वाहिश कर। (११/१६)

(४४) ऐ राजा! तू अपनी फौज के साथ दुश्मन के मुकाबले पर कायम हो। (११/२०)

(४५) ऐ राजा! जिस तरह हिफाज़त करने वाले आलिम को पौत्र शागिर्द सुख देने वाले आग वगैरह पदार्थों को हासिल करके वेदों के अर्थ को जानने वाला और तमाम उलूम में माहिर और दुश्मनों को मारने वाला और दुश्मनों के गाँव को तबाह करके आप के जाह व हशमत को दोवाला करना है, उसी तरह दीगर विद्वान लोग भी आपको विद्या और रोने से तरक्की दें। (११/३३)

(४६) ऐ पानी की मानिन्द नेक औसाफ़ रखने वाली स्त्रियो! अगर तुमको सुख भोगने की ख्वाहिश है तो तुम बड़े बड़े लड़ाई के मैदानों और ताकत व शुजाअत के हाथों में हमारे पहलू वा पहलू कदम मारो। (११/५०)

(४७) ऐ सिपेहसालार! जिस तरह मैं मुकाबले पर आकर लड़ने वाले, मुख्तलिफ़ किस्म की धमकियाँ देने वाली हथियारों से मुसल्लाह हुई दुश्मन की फौज को जलती हुई आग की लपेट में गिराता हूँ उसी तरह तू भी ऐसे आदमियों को भस्म किया कर। (११/७७)

(४८) ऐ सभा और फौज के स्वामी! जो लोग हम से दुश्मनी करते हैं जो हमारे साथ द्वेष करते हैं जो हमारी निन्दा करते हैं जो हम को थोखा दे और मक्कारी करे तो ऐसे तमाम इन्सानों का जलाकर भस्म कर डाल। (२१/८०)

(४९) ऐ राजा! तेरा राज दुश्मनों को हलाक करके तेरे लिये निहायत ही खुशी का देने वाला हो। (६/४)

(५०) ऐ वीर पुरुष! जिस मैदाने जंग मे तू जाहो हशमत वाले राजा के संगरा मूलका विभाग करने वाला, वज्र की मानिन्द दुश्मनों को काटने वाला और प्रजा की रक्षा करने वाला हो, इस मैदाने जंग का आप के साथ ये पुरुष इन्तज़ाम करे। (६/५)

(५१) ऐ राजा! जिस तरह बाज़ हवा में चारों तरफ़ तेज़ी से उड़ता है उसी तरह आप भी हमारे लिये फौज की ताकत से ताकतवर हो जाइये। (६/६)

(५२) ऐ आलिम इन्सानो! तुम इस राजा की फ़नून जंग में वाकिफ़यत को

ज्यादा करो ऐ दुश्मनों की बेखकनी करने वाले राजा! आप दुश्मनों पर फ़तह हासिल करके इकवाल मंद हों। (६/११)

(५३) ऐ राजपुरुषो! तुम लोग जाह व हशमत के देने वाले सिपेहसालार को मैदाने जंग में फ़तह नसीब करो। (६/१२)

(५४) ऐ इल्म की ताकत से आरास्ता मैदाने जंग को जीतने वाले चारों तरफ़ से दुश्मनों की देखभाल करके उनको घेरने वाले लोगो! जैसे तुम लोग चारों तरफ़ चलते हो वैसे ही हम भी चलें। (६/१३)

(५५) सिपेहसालार को चाहिये कि वह अपनी फौज को तमाम कील काँटे से लैस करके बोली पर चलने के लिये तैयार रखे।

(५६) ऐ राजा! मैं राक्षसों के नाश करने के लिये आपको ग्रहण करता हूँ जिस तरह तूने दुष्ट को मारा है वैसे ही हम भी दुष्टों को मारें वह दुष्ट नष्ट हो जाये वैसे हम लोग भी उन सब को नष्ट करें। (६/३८)

(५७) ऐ सभापति! आप अपनी फौज के साथ अपनी हर एक किस्म की ताकत को बढ़ायें। (८/२६)

(५८) ऐ काली घटा की मानिन्द फौज के बहादुरो! तुम दोनों इन तमाम दुश्मनों को जो हमारी फौज से लड़ना चाहें तीर व तफंग से हलाक करो और दुश्मनों की जो फौज तुम्हारे सामने आये और जो भी तुम्हारे सामने अकड़फूँ करे तुम लोग उनको मार भगाओ। (८/५३)

(५९) मैदाने जंग में वैदिक विद्या को प्रकाश करने वाला हम को वैदिक और युद्ध की शिक्षा युक्त वाणी से आनन्द देने वाला हो, दूसरा बहादुर मैदान में दुश्मनों को पामाल करता हुआ आगे आगे चले। तीसरा बहादुर मैदाने जंग में वीर रस से लड़ने वालों को जोश दिलाता रहे चौथा बहादुर कमाल आनन्द से धर्म के दुश्मनों पर फ़तह हासिल करे। (७/४४)

(६०) ऐ राजनू! जिस तरह मैं बुरे काम करने वाले जीवों को गले काटता हूँ वैसे तू भी काट, मुझ से द्वेष या नफरत करने वाले दुश्मनों को दूर कर जो मेरे सरीहन् दुश्मन हैं उनको अलग कर। (६/१)

(६१) ऐ सिपेहसालार! तू तमाम बहादुरों की फौज के दुश्मनों को चारों तरफ़ से घेरने के लिये शुमाल जुनूब, मशरिक मगरिब में बाँट। (६/१६)

(६२) ऐ सभापति! जिस कर्म से बड़े बड़े घमण्डी दुश्मन मारे जायें, इस परम उत्तम दुश्मनों को हलाक करने वालो काम के लिये आपको जो कि

आला जाह व हशमत के धारण करने वाले हैं और युद्ध वगैरह कामों में बाज़ वगैरह जानवरों की मानिन्द लपेट मारने वाले हैं, हम लोग आप को स्वीकार करते हैं। (६/३२)

(६३) ऐ आलमे इन्सान जिस तरह तू धार्मिक विद्वानों में जलवा गर है उसी तरह तू राक्षसों बदकिरदारों को तबाह करने वाला हो जिस तरह तू सब जगह जलवागर होता है उसी तरह तू अपने दुश्मनों को हलाक करने वाला बन।

(६४) ऐ राजसभा के पालन करने वाले इन्सानो! मैं आप लोगों की पैरवी करता हुआ मैदाने जंग में घमण्डी को नीचा दिखाऊँ जैसे आप राक्षसों और बदकिरदारों को मारने वाले हैं वैसे ही मैं दुश्मनों की फौज की ताकत का पता लगाकर बदकिरदारों को दूर करूँ। (५/२५)

(६५) जैसे बहादुर आदमी मैदाने जंग में अपनी फौज के साथ दुश्मनों को पहले ही जाकर घेर लेता है। इसी तरह फुन महारवा में माहिर ये सेनापति मैदाने जंग में मुकम्मल फतह हासिल करे ये सेनापति हर एक किस्म के खौफ से अलग होकर विल्कुल आनन्द से मैदाने जंग में क्वाइदान फौज को अच्छी तरह से बोली देता हुआ फतह को हासिल करे। (५/२७)

(६६) ऐ दुश्मनों को खलाने वाले सिपेहसालार! तू मैदाने जंग के लिये अपने धनुष को फैलाने वाला हथियारों के ज़रिये अपने दुश्मनों की ताकत को पीसकर अपनी रक्षा करने वाला, ज़रा बकतर लगाने वाला सब सुखों को देने वाला है ऐ बहादुर सेनापति! मंजघास से ढपे हुए पहाड़ों की दूसरी तरफ के मुल्क में दुश्मनों को फतह कर। (३/६१)

(६७) मैं मादी आग और चन्द्र लोग के दुखों को बर्दाश्त करने के काबिल दुश्मनों को अच्छी तरह उमदा दलाईल से मुज़यन करूँ। (२/१५)

(६८) आकिल इन्सान जीवन का हित करने वाली इस ज़मीन के सहारे से फौज और असलहे सिलसिलावारलेकर जंगजुओं इन्सानों को अपना रोअब और अपनी हशमत दिखाते हुए दुश्मनों के आज्ञा काटने वाले मैदाने जंग में ग़नीम पर फतह पाकर राज को हासिल करते हैं। (१/२८)

(६९) मैं इस मैदाने जंग को जो निहायत वसीअ और दुश्मनों को हलाक करने वाला है इस हंगामाखेज़ मैदाने जंग को अनाज वगैरह अशया से ताक़तवर की गयी फौज के साथ जंग के तरीकों से अच्छी तरह पाक करता

हूँ। (१/२६)

(७०) जिस तरह मैं इस जंग में जिसमें कि आलिम लोग अच्छे अच्छे पद्धार्थ या आला से आला विद्वानों की संगत को प्राप्त होते हैं। इस जंग में दुश्मनों को मारता हूँ, वैसे तुम लोग भी मारो। (१/२६)

(७१) हम लोग तुम्हारे साथ आकर आला तरीके से ग़नीम को शिकस्त दें और भारी लड़ाइयों में सब तरह से फतह हासिल करें क्योंकि आप इल्म जंग के जानने वाले हैं। (१/१६)

(७२) जो बहादुर सवार होते वक़््त घोड़े को सीधा चलाता है और भूखा प्यासा मैदाने जंग में लड़ता और फतह पाता है वही राज करने के लायक़ होता है। (२७/१०)

(७३) ऐ सभापति! तेरी मुसल्लह फौज हमारे सिवाये दूसरों को दुख देने वाली हो। (१७/११)

(७४) ऐ राजा! आप के हथियार हम को छोड़कर बाकी दुश्मनों को दुखी करने वाले हों। (१७/१५)

(७५) वह जो तमाम इन्सानों में चुस्त व चालाक हो, ताक़तवर बेल की, मानिन्द खौफ़ दिलाने वाला हो, दुश्मनों को रात दिन मारने डराने, और खलाने वाला जरदीद रोज़गार हो। ऐसा बहादुर हम लोगों में से दुश्मनों पर फतह पाने वाली और दुश्मनों को बाँधने वाली फौजों का सिपेहसालार हो। (१७/३३)

(७६) एक जंगजू बहादुरो! तुम हमेशा दुश्मनो से लड़ते भिड़ते और उनको दुख देते रहे तुम्हारे हाथ में हमेशा ही मज़बूत तीर रहें। (१७/३४)

(७७) सिपेहसालार को चाहिये कि वह तोप बन्दूक तलवार और दीगर आतिशीं असलहे से मुसल्लह फौज को हर वक़््त मुस्तैद रखे, वह तमाम असलहे का इस्तेमाल जानने वाला हो, ऐसा सिपेहसालार ही सामने आये हुए दुश्मन पर फतह पाता है। इसकी कमान तेज़ होती है वह मैदाने जंग का आशिक़ होता है, वह ख़ूब हथियार चलाता और दुश्मनों को मारता है ऐसा सिपेहसालार ही एक क्वाइदान फौज के साथ दुश्मनों पर फतह पाता है।

(७८) तू रथ में सवार फौज के साथ दुश्मनों को चारों तरफ़ से काटता हुआ फतह हासिल कर। (१७/३६)

(७९) ऐ सिपेहसालार! तू अपनी फौज को बढ़ाने वाला है तू बड़ा बहादुर

ताकतवर और शास्त्रों को जानने वाला है तू सुख दुख को बर्दाश्त करने वाला और दुश्मनों को बड़ी फुर्ती से मारने वाला है। मैदाने जंग में लड़ने वाले बहादुर आप की आँख के इशारे पर चलने वाले हैं। (१७/३७)

(८०) वह सिपेहसालार जो कि अपनी अक्ल और ताकत के ज़ोर से दुश्मनों के जत्थों को छिन्न भिन्न करता, उनकी जड़ काटता, उनकी ज़मीन को छीन लेता और अपने हाथ में हथियार लिये रहता है और मैदाने का कारेज़ार में अच्छी तरह दुश्मनों को हलाक करता है और उन पर फ़तह पाता है ऐसे सिपेहसालार को तुम इस तरह से हौसला दो और जंग को शुरू करो। (१७/३८)

(८१) इस मैदाने जंग में जहाँपर कि हर एक किस्म के जोड़ तोड़ किये जाते हैं वह सिपेहसालार जो कि पूरी ताकत के साथ दुश्मनों का बीज नाश करता हुआ और उनको अच्छी तरह पाँव के नीचे रीँदता हुआ और उन पर किसी किस्म का रहम न करता हुआ और हर एक किस्म के ग़ैज़ व ग़जब से भरा हुआ दुश्मनों की फ़ौज को मग़लूब करता है और उनको आइन्दा लड़ने के काबिल नहीं रहने देता, ऐसा बहादुर शख्स हमारी फ़ौजों की कमान करे और वही सिपेहसालार हो। (१७/३९)

(८२) मैदाने जंग में दुश्मन की फ़ौज को सब तरफ़ से मारती हुई और उन पर फ़तह पाती हुई क़वाइदान फ़ौज का सिपेहसालार उनके पीछे पीछे चले और फ़ौज के तमाम अधिकारों का रखने वाला दायीं तरफ़ और फ़ौज को जोश देने वाला दायीं तरफ़ चले और हवा की मानिन्द तेज़ रफ़्तार और जंगजू बहादुर आगे आगे चलें। (१७/४०)

(८३) सिपेहसालार को चाहिये कि सबसे पहले वह मैदाने जंग में जोश दिलाने वाला गीत बाजा के ज़रिये बुलन्द करवाये। (१७/४१)

(८४) ऐ बादलों की तरह दुश्मनों को छिन्न भिन्न करने वाले काविले तारीफ़ सिपेहसालार! आप हमारी फ़ौज के जंगजू बहादुरों के हथियारों को फ़तह नसीब कीजिये, हमारे फ़तह नसीब रथों से जय जय के नारे बुलन्द हों। (१७/४२)

(८५) ऐ फ़तह पाने वाले आलिम लोगो! आप हमारे वूक़लमों रंगों वाले झंडों को अलेहदा अलेहदा रथों पर कायम कीजिये। फ़तह का ख़्वाहिशमंद सिपेहसालार और हमारी क़वाइदान फ़ौज दोनों के दोनों ही दुश्मनों को मैदाने

जंग में पसपा करें। (१७/४३)

(८६) ऐ दुश्मनों की जान लेने वाली रानी! तू अपनी औरतों की फ़ौज के दिलों में उत्साह पैदा करे तू उन औरतों की फ़ौज के मुख़्तलिफ़ दस्तों को ग्रहण कर तू अपनी फ़ौज पर अपने दिली मक़ासिद का इज़हार कर और दुश्मनों को भस्म कर। (१७/४४)

(८७) ऐ तीर अन्दाज़ी के इल्म में माहिर और वेदों के जानने वाले सिपेहसालार की स्त्री! तू मैदाने जंग की ख़्वाहिश करती हुई दूर देश में जाकर दुश्मनों से लड़ाई कर और उनको मारकर फ़तह हासिल कर तू उन दूर दराज़ के मुल्कों में रहने वाले दुश्मनों में से एक को भी मारे बग़ैर मत छोड़। (१७/४५)

(८८) दुश्मनों की जो ज़बरदस्त फ़ौज जंग के इरादे से हमारे मुक़ाबले में आये हम इसको काटने वाले हथियारों और तोप वग़ैरह के धुएँ से इस तरह ढाँप दें कि ग़नीम की फ़ौज के सिपाही एक दूसरे को न पहचान सकें। (१७/४७)

(८९) जिस मैदाने जंग में छोटे छोटे बच्चों की तरह चोटी वाले और बग़ैर चोटी वाले तीरों की ख़ूब बारिश होती है। वहाँ पर सिपेहसालार ज़ख़्मियों को वख़ूबी ढाढस दे। (१७/४८)

(९०) एक जंगजू बहादुर! मैं तेरे मैदाने जंग में चोट खाने वाले आज़ा को ज़राबकतर वग़ैरह से ढाँपता हूँ आलिम लोग तुझे दुश्मनों के पायमाल करने के लिये जोश दिलायें। (१७/४९)

(९१) दो सिपेहसालार बिजली और आग की मानिन्द मेरे मुख़्तलिफ़ों को उठा उठाकर ज़मीन पर पटकें। (१७/५४)

(९२) ऐ बहादुरो! तुम बिजली से सुख हासिल करो और बर्तनों में पकाये हुए दाल कड़ी वग़ैरह को हाथ में लेकर जंग व जदल करो। (१७/५५)

(९३) ऐ आलिमो की ताज़ीम के लायक़ और दुश्मनों को मारने वाले सिपेहसालार! जिस तरह सूरज आकाश में रहने वाले गरजने वाले और चारों तरफ़ फैले हुए बादल को बग़ैर हाथ पाँव के चकनाचूर कर देता है उसी तरह ऐ सिपेहसालार तू भी अपने दुश्मनों को ताक़त से मार। (१८/६६)

(९४) ऐ सिपेहसालार तू फ़तह नसीब हो, तेरी फ़ौज हमारे दुश्मनों को मुँह के बल गिराये। (१८/७०)

(६५) ऐ सूरज की मानिन्द सिपेहसालार! जिस तरह सूरज पानी से भरे हुए घंघोर घटा से अंधेरे में आकर वादलो को छिन्न भिन्न कर देता है, उसी तरह तू भी ऐसी फौज हासिल कर जो चारों तरफ छाये हुए दुश्मनों को तितर बितर करके तुझे फतह नसीब करे। (१६/७१)

(६६) ऐ सिपेहसालार! जिस तरह सूरज पानी को ऊपर उठाता है उसी तरह तू अपनी फौज को तैयार कर। (२०/३८)

(६७) ऐ सिपेहसालार तू मोर के बालों की मानिन्द बाल रखने वाले उम्दा घोड़ों के साथ दुश्मनों पर फतह पाने के लिये जा। जानवरों को पकड़ने वाले शिकारी की तरह दुश्मन तुझे अपनी कमंड में न फाँस सके तू अपने तीर व कमान के साथ दुश्मनों पर फतह पाकर वापस आना। (२०/५३)

(६८) ऐ वीर पुरुष! जिस तरह हम हथियारों के ज़रिये दुश्मनों के मनसूबों को खाक में मिलाते मुल्कों को फतह करते, मैदान जंग में कामयाब होते, दुश्मनों की तेज़ रफ़्तार फौज को तितर बितर करते हुए चारों तरफ फतह व नुसरत का डंका बजाते हैं उसी तरह तुम भी फतह हासिल करो। (२६/३६)

(६९) ऐ वीर पुरुष! ये जो चल्ले पर चढ़ी हुई कमान के ऊपर लगी हुई ताँत है जो इस तरह से बोलती है जिस तरह कि पड़ी लिखी बाशऊर स्त्री बोलती है जिसकी तारीफ़ की जाती है और जो इस तरह प्यारी आवाज़ निकालती है। ये जो मैदाने जंग में फतह दिलाने वाली है। तुम इसका बाँधना और चलाना सीखो। (२६/४०)

(१००) ऐ वीर पुरुष! जिस तरह लिखी पड़ी स्त्री प्राण की मानिन्द प्यारे पति को और माता अपने पुत्र को धारण करती है इसी तरह कमान की दो ताँतें दुश्मनों को मुन्तशिर करने और दूर भगाने में कामयाब होती हैं। (२६/४१)

(१०१) ऐ वीर पुरुष! जो बहुत से ताँतों वाले कमान का मालिक होता है। वह कमान से सम्बन्ध रखने वाले तीरों को तरकश में डाल कर पीठ के पीछे रखता है। मैदाने जंग में ये कमान और ताँत और तीर वगैरह चीं चीं की आवाज़ निकालते हैं इसी से बहादुर आदमी चारों तरफ फैली हुई दुश्मनों की फौज पर फतह हासिल करता है। (२६/४३)

(१०२) ऐ वीर पुरुषो! वह जिनके बेल ख़ूब मोटे ताज़े और हाथों की

मानिन्द हिफाज़त करने वाले और रथों को तेज़ी से ले जाने वाले ख़ूबसूरत रफ़्तार वाले और दुश्मनों को धमकाते हुए तेज़ रफ़्तार हिनहिनाते वाले घोड़े हैं। दुश्मनों को हलाक करने वाले ऐसे बहादुरों को तुम लोग दिल व जान से प्यार करो। (२६/४४)

(१०३) ऐ वीर पुरुषो! इस जंगजू बहादुर के रथ में ग्रहण करने के काबिल अग्नि, ईंधन, जल वगैरह पदार्थ और तोप बन्दूक और कबीह वगैरह हथियार जिस कदम भी हैं उनको देख भालकर रथ में रख ऐसे सुख देने वाले रथ को हम लोग रोज़ प्राप्त हों। (२६/४५)

(१०४) ऐ वीर पुरुष! जिस फौज में सिपेहसालार उम्दा हो रथ वगैरह तमाम सामान मज़बूत हों जहाँ कस्तूरी वाली गाय के मानिन्द हिरन हों। वहाँ भली प्रकार तीर चलते हैं जो क़वाइद दान फौज बोली पर इधर उधर चलती और बैठती और दौड़ती है। इस फौज के बहादुर पुरुष हमारे लिये खास तौर पर सुख देने का मौजब हों। (२६/४८)

(१०५) ऐ घोड़ों को सधाने वाली रानी! जिस तरह वीर पुरुष घोड़ों के जिस्म पर चाबुक लगाकर चलाते हैं और बहादुरों को मैदाने जंग में लड़ाते हैं इसी तरह तू भी मैदाने जंग में जाकर सधे हुए घोड़ों से काम ले। (२६/५०)

(१०६) ऐ नक्कारे की तरह गरजने वाले फौज के सिपेहसालार! आप हमारे उयूब को दूर करते हुए हमें बल और पराक्रम दीजिये। फौज को तरतीब दीजिये, दुष्टों को कुत्तों की मौत मारिये आप अपनी फौज को विजली के हथियारों से मुसल्लह कीजिये। (२६/५६)

(१०७) ऐ राजपुरुष! आप हिनहिनाते हुए घोड़ों वाली फौज से हमारी हिफाज़त कीजिये और हमारे रथों पर चढ़े हुए बहादुर पुरुष दुश्मनों पर फतह हासिल करें। (२६/५७)

(१०८) ऐ राजा जिस तरह आप मैदाने जंग में दुश्मनों की तमाम फौजों को पसपा करते हैं, दुष्टों को मार कर सुख देने वाले और फतह नसीब हुए हैं, इसी तरह आप सदा ही उनको मारते रहें। (३३/६६)

(१०९) ऐ दुश्मनों को मारने वाले राजा! आप दुश्मनों को मारने वाले और उनको सखाने वाले हैं आप के क्रोध से दुश्मनों की फौज मारी जाती है। (३३/६७)

(११०) हे पाप के दूर करने वाले और रोशनी देने वाले परमात्मन! आपको नमस्कार हो ऐ पररितश के लायक परमात्मन आपको नमस्कार हो, आप की न टलने वाली देवस्था हमारे सिवाये दूसरे दुश्मनों को दुख देने वाली हो, आप हम को पवित्र कीजिये।

मैं ज़ख़रत नहीं समझता कि जंग व हदल और मार धाड़ के बारे में ज़्यादा मंतर पेश कर्खैं। मज़कूरा वाला सी से ज़्यादा मंत्र सिर्फ़ नमूने के तौर पर मैंने यजुर्वेद में से पेश किये हैं और तर्जुमा वही दिया है जो कि स्वामी दयानन्द ने किया है। यजुर्वेद में से इससे कई गुना ज़्यादा मंत्र इसी किस्म के कुश्त व ख़ून और जंग व जदल के बारे में मौजूद हैं। ये तो एक वेद का हाल है इसी पर बाकी के तीन वेदों का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। कि इनमें एक दूसरे के साथ दंगा फ़साद करने की किस क़द्र तालीम मौजूद होगी। मज़कूरा वाला मंत्रों का सरसरी मुतालेआ करने से ही इस बात का पता लग जाता है कि वेदों में सबसे ज़्यादा तारीफ़ उन्हीं लोगों की गयी है जो जंग व जदल करने वाले और अपने दुश्मनों के गले काटने वाले हों। जाबजा तीर, तफ़ंग, तोप बन्दूक और दीगर आतिशी असलहे के बनाने और इस्तेमाल करने की ताकीद की गयी है और राजा को हुक्म दिया गया है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा फ़ौज भर्ती करे। न सिर्फ़ मर्दों की ही फ़ौज भर्ती करे बल्कि औरतों की फ़ौज भी भर्ती करे खुद भी मैदान में जाकर लड़े। इसकी बीबी और दूसरी औरतें भी जाकर लड़ें। औरतें मर्दों को लड़ाई के लिये तैयार करें और उनको जोश दिलायें। गोली बारूद तीरों की ज़्यादा से ज़्यादा मिक्दार वहम पहुँचायें। तोप बन्दूक देने वाली हों इस जंग व जदल में वह खुदा से भी यही दुआ करती जायें कि उनकी ही फ़तह हो और दुश्मनों की शिकस्त हो। इन तमाम बातों के मुतालए से वेद हमारे सामने मारधाड़ और कुश्त व ख़ून का एक निहायत ही ख़ौफ़नाक मंज़र पेश करता है। हमारे सामने एक ऐसे मैदान जंग का नक्शा खोल देता है। जिसमें कुश्तों के पश्ते लग रहे हों और चारों तरफ़ मुर्दों की लाशें मरने वालों की चीख़ पुकार, इन्सानों की नीम कटी गर्दन, उनके टूटे हुए आज़ा मर्दों के क़ल्ल विधवाओं की आह वज़ारी यतीमों की फ़रियाद, गाँव की बरबादी, हैवानों की हलाकत, खेतों का जलना, दुश्मन की पार्टी के पीने के पानियों में ज़ेहर का मिला देना, खाने की चीज़ों को भी ज़ेहर आलूदा कर देना वगैरह वगैरह तमाम ऐसी

ख़तरनाक और वहशीपन की बातें हैं जिनकी कि वेद तालीम देता है। अगर वेद खुदा का कलाम होता तो वह बनी नूप इन्सान के लिये इसी तरह अत्रे रहमत होता जिस तरह कि खुद खुदावन्दे कुद्दूस हज़रत ईसा मसीह के अल्फ़ाज़ में अपने सूरज को नेकों और बर्दों पर यकसाँ उगाता और उनकी परवरिश करता है। अगर वेद खुदा का कलाम होता तो वह गौतम बुद्ध, हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब से बढ़कर दुश्मनों के साथ शान्ति, दरगुज़र, बुरदबारी, तहम्मूल, प्रेम और मुहब्बत की तालीम देता ताकि दुनिया पर कुश्त व ख़ून का दरवाज़ा बन्द हो जाता और बनी नूप इन्सान आपस में एक दूसरे के साथ मुहब्बत और सुलह से रहना पसन्द करते। ये मारधाड़, कुश्त व ख़ून, दंगा फ़साद, जंग व जदल तो दुनिया में पहले से ही चला आता है। और अब भी चारों तरफ़ जारी है। अपने हम जिन्सों को हलाक करने के लिये रोज़ नये से नये तरीक़े सोचे जा रहे हैं और नये से नये हथियार तोप, बन्दूक गोला, बरछी ईजाद किये जा रहे हैं। ख़तरनाक जहाज़ बनाये जा रहे हैं। खुश्की तरी और हवा में जंग व जदल करने और अपने भाईयों के गले काटने के लिये रोज़ नयी से नयी ईजादें की जा रही हैं। हम अपने चारों तरफ़ आग के उन शोलों को आसमान की तरफ़ बुलन्द हुआ देखते हैं। इन्सानी दुनिया में चारों तरफ़ शोर महशर बरपा है। वेद सिर्फ़ यही नहीं कि इस फ़अल के बरख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाता बल्कि वह इसकी ताईद करता है और तालीम देता है कि अपने हम जिन्सों को क़त्ल करने के लिये नये से नये हथियार, तोप बन्दूक जहाज़ गोला बारूद बनाओ, ज़्यादा से ज़्यादा फ़ौज भर्ती करो और अपने दुश्मनों की गर्दन काटो लुत्फ़ की बात ये है कि इधर इस पार्टी को उस पार्टी की गर्दन काटने की तालीम है और इस तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब किया जाता है जो कि दोनों पार्टियों के लिये महकमा रसद रसानी या कसरेट का काम कर रहा है जब ऐसी तालीम को खुदावन्दे कुद्दूस की तरफ़ मनसूब किया जाता है तो अक्लमर्दों, मुंसिफ़ मिज़ाजों, सुलह और अमन के तालिबों बनी नूप इन्सान के बही ख़्वाहों के लिये वेद नफ़रत की चीज़ हो जाते हैं। मगर सोचने वाले जब इस बात पर विचार करते हैं कि वाकई अगर खुदा इसी किस्म का इल्हाम देने वाला है और ऐसी तालीम देकर लोगों को आपस में लड़ाकर तमाशा देखता है तो ऐसे खुदा को स्वामी दयानन्द के अल्फ़ाज़ में दूर से ही

सलाम कर देना चाहिये। हमें ऐसे खुदा की मतलक जरूरत नहीं है। इस तरह वअज़ अमन पसन्द, रहम दिल, मुन्सिफ़ मिज़ाज इन्सान इलहामी कहलाने वाली किताब के अलावा इलहाम देने वाले खुदा को भी साथ ही धक्का दे देते और खुदा की हस्ती से मुनकिर हो जाते हैं। मगर वह लोग जो खुदा की हस्ती पर आज्ञादाना विचार करते हैं वह इसकी हस्ती से मुनकिर होने की बजाये इस किस्म की किताब को खुदा की किताब नहीं बल्कि वह महज़ इन्सानी दिमाग़ की इख़तराअ़ बताकर इसको वही पोज़िशन देते हैं जिसकी कि वह दरहकीक़त मुस्तहिक़ है। मेरे ख़्याल में ये दूसरा तरीक़ा पहले से ज़्यादा अच्छा और महफूज़ है। जब मैं वेद मे इस किस्म की तालीम देखता हूँ जिसका कि ऊपर ज़िक्र किया गया है तो मेरे दिल में सवाल पैदा होता है कि अगर ये ख़तरनाक तालीम दरहकीक़त खुदा की तरफ़ से ही दी गयी है तो मुझे इस किताब के साथ ऐसे खुदा को भी परे फेंक देना चाहिये। ये बेहतर है कि मैं दुनिया में जंग व हदल कुशत व खून मारधाड़, क़त्ल व ग़ारत, लूट मार की तालीम देने वाले, तीर कमान, तोप, बन्दूक और दीगर आतिशी असलहों के ज़रिये बनी नूअ इन्सान का खून बहाने के लिये इन हथियारों के बनाने की हिदायत करने वाले मदों को क़त्ल करवाने, औरतों को विधवा बनाने, बच्चों को यतीम करवाने और मदों के साथ औरतों को भी लड़वाने, क़त्ल करवाने, गाँवों को जलाने, खेतों को जलाने, शेरों से फड़वाने, समन्दर में गर्क करने, दरिन्दों से चिरवाने और अनवाअ़ व अक़साम की अज़ीयतें देकर मार डालने की हिदायत करने वाले खुदा और खुदा की इस किस्म की किताब पर ईमान लाने के बग़ैर ज़िन्दगी बसर करूँ और ऐसे खुदा और उसकी इस किस्म की ख़तरनाक किताब पर लात मार कर नास्तिक, लमहद, देहरिया, और काफ़िर रहकर अमन की ज़िन्दगी बसर करता हुआ मर जाऊँ, बनिस्वत इसके कि मैं इस किस्म के खुदा और उसकी इस किस्म की खूनी किताब के बोझ को अपने ज़मीर पर रखकर स्वामी दयानन्द के अल्फ़ाज़ में हैवान या दरिन्दा बनूँ। ये पहला ख़्याल है जो कि मेरे दिल में इस वक़्त पैदा होता है जबकि मैं उन लोगों की आवाज़ को सुनता हूँ जो ये कहते हैं कि वेद खुदा का कलाम है लेकिन इसके बाद दूसरा ख़्याल मेरे दिल में पैदा होता है कि मुझे इस किस्म की खूनी किताब को खुदावन्दे कुद्रूस की तरफ़ मनसूब नहीं करना चाहिये, बल्कि इन दोनों के दर्मियान एक हद फ़ासिल कायम करके वेद पर तो बेशक

लात मार देनी चाहिये। लेकिन मुझे इस ज्ञाते पाक की हस्ती से मुनकिर नहीं होना चाहिये जो कि मेरी रूह का आख़री सहारा है और जो उन उयूब और इलज़ामात से पाक है जो कि उस पर इस किताब में लगाये जा रहे हैं। ये ख़्याल मेरे लिये ज़्यादा शान्ति दायक है। पस खुदावन्दे कुद्रूस की ज्ञाते पाक और वेद जैसी किताब के दर्मियान हद फ़ासिल कायम करना मेरा पहला फ़र्ज़ है इस हद फ़ासिल को कायम करके मेरे लिये ये लाज़मी हो जाता है कि मैं वेद को मानूँ या खुदा को। मगर जैसा कि हज़रत ईसा मसीह ने कहा है कि तुम खुदा और मादह परस्ती या रोशनी और तारीकी की एक साथ पूजा नहीं कर सकते हो। इसी तरह मैं खुदावन्दे कुद्रूस और वेद को एक साथ नहीं मान सकता। क्योंकि ये दोनों मुतज़ाद हैं। खुदावन्दे कुद्रूस अगर रोशनी है तो वेद तारीकी है। जैसा कि ऊपर दिखा चुका है। मुझे या तो रोशनी में चलना पड़ेगा या तारीकी में ठोक़रें खानी पड़ेंगी। मैं रोशनी को तारीकी पर तरजीह देता हूँ और हर एक आक़िल आदमी ऐसा ही करता है पस मैं खुदावन्दे कुद्रूस की ज्ञाते पाक को वेद पर तरजीह देता हूँ। और इस ज्ञाते पाक को अपने लिये काफ़ी समझकर वेद को परे फेंकता हूँ क्योंकि ऐसी किताब को खुदावन्द की तरफ़ मनसूब करना या उसको इसका कलाम बताना निहायत ही ख़तरनाक इलहाद, ख़ौफ़नाक, देहरियत और शर्मनाक झूठ है। जिससे कि हर एक दयानतदार रूह को परहेज़ करना चाहिये।

छठी फसल

वेदों पर ईमान की बुनियाद की कमज़ोरी

ऊपर के तमाम मज़मून को पढ़कर कोई दयान्तदार शख्स ये कहने का हौसला नहीं कर सकता कि वेदों के प्रचार से दुनिया में अमन और चैन की वादशाहत कायम हो सकती है जबकि वेदों में कुशत व खून जंग व जदल और मार धाड़ की तालीम मौजूद हो। लेकिन हमारे मुल्क में ऐसे खुश ऐतकाद लोग भी हैं जो अभी तक वेदों को खुदा का कलाम माने हुए उनको दुनिया की अशान्ति दूर करने के मुजर्रव नुस्खा बता रहे हैं। अभी कल का ज़िक्र है कि मैं एक हिन्दी रिसाले का मुतालेआ कर रहा था। इसमें एक ग्रेजुएट का मज़मून मेरी नज़र से गुज़रा जिसके चन्द फ़करात का तर्जुमा मुफ़स्सला ज़ैल है

महर्षि दयानन्द का वेद भाष्य हमारे लिये एक वेशवहा मौखसी जायदाद है जो बनी नूप इन्सान के लिये इस क़द्र मुफ़ीद है कि इसकी कीमत लगाना इन्सान की ताक़त से बाहर है इस मज़मून के लिखने वाले को यकीन है कि इसकी तरह पढ़ने वालों में बड़ी तादाद ऐसे आला दिमाग़ों की भी होगी कि जिनके डगमगाते हुए ईमान को इस भाष्य ने सहारा दिया होगा। ये सच है कि संसार की मौजूदा शान्ति इस वक़्त दूर होगी जबकि वेद भगवान का प्रकाश दुनिया के हर एक कोने में पहुँच जाये तो ये भी सही है कि ऋषि दयानन्द का वेद भाष्य इस किस्म का पायोनियर होने के बाइस इस आलमगीर शान्ति का पेश खेमा होगा। गो आर्य समाज ने इस भाष्य को हर दिल अजीज़ बनाने के बारे में अपना फ़र्ज़ अदा किया है मगर फिर भी वह वक़्त दूर नहीं कि वेद का हर एक जगह ने वेद भाषीय की एक कापी को लाज़मी दिलावदी समझेगा। और मौजूदा ज़माने के वेद भाष्य कार को प्रेम, प्रतिष्ठा और शुक्रगुज़ारी के भाव के साथ याद रखेगा। (नवजीवन बनारस सितम्बर १९१२ ई०)

मज़कूरा वाला मज़मून को पढ़कर जो कि एक किस्म की खुश ऐतकादी का नतीजा है। कोई भी दयान्तदार दरहकीक़त शनास शख्स अफ़सोस किये बग़ैर नहीं रह सकता मज़मून निगार इस बात को अपनी ज़िन्दगी का एक

लाज़मी जुजू करार देता है वह इस ईमान को जो कि दरिया के किनारे की रेत पर कायम है, घास के तिनकों के बन्द बाँधकर सहारा देने का तालिव हो और वह इस बात पर रज़ामन्द नहीं है कि अपने ईमान की बुनियाद को रेत पर से हटाकर चट्टान पर कायम करे। अगर वह इस बात को तसलीम कर ले कि वेद खुदा का कलाम नहीं है बल्कि वह हमारे प्राचीन आबाव अजदाद के ख़्यालात का मजमूआ है जिनमे से बअज़ ख़्यालात बहुत अच्छे हैं और बअज़ बिल्कुल नाक़िस और वहशियाना हैं तो इसके ईमान की बुनियाद हमेशा के लिये एक चट्टान पर रखी जा सकती है मगर चूँकि इसका ईमान ये है कि वेद खुदा का कलाम है। इसलिये जब इसके सामने कोई ऐसी बात वेद में निकलती है जो खुदा की ज़ात पर बदनूमा धक्का हो तो वह अंधेरे में इधर उधर हाथ पाँव मारता और सहारा ढूँढता है। ताकि इसका ईमान डगमगा न जाये ये एक सख़्त काबिले रहम और तरसनाक हालत है। इससे भी बढ़कर हंसी की बात ये है कि स्वामी दयानन्द का भाष्य डगमगाते हुए ईमान को सहारा देता है। मैं कह सकता हूँ कि स्वामी दयानन्द के भाषीय का कमाहिक्का मुतालेआ करने से पेशतर वेदों पर मेरा ईमान बड़ा मज़बूत था। लेकिन जिस वक़्त मुझे स्वामी दयानन्द के भाषीय का तर्जुमा करना पड़ा और इसके लफ़ज़ लफ़ज़ को अपने कलम में से गुज़ारना पड़ा तो वेदों के खुदा का कलाम होने पर मेरा जो विश्वास था वह काफ़ूर हो गया। ये शायद मुवालेगा नहीं होगा अगर मैं ये कहूँ कि स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय को बग़ैर पढ़कर कोई भी दयान्तदार शख्स वेदों को खुदा का कलाम नहीं मान सकेगा। तावक़्तेकि वह रियाकारी से काम न ले नामानिगार मज़कूर का ये ख़्याल कि दुनिया की मौजूदा अशान्ति इसी वक़्त दूर होगी जबकि वेद भगवान का प्रकाश दुनिया के कोने काने में पहुँच जायेगा एक ऐसा ख़्याल है कि जिसको बेबुनियाद साबित करने के लिये कुछ ज़्यादा दूर जाने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि इस किस्म के ख़्याल की तरदीद मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ वह लोग जो दिल के मज़बूत और सच्चाई के तालिव नहीं हैं जो इस उसूल को नहीं मानते कि सच्चाई को कबूल करना चाहिये और झूठ को छोड़ देना चाहिये, जब उनको स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य में ऐसी बातों का पता लगता है जिनसे कि उनके ईमान को लगज़िश होती हो तो वह अपने ईमान की वोसीदगी पर ग़ौर नहीं करते बल्कि वह स्वामी दयानन्द पर ये फ़तवे देते हुए

सुने जाते हैं कि स्वामी दयानन्द मोटी अक्ल का आदमी था और कि वह दरअसल वेदों को नहीं समझा था। ये ख्याल मुहम्मदिक लोगों का ख्याल नहीं है बल्कि ऐसे लोगों का ख्याल है जो वेद को मुल्की नसली और पैदाईशी जच्चात की बिना पर इसी तरह गोद से लगाये रखना चाहते हैं जिस तरह कि मामता की मारी हुई माँ अपने मुर्दा बच्चे को अपनी छाती से अलग करने के लिये तैयार नहीं होती ख्वाह इसको ये भी मालूम हो जाये कि बच्चा मर चुका है वह लोग जो ऐसी मामता का शिकार हो चुके हैं वह इस बात पर रज़ामंद हैं कि स्वामी दयानन्द को मोटी बुद्धि का आदमी बतायें लेकिन वह इस बात के लिए मुतलक तैयार नहीं होंगे कि वेदों के कलामे इलाही होने में शक करें मिस्टर ब्लूम स्पेन्सर के अल्फाज़ में पैदाईशी या नस्ली तअस्सुब की ये एक उम्दा मिसाल है और इसमें वह जच्चात भी शामिल हैं जो कि पुरोहितों की गुलामी की वजह से पैदा हुए हैं। मिस्टर हरबर्ट के अल्फाज़ में वेदों की कुंजी हमेशा पुरोहितों के हाथ में रही और उन्होंने इस बात को कभी गवारा नहीं किया कि इस किफ़ल को उनके सिवाये कोई दूसरा शख्स हाथ लगा सके पुरोहित क्लास ने अवामुन्नास को अपनी गुलामी की जंजीरों में जकड़ने के लिये इस ढकोसले को हमेशा बतौर हथियार के इस्तेमाल किया कि वेद एक ऐसी किताब है जिसको कि खुदा बोलता है और कि वेद को पढ़ने का इस्तहकाक सिवाये उनके किसी दूसरे को नहीं स्वामी दयानन्द ने बड़ी ज़ुरअत और दिलेरी से इस किफ़ल पर हाथ डाला और इसको तोड़ कर रख दिया। स्वामी दयानन्द की ये दिलेरी बनी नूए इन्सान के शुक्रिया की मुस्तहिक है। मगर स्वामी दयानन्द के बाद नयी पुरोहित क्लास पैदा हुई। इसने वेदों के साथ स्वामी दयानन्द के भाष्य को भी अज़सरे नौ किफ़ल लगा दिया और ये ढकोसला घड़ा कि स्वामी दयानन्द के भाष्य को समझने के लिये भी वेद, वेदांग, दर्शन शास्त्र, दुनिया की पुरानी ज़बानें, मगरिवी फलसफ़े और साइन्स तमाम तवारीख़ वगैरह पढ़ने की ज़रूरत है। स्वामी दयानन्द के भाष्य को समझने के लिये उन्होंने इसी किस्म की दूसरी शराईत भी पेश की जिनका मतलब सिवाये उसके कुछ नहीं था कि न नौ मन तेल हो न राधा नाचे, इसी तरह वेद बदस्तूर साबिक अंधे ईमान की चीज़ बने रहे इसमें शक नहीं कि अगर स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय का दुनिया की आम फ़ह ज़बानों में तर्जुमा हो जाये, तो ये इस अंधे ऐतकाद को उड़ाने के लिये कि वेद खुदा का

कलाम है बड़ा ज़बरदस्त ज़रिया साबित होगा। उस अन्धे ऐतकाद का ही नतीजा था कि वुस्ता ज़माने में हिन्दुस्तान में जिस क़दर बुरे से बुरे फिरके पैदा हुए उन्होंने अपनी बदअख़लाकी की वुनियाद वेद के ही किसी न किसी मंतर पर कायम की थी जिसका कि वह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तर्जुमा करते थे और जिन लोगों ने बुद्धों को महज़ इस बिना पर तवाह किया था कि वह वेदों से मुनकिर थे उन्होंने भी अपने इस किस्म के फतवों के लिये वेदों को ही बतौर हथियार के इस्तेमाल किया। स्वामी दयानन्द ने अगरचे पुरानी तफ़ासीर को वाम मार्गियों की तफ़ासीर कहकर रद किया है। लेकिन खुद स्वामी दयानन्द ने वेदों को जिस शक्ल में पेश किया है वह सख़्त ख़तरनाक है गो मौजूदा हालात हैं इसका ख़तरा चन्दाँ महसूस न किया जाता हो लेकिन अगर ये तालीम ऐसी कौम के हाथ में आ जाये जो कि बरसरे हुकूमत हो या इस तालीम को मानने वाली कौम बरसरे हुकूमत हो जाये तो इस वक़्त स्वामी दयानन्द का भाषीय दो धारी तलवार का काम देगा क्योंकि इसमें उन लोगों के क़त्ल के लिये काफ़ी से ज़्यादा फ़तवे मौजूद हैं जो कि वेदों के मानने वालों के दुश्मन हों या जिनको वेदों के मानने वाले अपना दुश्मन समझते हों यहाँ तक कि ऐसे दुश्मनाने धर्म को उलटा करके ज़िन्दा आग में जलाने शेरों से फड़वाने और दरिन्दों से चरवाने की सज़ा तजवीज़ की गयी है जैसा कि मैं पीछे दिखा चुका हूँ। इस ख़तरे की शिद्दत और भी दोवाला हो जाती है जबकि इस बात पर ग़ौर किया जाता है कि वेदों के मंत्र एक ऐसी ज़बान में हैं जिसको वेद को खुदा का कलाम मानने वाले “यौगिक” कहते हैं। अगर मुझे यौगिक के लिये उर्दू का कोई आम फ़हम लफ़ज़ इस्तेमाल करना हो तो मैं इसके लिये “मोम की नाक” का लफ़ज़ इस्तेमाल करूँगा। मिस्टर ब्लूम के अल्फाज़ में इवारत की इस पैचीदगी की चाबी हमेशा पुरोहित के हाथ में रहती है और पुरोहित का इख़्तियार है कि वह इस मोम की नाक को जिस तरफ़ चाहे फेर दे स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में इस बात पर जो बहस की है वह एक दिलचस्प मुतालेआ है जब महीधर एक मंत्र पर से पर्दा उठाता है तो वह हमारे सामने एक निहायत ही फ़हश नज़ारा पेश करता है। जब इसी मंत्र पर से साइन आचारज पर्दा उठाता है तो वह कुछ और ही दिखाता है जब इसी मंत्र पर से स्वामी दयानन्द पर्दा उठाता है तो वह कुछ और ही नज़ारा पेश करता है हक़ व हक़ानियत का मितलाशी जब एक

ही मंत्र को मुख्तलिफ पुरोहितों के हाथ में छलावे की तरह रंग बदलता हुआ देखता है तो वह इस नतीजे पर पहुँचने के बगैर नहीं रहता कि ये महज भानुमति का सा तमाशा है जिसमें कि खेलने वाले अपने हाथ की चालाकी से एक ही गोली के मुख्तलिफ रंग बदल कर दिखा रहे हों। पुरोहित लोग वेद मंत्र की इस ब्रूकल्मूनी को इवारत के “यौगिक” होने की तरफ मनसूब करते हैं लेकिन अगर बगैर देखा जाये तो कहना पड़ता है कि ये एक ऐसी बात है जो वेद मंत्रों के सख्त धोखे देह और सख्त नाकाबिले ऐतबार होने पर दलील है और कि ऐसी किताब पर जो छलावे की तरह रंग बदल सकती हो अपने ईमान की बुनियाद रखना या उसको खुदा का कलाम मानना सख्त मुज़िर और खतरनाक खेल है। स्वामी दयानन्द ने इस हर वक्त लज़ा रहने वाली छत को अपने वेद भाष्य के ज़रिये थोनियों और बल्लियों से कायम करने की कोशिश की है। लेकिन बअज़ मुकामात पर स्वामी दयानन्द ने भी वेद मंत्रों के इस नंग को ढाँपने में जो कि दरहकीकत वहाँ पर मौजूद है अपने आप को बेदस्त व पा पाया है इसकी कुछ मिसालें ऊपर दी जा चुकी हैं। यहाँ पर चन्द मिसालें और पेश करता हूँ यजुर्वेद का चौबीसवाँ अध्याय स्वामी दयानन्द के अल्फाज़ में यूँ है।

चौबीसवाँ अध्याय

मंत्र १ -

तेज रफतार घोड़े, मारखोर बकरे, नील गाय का देवता सूरज है। काली गर्दन वाले पशु का देवता अग्नि है। दागदार पैशानी वाली भेड़ का देवता सरस्वती है, नीची गर्दन करके, तिछी टाँगें करके चलने वाले पुशओं का देवता अश्वनी है सोम और पूशन है काले रंग वाले तन्दरू बायें और दायें तरफ सफेद धारियों वाले या बिल्कुल सियाह धारियों वाले पशुओं का देवता यम है पाँव जोड़ों के पास बहुत से बाल रखने वाले पशुओं का देवता तूशटा है जिसकी दुम पर सफेद दाग हों इस पशु का देवता दायू है। बगैर बहार आये के साँडे जुफती करके हमल असकात करने वाली गाय का और छोटे कद और टेढ़े तिरछे आज्ञाओं वाले पशु का देवता विष्णु है। इन तमाम पशुओं को अच्छे कर्म करने वाले इन्सान की जाहो हशमत के लिये कमाहिका काम में लाना चाहिये।

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

मंत्र २ -

सुख और सुखी माइल सियाह रंग वाले और बेर की मानिन्द अरगवानी रंग वाले पशुओं का देवता सोम है। नेवले की मानिन्द खाकी रंग वाले या तोते की मानिन्द हरे रंग वाले पशुओं का देवता वरुण है। जौड़ों पर सफेद दागों वाले, सारे जिस्म पर सफेद छींटों वाले और कहीं सफेद दागों वाले पशुओं का देवता ब्रहस्पति है जिनके तमाम जिस्म पर छींट की मानिन्द दाग हों जिनके रंग विरंग के दाग हों जिनके मोटे मोटे दाग हों उन सब पशुओं का देवता मित्र और वरुण है।

मंत्र ३ -

खूबसूरत वालों वाले, बिल्कुल पाक व साफ बालों वाले, चमकदार वालों वाले पशुओं का देवता सूरज और चाँद है। सफेद रंग वाले, सफेद आँखों वाले सुख रंग वाले पशुओं का देवता पशुपति रुद्र है। जिनसे काम लिया जाता है ऐसे पशुओं का देवता वायु है। मोटे जिस्म वालों का देवता प्राण वायु है। आसमानी रंग वाले पशुओं का देवता मेघ है।

मंत्र ४ -

पूछने के लायक दायें बायें नीचे ऊपर से आहत पाकर चौकन्ने हो जाने वाले पशुओं का देवता वायु है। फलों को खाने वाले, लाल परों वाले चंचल आँखों वाले पशुओं का देवता सरस्वती है जिसके कान पर इंजीर की तरह के दाग हों जिसके कान सूखे हुए हों जिसके कान सुनहरी रंग के हों, ऐसे तमाम पशुओं का देवता तुष्टा है। काली गर्दन वाले सफेद जोड़ों वाले, मोटी टाँगों वाले, पशुओं का देवता पोल और बिजली है। मसताना चाल वाले, आहिस्ता आहिस्ता चलने वाले तेज़ चलने वाले पशुओं का देवता औशाम है।

मंत्र ५ -

तमाम सनअत व हरफत में काम आने वाली खूबसूरत भेड़ों का देवता दशोये देव है। नीची आवाज़ वाली ऊँची आवाज़ वाली और मध्यम आवाज़ वाली तीनों किस्म की भेड़ों का देवता आदनी (पृथ्वी) है। नामालूम भेड़ और धारण करने के लायक एक ही रंग वाली छोटी छोटी बछड़ियाँ विद्वानों की स्त्रियों के लिये जाननी चाहियें।

मंत्र ६ -

अकड़ी हुई गर्दन वाले पशुओं का देवता रुद्र है। मुफ़ीद रंग वाले और

गाज़ी महमूद धर्मपाल

आगे से टक्कर मारने वाले पशुओं का देवता आदित्य है। आबनी रंग वाले पशुओं का देवता मेघ है।

मंत्र ७ -

बुलन्द कद खूबसूरत और छोटे कद वाले पशुओं का देवता विजली और पून है। ऊँचे कद वाले शेरजारे और बारीक पीठ वाले पशुओं का देवता सूरज और वायु है। तोते के रंग वाले तेज़ रफ़्तार चितकबरे पशुओं का देवता मारुत है, काले रंग वाले पशुओं का देवता पूशन (मेघ) है।

मंत्र ८ -

मज़कूरा वाला दो रंगों वाले पशुओं का देवता वायु और विजली है। छोटे कद वाले बेलों का देवता सोम और अग्नि है। बांझ गाय का देवता मित्र और वरुण है इधर उधर से हाथ लगी हुई गाय का देवता मित्र है।

मंत्र ९ -

काले रंग वालों का देवता अग्नि है। नेवले के रंग वाले पशुओं का देवता सोम है। सफ़ेद रंग वाले पशुओं का देवता वायु है। जिन पर कोई ख़ास निशान न हो उनका देवता अदिति है। जिनका सिर्फ़ एक ही रंग हो उनका देवता पवन है। छोटे बछड़े और बछड़ियों का सूरज वग़ैरह की किरणों से काम लेने वाला जानना चाहिये।

मंत्र १० -

काले रंग वाले पशु का देवता भूमि है। धुर्ये के रंग वालों का देवता अंतरिक्ष है। अच्छी आदतों वाले, पढ़ने वाले सफ़ेदी माइल पशुओं का देवता विजली है। जो मंगल कारी पशु हैं वह दुख से पार उतारने वाले हैं।

मंत्र ११ -

मौसम बसन्त में धुर्ये के रंग वाले मौसम गर्म में सफ़ेद रंग वाले मौसम बरसात में काले रंग वाले, मौसम सर्मा में लाल रंग वाले, बर्फ़ के मौसम में मोटे ताज़े और निकलती सर्दी में ज़र्दी माइल सुर्ख रंग वाले पदार्थों को हासिल करना चाहिये।

मंत्र १२ -

तीन भेड़ों वाले गायत्री के लिये पाँच भेड़ों वाले त्रिअष्टप अर्थात् जिसम मन और आत्मा के लिये विनाश न होने वाली और संसार में सुख को देने वाली क्रिया करें जिनके तीन बछड़ें हों वह अनोष्टप अर्थात् पीछे से जो क्रिया की

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

जाती है उसको रोकने के लिये तीन करें और जो अपने पशुओं से ज़िन्दगी की चौथी मंज़िल को हासिल करने वाले हैं वह वही काम करें जिनसे कि आनन्द बढ़े।

मंत्र १३ -

जो इन्सान वार्ट छन्द के ला दो जानवरों को, ब्रह्मी छन्द के लिये साँड को, ककूप छन्द के लिये दूध देने वाली गाय को स्वीकार करते हैं वह सुख को हासिल करते हैं।

मंत्र १४ -

काली गर्दन वाले पशुओं का देवता अग्नि है, सबका धारण पोषण करने वाले पशुओं का देवता सोम है। नीची गर्दन करके चलने वाले पशुओं का देवता सादता है। छोटी छोटी बछड़ियों का देवता सरस्वती है। काले रंग वालों का देवता पोषण है। जो पूछने के काविल हैं उनका देवता मारुत (मनुष) है जो बहुत से रंगों वाले हैं उनका देवता दुशवाये देवा तमाम विद्वान हैं जो खूब चमकदार हैं उनका आकाश और पृथ्वी है।

मंत्र १५ -

मज़कूरा वाला अच्छी तरह चलने वाले पशुओं का देवता इन्द्र और रागनी है जो ज़मीन जोतनेवाले हैं उनका देवता वरुण है। जो इन्सान की तरह मुख़्तलिफ़ अक़साम व निशान वाले और ईज़ा रसाँ पशु हैं उनका देवता प्रजापति है।

मंत्र १६ -

इन सब जानवरों का देवता वायु और विजली है। अच्छे सींग वालों का देवता महेन्द्र है। मुख़्तलिफ़ रंग वाले पशुओं का देवता विश्वकर्मा है। सब को अच्छे साफ़ सुथरे रास्तों में आना जाना चाहिये।

मंत्र १७ -

शान्ति स्वभाव पैदा करने वाले, माता पिता के लिये नेवले की मानिन्द ख़ाकी रंग वाले और सभा में बैठने वाले बुजुर्गों के लिये काले रंग वाले और धुर्ये के रंग वाले और ताक़त देने वाले जिन्होंने अग्नि विद्या ग्रहण की है। उन बुजुर्गों के लिये काले रंग वाले और खूब मोटे ताज़े तीन किस्म के निशान वाले पशु हैं।

गाज़ी महमूद धर्मपाल

मंत्र १८ -

ऐ इन्सानो! तुम को जो शोना सेर देवता वाले, खेती करने वाले, आने जाने वाले, हवा की मानिन्द गुण रखने वाले रंग वाले, सूरज की मानिन्द प्रकाशमान, सफेद रंग वाले पशु बताये हैं, उनको अपने कारोबार में लाओ।

मंत्र १९ -

जानवरों को जानने वाला मौसम बसन्त के लिये टटीरी, मौसम गर्मा के लिये चिड़ियों, मौसम बरसात के लिये तीतरों, मौसम सर्मा के लिये बत्तखों, वर्ष के मौसम के लिये कीकर नाम के जानवरों और निकलती सर्दी के लिये बकर नाम के जानवरों को भली प्रकार हासिल करता है।

मंत्र २० -

जिस तरह समन्दर जानवरों को जानने वाला अपने बच्चों को मारने वाले शिशुमार जानवरों को और मेख के लिये मेंढकों को पानी के लिये मछलियों को और कलीप के नाम के जानवरों को सूरज के लिये और मगरमच्छ और घड़ियाल को वरुण देवता के लिये हासिल करता है। इसी तरह तुम भी हासिल करो।

मंत्र २१ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह जानवरों के गुणों को ज्ञान रखने वाला मनुष चाँद या सोम के लिये हन्स को हवा के लिये, बगुलों को इन्द्र और रागनी के लिये, सारसों को मित्र के लिये, जल काग को वरुण के लिये, चकवे चकवी को भली प्रकार हासिल करता है, इसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २२ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह जानवरों के गुणों को जानने वाला मनुष आग के लिये मुर्गों को बगैर फूल के दरख्तों के लिये आतुओं को रागनी और साम के लिये नीलकण्ठ को सूरज और चाँद के लिये मोरों को, मित्र और दो दिन के लिये कबूतरों को अच्छी तरह हासिल करता है इसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २३ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह जानवरों का काम जानने वाला मनुष्य जाहो हशमत के लिये बटेरों को प्रकाश के लिये कालक नाम जानवर को, विद्वानों की स्त्रियों के लिये गौओं को मारने वाले जानवरों और विद्वानों की बहनों के लिये कोलेक नाम के जानवरों और आग की मानिन्द वर्तमान और घर वालों

की परवरिश करने के लिये राशन पक्षियों को हासिल करता है, उसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २४ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह वक्त्र का जानने वाला दिन के लिये नर्म और आवाज़ निकालने वाले कबूतरों, रात के लिए सीचापू नाम जानवरों, दिन रात के मिलने के दोनों वक्त्रों के लिये जतू नाम के जानवरों, महीनों के लिये काले कौओं और साल के लिये बड़े खूबसूरत परों वाले पक्षियों को अच्छी तरह हासिल करता है इसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २५ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह भूमि के जानवरों के गुण जानने वाला पुरुष ज़मीन के लिये चूहों, अंतरिक्ष के लिए एक कतार के उड़ने वाले पक्षियों प्रकाश के नाम के जानवरों, पूरब वगैरह दिशाओं के लिये नेवलों और कोनों की दिशाओं के भूरे रंग के नेवलों को भली प्रकार हासिल करता है, उसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २६ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह पशुओं के गुण को जानने वाला अग्नि वगैरह के लिये रश जानी के हिरणों, प्राण वगैरह रोरों के लिये रूजा नामी पशुओं बारह महीनों के लिये नैगों नाम के पशुओं, तमाम विद्वानों के लिये पृष्ठ जाती के हिरणों और सधी को हासिल करने वाले विद्वानों के लिए कलंकों को अच्छी तरह हासिल करता है, उसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २७ -

ऐ राजा! जो इन्सान साहबे कुदरत के लिये और आप के लिये प्रशिष्ट नामी हिरन को सतर के लिये सफेद रंग के हिरणों को वरुण के लिये भैरों को ब्रह्मपति के लिये, नील गाय को और तूष्ठा के लिये ऊँटों को भली प्रकार हासिल करता है, वह माला माल होता है।

मंत्र २८ -

जो इन्सान प्रजा पाने वाले राजा के लिये पुरुषों और हाथियों को वानी के लिये पलशी नाम के जीवन आँख के लिये मुशकान नामी जन्तुओं का उनके भँवरों को हासिल करता है वह मजबूत हिंसों वाला होता है।

मंत्र २६ -

प्रजा की पालना करने वाले और इसके सम्बन्धियों के लिये वायु और वायु से सम्बन्ध रखने वाले पञ्चार्थों के लिये नील गाय, वरुण देवता के लिये जंगल का मेंढा, इन्साफ़ करने वाले के लिये काला हिरन, राजा के लिए शर के लिये बन्द और लाल हिरन श्रेष्ठ इन्सान के लिये नील गाय, बाज़ के लिये वत्तख़, नीले रंग के छोटे कीड़े के लिए छोटा, कीड़ा, बालकों को मारने, वाले शिशुमार समन्दर देवता के लिये और सरबफलक पहाड़ों के लिये हाथी बनाया गया है।

मंत्र ३० -

काविले नफरत इन्सान का देवता प्रजापति है। छोटे कीड़े शेर और बिल्ली धारण करने वाले के लिये हैं। आकाशा में उड़ने वाली सफ़ेद चील, धंकश जानवर का देवता अग्नि है। चड़ूटा किस्म की चिड़ियों, लाल साँप जो कि तालाब में रहता है, उनका देवता तूष्ठा है। और सारस बानी के लिए जानना चाहिये।

मंत्र ३१ -

कलिंग, जंगली बकरा, नेवला, इन सबका देवता सोम है, खास ताकत रखने वाले पशुओं का देवता पोषण है। खास और आम गीदड़ जाहो हशमत वाले पुरुष के लिए गोरा हिरन, खास किस्म का हिरन या किसी दूसरी किस्म का हिरन और ककट नाम का हिरन और चकूमी अगर उनवासी के लिये या सने पीछे सनाने वाले के लिये कमत किये जायें तो बहुत काम करने काबिल हों।

मंत्र ३२ -

बगुली का देवता सूरज है, पपीहे, सरज, शयांडक, जानवरों का देवता मित्र है, तोती और तोते का देवता सरस्वती है। ख़रगोशनी का देवता भूमि है। शरे का भेड़िया या साँप सबके सब गुस्से वाले हैं। शुद्धि करने वाला शिवा जानवर और इन्सान की तरह बोलने वाले जानवर का देवता समन्दर है।

मंत्र ३३ -

ख़ूबसूरत परों वाले जानवर का देवता मेघ है। अज़्दहा, कठफोड़े का देवता वायु है। पंज राज नामी जानवर बड़े बड़े पदार्थों और कलाम की हिफ़ाज़त करने वाले के लिये हैं अलज नाम के जानवर का देवता अंतरिक्ष है। वत्तख़ जल काग मछली वग़ैरह का देवता समन्दर है। कछवे का देवता प्रकाश और

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

भूमि है।

मंत्र ३४ -

पुर्ष मुर्ग का देवता चाँद है। गोह और सारस दरख़्तों से तअल्लुक रखने वाला कठफोड़ा मुर्गा वग़ैरह का देवता सावता है। हंस का देवता वायु है। मगरमच्छ के बच्चे और मगरमच्छ और दीगर आबी जानवरों का देवता समन्दर है। ख़रगोशनी लजा के लिये जाननी चाहिये।

मंत्र ३५ -

हिरनी दिन के लिए, मेंढक, चूहा, तीतरी, साँपों के लिये जंगल के लोपाश नामी जानवरों का देवता अश्व है। काले रंग का हिरन रात के लिये है। रीछ और जतू नाम का पुश्वा और शोशीलका पक्षी वे सब इन्सानों के लिये अंगों के सुकेड़ने वाला जानवर विष्णु देवता के लिये।

मंत्र ३६ -

कोकिला पक्षी पन्द्रहवाड़ों के लिये रश जाती का हिरन और ख़ूबसूरत परों वाला मोर को देवता गंधरू है। आबी जानवरों का देवता जल है। कछवे मुर्ग कुंडर नाची और गोतिनका जंगली पशुओं का देवता सूरज है। काले रंग के पशुओं को मरीतों के लिये जानना चाहिये।

मंत्र ३७ -

वारिश को बुलाने के वाली मेंढकी मौसम बसन्त के लिये चोमिया है। कश नाम का पशु और मांथाल नामी पशु पालना करने वालों के लिये हैं, विल के लिये बड़ा साँप है, टटीरी, कबूतर, उल्लू, ख़रगोश, जंगली मेंढा, दरों देवता के लिये जानना चाहिये।

मंत्र ३८ -

ख़ूबसूरत परों वाले जानवरों को मौसमों के बतलाने के लिये ऊँट और दीगर ज़ोरआवर पशु, लटकन वाला बकरा सबके सब बुद्धि के लिये जानने चाहियें नील गाय, जंगल के खास हिरन, रुद्रदेवता वाले हैं। कोई नाम का जानवर, मुर्गा कव्वा, घोड़ों के लिये और कोकिला भली प्रकार काम लेने के लिये जानना चाहिये।

मंत्र ३९ -

आपिये और तेज़ सींगों वाला गेंडा, तमाम विद्वानों के लिये काले रंग का कुत्ता, बड़े कानों वाला गधा, और सियाह गोश सब के सब दुष्टों के लिये सूर

गाज़ी महमूद धर्मपाल

राजा के लिये शेर मारुत देवता के लिये गिरगिट पपीहा, और दीगर जानवर चाँद मारी करने वालों के लिये और पृष्ठ की किस्म के हिरन विद्वानों के लिये जानना चाहियें।’

यजुर्वेद का ये तमाम अध्याय एक अजीब किस्म की चैस्तान है। कोई नहीं कह सकता कि पुरोहित के हाथ में पड़कर ये दोधारी तलवार किस तरफ चल सकती है। खुद स्वामी दयानन्द भी इस पर कोई रोशनी नहीं डालना चाहता, या नहीं डाल सका। वह सिर्फ इतना ही कह कर चुप हो जाता है कि इस पुकरण में देवता पद से इस पद के गुण पोग से पशु जानने चाहियें। स्वामी दयानन्द का ये कौल भी बजाते खुद एक चैस्तान है। अगर पुराने मुफ़रिसरीन में से किसी मुफ़रिसर की बात पर ऐतबार किया जाये तो वह हमें इस का फ़ौरी हल ये बतायेगा कि इस अध्याय में मुख्तलिफ़ देवताओं के नाम पर हैवानों के ज़िबह करने की तालीम है। स्वामी दयानन्द ने भी अपनी इवतदाई तसानीफ़ में इस हल की ताईद की है। अगर इस हल को सही न माना जाये तो इस अध्याय का एक एक मंतर मतलाशी हक़ के सामने दर्जनों ऐतराज़ पैदा करने का मौजब होता है। जिसका तसल्ली बख़्श जवाब न तो स्वामी दयानन्द दे सकता है न कोई दूसर मुफ़रिसर मसलन् अध्याय के पहले ही मंतर में मुख्तलिफ़ देवताओं की तरफ़ मुख्तलिफ़ रंग के पशुओं को मनसूब किया गया है। और ऐसी गाय को जो हामला होने की सूरत में साँड से हफ़ती करके हमल असकात करवा देती हो, इसको विष्णु देवता के सुपुर्द किया गया है।

अब सवाल पैदा होता है कि ऐसी गाय को विष्णु के सुपुर्द क्यों किया गया। क्या विष्णु देवता इसको धर्म का उपदेश करेगा कि तू आइन्दा ऐसा फ़अल मत करना या विष्णु देवता इसको कोई सज़ा देगा। या इससे क्या सुलूक करेगा गर्ज़ ये कि इस किस्म के बीसियों सवाल पैदा होत हैं जिन को कोई तसल्ली बख़्श जवाब स्वामी दयानन्द के भाष्य में नहीं मिल सकता। लेकिन जिस वक्त स्वामी दयानन्द की इवतदाई तसानीफ़ पर नज़र डाली जाती है तो हमें इस का हल दो टूक मिल जाता है चुनांचे स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मतवूआ बनारस १८७५ ई० के दसवें समुल्लास में ऐसी गाय को यज्ञ में कुर्वानी कर देने की तालीम दी है और वह इसकी ताईद में ब्रह्मन ग्रन्थों का हवाला भी देते हैं। ये तो स्वामी दयानन्द का ख़याल है लेकिन जब हम दूसरी

स्मृतियों और शास्त्रों को तलाश करते हैं तो वहाँ से भी हमें इस बात के हक़ में शहादत मिलती है। मसलन् मनु स्मृति के पाँचवें अध्याय में साफ़ अल्फ़ाज़ में लिखा है कि देवताओं के नाम से यज्ञ में फ़लां फ़लां हैवान को ज़िबह करना चाहिये। इन परिन्दों और चरिन्दों की वहाँ पर यजुर्वेद के मज़कूरा वाला अध्याय की तरह एक बहुत लम्बी चौड़ी फ़हरिस्त दी गयी है और लुत्फ़ की बात ये है कि इस फ़हरिस्त में कसरत से वही जानवर बतलाये गये हैं जो कि मज़कूरा वाला अध्याय में बताये गये हैं। उनमें गाय बेल वग़ैरह का मारना भी शामिल है और इसको सवाब का बाइस बताया गया है। अला हाज़ल कयास व्यास संहिता, विशिष्ट संहिता, विष्णु संहिता में भी यज्ञ के लिये परिन्दों और चरिन्दों का मारना लिखा है। खुद ब्रह्मदार नेक उपनिषद अध्याय ८ ब्रह्मन ४ मंतर १८ में लिखा है कि जो पुरुष ये चाहे कि मेरा पुत्र पंडित प्रख्यात, प्रगल्भ, सुन्दर अर्थ वाली का बोलने वाला चारों वेदों का वक्ता सम्पूर्ण आयु का भोगने वाला हो, वह पुरुष जवान बेल, अथवा इससे कुछ ज्यादा उम्र वाले बेल का माँस चावलों के साथ पकाकर इसमें घी डालकर अपनी औरत के साथ खाये। स्वामी दयानन्द ने भी अपनी तसनीफ़ संस्कार विधि में इसको बतौर सनद के पेश किया है। अलावा अज़ी यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के उन्तीसवें मंतर का भाष्य करते हुए, स्वामी दयानन्द ने यज्ञ के लिए हंसा को ज़रूरी समझा है और काले रंग के मेंढे वग़ैरह जानवरों को यज्ञ की सामग्री के लिये लाज़मी जुज करार दिया है। और इस बात के बताने की तो चन्दों ज़रूरत ही नहीं है कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मतवूआ बनारस १८७५ ई० में नरमीदा और गौमीदा यज्ञ में बेल वग़ैरह नर जानवरों को मारने की तालीम अज़रूफ़ ब्रह्मन ग्रन्थ वग़ैरह दी है। इन बातों के पेश करने से मेरा मतलब इस बात पर बहस करना नहीं है कि जानवरों का देवताओं के नाम पर मारना पाप है या पुण्य। बल्कि इस बात पर बहस करना है कि यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय में जो मुख्तलिफ़ देवताओं के नाम के साथ मुख्तलिफ़ जानवर लगाये गये हैं, उनका हल सिवाये इसके और कुछ नहीं हो सकता कि इन देवताओं के नाम पर इन जानवरों को फ़लां फ़लां किस्म के मर्द व औरत ज़िबह करें। स्वामी दयानन्द अगरचे अपनी पहली किताब सत्यार्थ प्रकाश मतवूआ बनारस १८७५ ई० में इस बात की ताईद कर चुका है और साफ़ अल्फ़ाज़ में लिख चुका है कि यज्ञ में बेल गाय और दीगर

जानवरों का ज़िबह करना कोई पाप की बात नहीं है। वह अपने इस ख्याल की ताईद में पुराने शास्त्रों के हवाले जात और अपनी दलाईल भी पेश करता है। और इसने कहीं भी इस बात का ऐलान नहीं किया कि यज्ञ में गाय बेल वगैरह ज़िबह करने की जो इबारत सत्यार्थ प्रकाश १८७५ ई० में दर्ज है वह इसकी नहीं है बल्कि वह इसको दुस्तुत तसलीम करते हुए सिर्फ इस बात का ऐलान करता है कि इस किताब में जो मुद्दों का श्राद्ध लिखा है उसकी बजाये जिन्दों का श्राद्ध समझना चाहिये। और बस चुनांचे इस तमाम मामले में मुफ़स्सल बहस कर चुका हूँ जिस शख्स को देखना मनज़ूर हो वह इस सत्यार्थ प्रकाश के जवाब को जो मैंने उर्दू में शाये कर दिया है पढ़कर अपनी तसल्ली कर सकता है। मगर बावजूद ये कि स्वामी दयानन्द के ऐसे ख्यालात थे लेकिन जब इसको यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय से वास्ता पड़ा तो इसको एक ऐसा वसीअ छेद नज़र आया जिसको देखने के साथ ही वह बकौल

तन हमा दाग दाग शद पनवा कजा कजा नहम

इस मोर्वे को बन्द करने या इसके बन्द करने की कोई तजवीज़ समझाने के बगैर ही आगे निकल गया अगर वह ऐसा न करता तो इसको सख़्त मुश्किल का सामना करना पड़ता क्यों बौद्ध और जैनी पहले से ही शोर मचा रहे थे कि वेदों में जानवरों की कुर्बानी की तालीम है। इधर बुद्धों और जैनियों के ज़बरदस्त प्रचार की बदौलत आज कल के हिन्दू भी इस किस्म की कुर्बानियों की तालीम को वेदों में से निकलते देखकर खुशी हासिल नहीं कर सकते थे। क्यों कि अगर बगैर देखा जाये तो मौजूदा हिन्दुओं में जो जानवरों की कुर्बानी के खिलाफ़ ज़ुबान देखा जाता है वह बुद्धों और जैनियों के ही प्रचार का नतीजा है। स्वामी दयानन्द इस मुश्किल को बख़ूबी जान गया था। इसलिये इसका हल उसको इसके सिवाये कुछ नहीं सूझा कि वह इस अध्याय पर नज़र बन्द करके आगे निकल गया। वरना अग्न वाकिआ तो ये है कि यजुर्वेद का चौबीसवाँ अध्याय, गाय, बेल, भैंस, भेड़, बकरी, हिरन, गज़ेकि मुख़्तलिफ़ किस्म के जानवरों की कुर्बानी का एक ख़ूनी मुज़बह या कुर्बान गाह है। जिसकी ताईद बहुत से पुराने और ज़माना हाल के मुफ़रिसरीन भी करते हैं। इस कुर्बान गाह या मुज़बह पर पर्दा डालने के लिये स्वामी दयानन्द इस अध्याय को जूँ का तूँ बतौर एक चैसतान को छोड़ जाता है और असलियत को छुपाने की इसने जो नाकामयाब कोशिश की है वह ऐसी मुज़हिक्का खेज़

है कि इसके एक एक फ़िकरे पर बीसियों ऐतराज़ों की बोछार होती है। मसलन् नामालूम भेड़ और धारन करने के लायक़ एक ही रंग वाली छोटी छोटी बछड़ियाँ विद्वानों की स्त्रियों के लिये जाननी चाहियें। (मंतर ५)

सवाल पैदा होता है कि नामालूम क्या बला है और विद्वानों की स्त्री इसको लेकर क्या करे और बछड़ियों को विद्वानों की स्त्रियों से क्या तअल्लुक वह बछड़ियों को क्या करें। इनकी पूजा करे या उनसे जंग करे या उनका दूध दोहे जबकि वह दूध देने के काबिल नहीं हैं या उनके पाँव थोकर पियें या क्या करें। इसी तरह मंतर १८ में माता पिता के लिये खाकी रंग वाले अमीरों वज़ीरों के लिये काले रंग वाले और गनी विद्या को जानने वालों के लिये मौआ तज़े पशु मुक़रर किये गये हैं। उसमें क्या राज़ है। इसी तरह मंतर २३ में मुर्ग़ों, उल्लुओं, मोरों, कबूतरों का हाल लिखा है। और मंतर २४ में विद्वानों की स्त्रियों के लिए तो गौओं को मारने वाले जानवर और विद्वानों की बहनों के लिये कोलीक नाम के जानवर मुक़रर किये हैं। ये बहुत अजीम मुअम्मा है। इसी तरह मंतर ३० में मुख़्तलिफ़ इन्सानों के लिए मुख़्तलिफ़ किस्म के जानवर मसलन् नील गाय, जंगली मेंढा, काला हिरन बत्तख़ वगैरह मुक़रर किये गये हैं। अला हाज़ल कयास मंतर चालीस में विद्वानों के लिए गेंडा और दुष्टों के लिये काले रंग का कुत्ता गधा और सियाह गोश। राजा के लिये सुअर और चाँदमारी करने वालों के लिये गिरगिट पपीहा मुक़रर किये गये हैं। इसी तरह उन्तीसवें अध्याय के मंतर ५६ में लिखा है

ऐ इन्सानो! तुम काबिले तारीफ़ फौज वाले, विज्ञान युक्त, सिपेहसालार के लिये लाल वसूल वाला बेल, सूरज के गुण वाले नीचे हसूल में सफ़ेद रंग वाले ताक़त देने वाले सुनहरी नाफ़ वाले विद्वानों के सम्बन्धी जंगली बकरे और पीले रंग के पशु वायु देवता वाले खाकी रंग वाले अग्नि देवता वाला काला बकरा। बानी के गुनों वाली भेड़ और जल के गुणों वाला तेज़ रफ़तार पशु काम में लाओ।

अब सवाल पैदा होता है कि सिपेहसालार के साथ बेल, ताक़त देने वाले जंगली बकरों, काले रंग के बकरों, भेड़ों का क्या तअल्लुक है। ये जानवर सिपेहसालार के लिये किस तरह काम में लाये जायें। स्वामी दयानन्द इसका जवाब नहीं देता। मगर इसका जवाब विशिष्ट स्मृति मुतर्जमा पंडित भीमसेन सफ़हा १२० पर दिया गया है।

अगर ब्रह्मन्, खशतरी या राजा मेहमान आ जाये तो घर वाला इसके लिये बेल और बड़े बकरे का माँस पकावे।

गालिवन् विशिष्ट स्मृति में वेद के इसी अध्याय या मजकूर वाला मंत्र की तरफ ही इशारा है। स्मृति और श्रुति को जब पहलू बा पहलू रखकर देखा जाता है। तो मतलब बिल्कुल साफ हो जाता है। इसी तरह आपस्थवा सोत्र के प्रथम प्रश्न की पाँचवीं टपल की अठारहवीं कांडका में गाय के मारने की इजाजत दी गयी है। महाभारत के दिन पर्व के अध्याय २०७ में लिखा है कि रंती देव राजा, रोज़ दो हजार गाय ज़िबह किया करता था और ऋषि मुनी इसके हाँ भोजन पाया करते थे और ये राजा मरने के बाद स्वर्ग में गया।

विष्णु पर इन मतबूआ बंग बासी १६५६ सफ़हा ३१३, ३१४ पर लिखा है कि गौ माँस से पुत्र लोग ग्यारह माह तक तृप्त रहते थे चुनांचे शुप्राण अध्याय ६३ में कोशिक के पुत्र गर्ग ऋषि के शागिर्दों को श्राद्ध में गौ माँस खाने का जिक्र आता है। इसी तरह विष्णु संहिता अध्याय ८० में मुख्तलिफ़ देवताओं या पुत्रों के नाम पर मुख्तलिफ़ जानवरों की कुर्बानी और उनके माँस से उन उन देवताओं या पुत्रों का मुख्तलिफ़ अर्से तक तृप्त रहना बताया गया है। इन बातों प मेरी मुराद इस बात पर बहस करना नहीं है कि पुत्रों या श्राध के बारे में स्वामी दयानन्द की जो पोज़िशन है वह ग़लत है। या सही बल्कि इस बात पर बहस करना है कि जिस सूरत में कि स्वामी दयानन्द खुद अपनी इवतदाई तसानीफ़ में ये मान चुका हो कि यज्ञ में जानवरों की कुर्बानी करनी चाहिये और जिस सूरत में कि दीगर शास्त्र भी इसकी शहादत देते हों। इस सूरत में स्वामी दयानन्द ने इस सीधे रास्ते को छोड़कर यजुर्वेद की चौबीसवें अध्याय की असलियत पर पर्दा डालने की जो कोशिश की है। इसमें खुद स्वामी दयानन्द कृतई वेदस्त व पा रह गया है और ये तमाम का तमाम अध्याय बजाते खुद एक चैस्तान बन गया है जिसके सर पैर का कुछ पता नहीं लग सकता।

अब सवाल ये पैदा होता है कि अगर वेद खुदा का कलाम हैं और वह इन्सानों की रहबरी के लिये नाज़िल हुए हैं तो क्या वजह है कि इन्सान शुरू दुनिया से लेकर आज तक उनकी असली मज़नों को समझने से कासिर रहे हैं। यहाँ तक कि खुद स्वामी दयानन्द के लिये भी जो कि बकौल प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर वेदों के पीछे पागल था। वेदों के अक्सर मक़ामात सेहराये आज़म

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

सावित हुए हैं और वह उन पर कुछ रोशनी नहीं डाल सका जैसा कि मजकूर वाला अध्याय में दिखाया गया है। ऐसे हालात में कोई दयानतदार शख्स इस बात के लिये तैयार नहीं हो सकता कि वह वेदों को खुदा का कलाम माने जो कि इन्सानों की रहबरी के लिये नाज़िल हुआ। हालांकि सही पोज़िशन ये है कि वेद पुराने ज़माने के पुरोहितों के गीत हैं। उनमें से बअज़ अच्छे और बहुत अच्छे हैं लेकिन बअज़ महज़ बच्चों की बातें और बअज़ सख़्त वहशियाना ख़्यालात का मदफ़न हैं जो कि उन पुरोहितों के सीने में मौजज़न थे ऐसी सूरत में वेदों को खुदा का कलाम मानना और उन पर अपने दीन व ईमान की बुनियाद कायम करना इन्सान की रूह पर सख़्त जुल्म करना है क्योंकि इस सूरत में इन्सान की तमाम रूहानी आज़ादी पुरोहितों के हाथ में विक जाती है और वह इससे आगे परवाज़ नहीं कर सकती। जहाँ तक कि इन पुरोहितों ने परवाज़ किया है। अगर उसको उनमें कोई ग़लत या वहशियाना बात नज़र आती है तो ऐसी गुलामी रूह ये कहने की ताक़त नहीं रखती कि वह बात दरहकीक़त ग़लत और वहशियाना है। बल्कि वह यह कहकर अपनी तसल्ली कर लेती है कि ये मेरी अक्ल का कसूर है कि मैं इस मुअम्मे को समझ नहीं सकता ये किस कदर ख़तरनाक रूहानी गुलामी है इसके बरअक्स अगर ये तस्लीम कर लिया जाये कि वेद खुदा का कलाम नहीं है बल्कि वह पुराने ज़माने के इन्सानों के ख़्यालात का मजमूआ है तो इस सूरत में हमें ये कामिल आज़ादी हासिल रहती है कि हम उनमें से मुफ़ीद ख़्यालात को लेलें और मुज़िर ख़्यालात को परे फेंक दें। इस तरह हमारी ज़ेहनी और रूहानी तरक्की का रास्ता बराबर खुला रहता है और हम पुरोहितों की गुलामी का शिकारी बनने की बजाये अपनी आज़ादी को बराबर कायम रख सकते हैं जो लोग ये प्रचार कर रहे हैं कि वेद खुदा का कलाम है वह सिर्फ़ यही नहीं कि रूहानी आज़ादी के गले पर छुरी रख रहे हैं बल्कि वह आने वाली नस्लों के लिये रियाकारी, अलहाद और देहरियत के महल का बुनियादी पत्थर कायम कर रहे हैं।

क्योंकि ये लाज़मी अम्र है कि जिस वक़्त भी किसी दयानतदार इन्सान को इस ख़ौफ़नाक तालीम का पता लगेगा जिसकी चन्द मिसालें मैं ऊपर दर्ज कर चुका हूँ वह उसी वक़्त या तो इस खुदा की तरफ़ से मुँह फेर लेगा जो कि इस किस्म का इलहाम दे सकता है। या वह वेदों को हाथ से फेंक देगा।

गाज़ी महमूद धर्मपाल

इसकी ज़िन्दा मिसाल मैं मौजूद हूँ। जो इस बात का पता लगने के साथ ही कि वेदों में इस किस्म की खतरनाक तालीम भी मौजूद है। उनको हाथ से फेंक रहा हूँ और उनको खुदा का कलाम तसलीम करने के लिये तैयार नहीं हूँ। हालाँकि इससे पेशतर मैं वेदों को दिल व जान से खुदा का कलाम मानता और ऐसा ही प्रचार करता था। लेकिन अब मेरे लिये नामुम्किन है कि मैं ऐसी तालीम को वेदों में देखकर जो कि स्वामी दयानन्द के अपने ही अल्फ़ाज़ में महज़ जिहालत की तालीम है। उनको खुदा का कलाम मानूँ तावक्ते कि मैं रियाकारी से काम न लूँ लेकिन मैं रियाकार बनने के लिये तैयार नहीं हूँ। लिहाज़ा मेरे लिये लाज़मी हो जाता है कि मैं वेदों के बोझ को सर से उतार कर फेंक दूँ। इस बात पर रोशनी डालने के लिये कि इस मसअले ने लोगों को किस क़दर रियाकार बना रखा है। यहाँ पर आर्य समाज के एक अख़बार में से चन्द सतरें नकल करता हूँ। आर्य समाज का एक लीडर लिखता है

जो सवाल आप के ख़बरू पेश किया जाता है वह गोश्त ख़ोरी के सवाल से कई दर्जे बढ़कर है क्या नास्तिक यानी वेदों को ईश्वर कृत न मानने वाले आर्य समाज के लीडर और बड़े बड़े अधीकारी हो सकते हैं ? एक अधीकारी महाशय से कुछ अर्सा हुआ मैं ने दर्याफ़्त किया कि आप वेदों को ईश्वरकृत मानते हैं। जवाब दिया कि जैसा दस उसूलों में लिखा है वैसा मानता हूँ उसूलों में “वेद ईश्वरकृत हैं” ऐसा मतलब है या नहीं। अगर है तो सवाल का जवाब हाँ होना चाहिये था अगर सूरत दोयम हो तो सवाल नहीं होता अगर अक्सर असहाब को सीधा हाँ या न करने में ताम्मुल होता है। उमूमन् इसी किस्म के जवाब होते हैं जैसा कि मज़कूरा मुझको मिला है। आप से सच कहता हूँ कि मुझको कभी ख़्याल तक भी नहीं गुज़रा कि उसूलों में लफ़ज़ ईश्वरकृत न होने से कुछ और भी इसका मतलब हो सकता है। जहाँ तक स्वामी जी का ज़ाती यकीन इसके बारे में है वह किसी से पोशीदा नहीं। स्वामी जी लिखते हैं कि चारों वेदों को धर्मयुक्त, ईश्वर परिणित संहिता मनुभाग को ही निरा भ्रान्त सोता प्रमाण मानता हूँ वूँकि स्वामी जी इन नियमों का अपनी ज़िन्दगी में प्रचार किया इससे इसका मतलब स्वामी जी के निज सिद्धान्तों के बरख़िलाफ़ नहीं हो सकता। पस जो पुरुष इस सवाल का जवाब ये न देवें कि हाँ मैं वेदों को ईश्वरकृत मानता हूँ ज़रूर

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

उसूलों के कुछ और अर्थ करते हैं और वेदों को उन्हें ईश्वरकृत समाज के बड़े मिम्बर और अधीकारी हो सकते हैं तो किस का मक़दूर है कि माँस भक्षण को नाजायज़ ठहराये। वेद आर्य समाज की बुनियाद है। जब वेदों को ही उड़ा दिया तो मूल की अदम मौजूदगी से शाख़ पत्ते कहाँ रह सकते हैं ऐसा मानने वाले एक नहीं बल्कि अग़लब है कि बहुत से होंगे। (सत्ता धर्म प्रचारक २ अक्टूबर १९१२ ई०)

मज़कूरावाला तहरीर आर्य समाज के एक लीडर की तरफ़ से शाये होती है। इससे मेरे इस बयान की ज़बरदस्त अल्फ़ाज़ में ताईद होती है कि इस मसअले ने कि “वेद ईश्वरकृत” हैं सोसायटी में रियाकारों का एक ख़ासा गिरोह पैदा करने में मदद दी है जो दिल से वेदों को खुदा का कलाम नहीं मानते। लेकिन पुरोहित क्लास से वह इस क़दर डरते हैं कि अपने ख़्यालात को वह आज़ादाना तौर पर ज़ाहिर करने की अख़्लाकी ज़ुरअत नहीं रखते इसका नतीजा सिवाये इसके और क्या निकाला जा सकता है कि वेद उनको बजाये दयानतदार बनाने के रियाकार बना रहे हैं। फट पड़े सोना जो छेदे कान। रियाकार बनने की बजाये बेहतर है कि वेदों को ही उठाकर अलग रख दिया जाये इसीलिये मैंने इस ना मरगूब बोझ को सरसे उतार फेंका है। मगर बिला वजह नहीं बल्कि संगीन वाकिआत और ज़बरदस्त वजूहात की बिना पर मैं वेदों को खुदा के कलाम के दर्जे से साक़ित करके पुराने ज़माने के पुरोहितों के गीतों की सतह पर रखता हूँ उनमें से बअज़ गीत अच्छे हैं लेकिन बअज़ सख़्त वहशियाना और ख़तरनाक हैं। अब मैं वेदों को न तो कलामे इलाही मानता हूँ न ही मैं इस बात का कायल हूँ कि वेदों के प्रचार से दुनिया में आलमगीरी शान्ति की बादशाहत कायम हो सकती है बल्कि जैसा कि मैं ऊपर दिखा चुका हूँ वेदों में जिस क़दर जंग व जदल कुशत व ख़ून, मार धाड़, दंगा फ़साद, लूट, ग़ारत, कत्ले आम, अपने धर्म के मुख़ालिफ़ों को उल्टा करके ज़िन्दा आग में जलाने, अपने दुश्मनों को शेरों से फड़वाने, समन्दर में ग़र्क़ करने, दरिन्दों से चरवाने और अनवाअ व अक़साम की सफ़ाकियों से मरवाने की तालीम है वह निहायत ही ख़तरनाक बल्कि शर्मनाक है। ऐसी तालीम को खुदावन्दे कुद्दूस की ज़ाते पाक की तरफ़ मनसूब करना सख़्त कुफ़्र ख़ौफ़नाक देहरियत और शर्मनाक इलहाद है। और ये कहना कि ऐसी तालीम के प्रचार से दुनिया में अमन की बादशाहत

गाज़ी महमूद धर्मपाल

कायम हो सकती है एक लासानी झूठ है। सच तो ये है कि दुनिया को ऐसे वैदिक धर्म की ज़रूरत नहीं है बल्कि वैदिक धर्म के नीचे से निजात पाने की ज़रूरत है। क्योंकि वेद जिस किस्म की खूँरेज़ी की तालीम देते हैं वह तो चारों तरफ़ हो रही है। और वेदों की तालीम के मुताबिक़ तोप, बन्दूक तीरो तफ़ंग, आतिशी असलहे की भरमार, जंग व जदल, कुश्त व ख़ून, दंगा फ़साद मारुध णड़, क़त्ल व ग़ारत, फ़ौज की कसरत, बमसाज़ी, मशीनगन, क़ूपगन, डरेडनाट, डिस्टरायर, क़ूज़र, टारपीडो, बर्री, बहरी, और हवाई जंग, गाँव के जलाने, दुश्मनों को क़त्ल करने, चीरने, फाड़ने, गर्क करने, और बअज़ हालात में ज़िन्दा आग में जलाने अपने दुश्मनों की तवाही चाहने और उनकी बरवादी के लिये खुदा से दुआएँ मांगने, उनको ज़ेहर देने, उनकी गर्दने काटने, उनका बीज नाश करने, उनके घरों को लूटने उनके खेतों को आग लगाने की बदीलत जैसा कि वेद मंत्रों से ऊपर साबित किया जा चुका है। तमाम दुनिया शौला-ए-नार बन रही है। और चारों तरफ़ वेदों की इस ख़तरनाक तालीम के ख़ौफ़नाक शौले ज़मीन से उठकर आसमान की तरफ़ जा रहे हैं और दुनिया इस अमली वैदिक धर्म के भारी बोझ के नीचे पिस्ती जा रही है। और मर रही है। वैदिक धर्म की इस अमली प्रचार की आग में धी की आहूति डालना मिस्टर ह्यूम के अल्फाज़ में बनी नूप इन्सान के साथ ग़द्दारी करना है। स्वामी दयानन्द ने वेदों को उठाया, नतीजा ये निकला कि उन्होंने सिवाये उनके जो वेदों को खुदा का कलाम मानते थे बाकी तमाम मज़हबी दुनिया को और तमाम मज़ाहिब के मुक़द्दसीन को तलवार से नहीं बल्कि शमशीरे से वेदरीग़ तहे तेग़ कर दिया। जिसने वेदों के सामने सर झुकाया उसी ने सारी मज़हबी दुनिया के साथ हंगामा कारज़ार शुरू कर दिया। वह सोसाइटी जो वेदों को खुदा का कलाम मान रही है। वह सिर्फ़ यही नहीं कि बाकी तमाम मज़ाहिब को अपना दुश्मन खयाल करके वेदों की तालीम के मुताबिक़ उनकी बीखकुनी में मसरूफ़ है बल्कि उसी तालीम का बदीलत उसके मेम्बर आपस में भी एक दूसरे के जिल्लत और तहक़ीर, तज़हीक़ और तज़लील में रात-दिन कोशां रहते और तहरीर और तक़रीर के ज़रिये एक दूसरे की तवाही और बरवादी के मन्सूबे सोचते रहते हैं, चूँकि वेदों में जाबजा यही तालीम दी गयी है कि वह जो हम से दूश्मनी करते हैं वह फना हो जायें और जिन से हम दुश्मनी करते हैं वह भी फना हो जायें, इस लिए इन दुआओं को इलाही

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

दुआयें मानने वाले एक दूसरे की तवाही और बरवादी, जिल्लत और तहक़ीर में रात दिन कोशां नज़र आते हैं, बस वेदों की अन्दरूनी तालीम और उसके बदीही नताईज पर नज़र करके मैं यह नतीजा निकालने के लिए मजबूर हुआ हूँ कि ज़हरीले दरख़त का फल कदरतन ज़हरीला होता है। ऐसी तालीम को खुदाबन्द कुद्दूस की ज़ात वाल की सिफ़ात की तरफ़ मन्सूब करना मिस्टर ह्यूम के अल्फाज़ में महज शरारत फेलाना है।

समाप्त

गाज़ी महमूद धर्मपाल